Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
द फोटोन न्यूज Published from Ranchi
Ranchi ● Thursday, 21 March 2024 ● Year : 02 ● Issue : 64 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

नाकामिया आपको अपनी गलती सुधारने और वापस दोगुनी ताकत से सफल होने के लिए प्रेरित करती है।

क्रू को लेकर बेहद उत्साहित हैं करीना...

SHARE

सेंसेक्स	:	72,085.63
निफ्टी	:	21,853.80

SARAFA

सोना	:	5,970
चांदी	:	77.00

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

इफ्तार (गुरुवार) : 06.05
सेहरी (शुक्रवार): 04.38

BRIEF NEWS

परीक्षा की तारीख में बदलाव, अब नीट का एग्जाम 11 मई को

NEW DELHI : भारतीय चुनाव आयोग ने लोकसभा चुनाव की तिथियों की घोषणा कर दी है। चुनावों का असर इस बीच होने वाली कई बड़ी परीक्षाएं पर भी पड़ रहा है। इस लिस्ट में नीट यूजी और आईसीएआई सीए जैसी बड़ी परीक्षाएं शामिल हैं। वहीं, आज नीट पीजी को लेकर राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग ने बड़ा अपडेट जारी किया है। इसमें कहा गया है कि लोकसभा चुनावों के मद्देनजर नीट पीजी की परीक्षा में बड़ा बदलाव किया गया है। यह परीक्षा पहले सात जुलाई को होनी थी अब इसे 23 जून को आयोजित किया जाएगा। राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग ने इस बारे में एक अधिसूचना जारी कर जानकारी दी है।

अमेरिका में भारतीय छात्र का अपहरण, परिजनों को आया फिरौती का फोन, किडनी बेचने की धमकी

NEW DELHI : अमेरिका में रहकर पढ़ाई करने वाले कई भारतीय छात्रों की मौत के बाद अब हैदराबाद के एक छात्र के अपहरण होने का मामला सामने आया है। लापता छात्र के परिजनों ने इस बारे में जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि मोहम्मद अब्दुल सात मार्च से लापता है और अब यहां फोन करके उनसे फिरौती मांगी गई है। अब्दुल के पिता मोहम्मद सलीम ने बताया कि उनके बेटे की आखिरी बार सात मार्च को उनसे फोन पर बात हुई थी। इसके बाद से अब्दुल से कोई संपर्क नहीं हुआ है। पिता ने बताया कि उसका मोबाइल भी लगातार स्विच ऑफ जा रहा है। अब्दुल के परिजनों ने यह भी बताया कि 19 मार्च को एक अज्ञात व्यक्ति ने फोन करके उनसे फिरौती की रकम की मांग की है। फोन करने वाले व्यक्ति ने कथित तौर पर उसके अपहरण की बात बताते हुए छोड़ने के बदले में 1200 अमेरिकी डॉलर की मांग की। इतना ही नहीं फिरौती की रकम न देने पर अब्दुल की किडनी बेचने की भी धमकी दी। वहीं, अमेरिका में अब्दुल के रूममेट्स ने क्लीवलैंड पुलिस में उसकी गुमशुदगी की शिकायत दर्ज कराई है।

भारत में इस्लामिक स्टेट चीफ हारिस फारूकी और उसका सहयोगी गिरफ्तार

NEW DELHI : आतंकी साजिश पर नकेल कसने में असम पुलिस को बड़ी कामयाबी मिली है। खबर के मुताबिक असम पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स ने धुबरी में एक कार्रवाई के दौरान आतंकी संगठन- इस्लामिक स्टेट इराक सीरिया की भारतीय यूनिट के प्रमुख को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार दहशतगर्द की पहचान हारिस फारूकी के रूप में हुई है। खबर के मुताबिक असम पुलिस ने फारूकी के एक सहयोगी को भी गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि बांग्लादेश की सीमा से भारत में घुसे फारूकी और उसके सहयोगी अनुगार सिंह को बुधवार को धुबरी में गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई के दौरान स्पेशल टास्क फोर्स के जवानों ने धुबरी के धर्मशाला इलाके में कार्रवाई की। फारूकी और अनुराग को गिरफ्तार करने के बाद असम पुलिस की एसटीएफ दोनों को गुवाहाटी मुख्यालय ले गई।

झारखंड में जेपी, बिहार में पप्पू, यूपी में दानिश अली ने थामा कांग्रेस का दामन

लोकसभा चुनाव के पहले चरण की अधिसूचना जारी होने के साथ इंडिया गठबंधन में शामिल कांग्रेस पार्टी के लिए बुधवार का दिन राहत भरा रहा। उत्तर प्रदेश बिहार और झारखंड में एक साथ तीन अलग-अलग राजनीतिक दलों के नेताओं ने कांग्रेस पार्टी का दामन थाम लिया। उत्तर प्रदेश में बसपा के सांसद दानिश अली, झारखंड में बीजेपी के मौजूदा विधायक जेपी पटेल, तथा बिहार में पप्पू यादव ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

भाजपा के विधायक जय प्रकाश पटेल ने थामा कांग्रेस का दामन

प्रेस कॉन्फ्रेंस में मौजूद जेपी पटेल। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI : मांडू विधानसभा क्षेत्र से तीन बार विधायक रहे जयप्रकाश भाई पटेल ने बुधवार को भाजपा छोड़कर कांग्रेस का दामन थामा लिया। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी कार्यालय, दिल्ली में मीडिया विभाग के चेयरमैन पवन खेड़ा, झारखंड कांग्रेस कमेटी के प्रभारी गुलाम अहमद मीर, प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर और झारखंड के संसदीय कार्य मंत्री और विधायक दल के नेता आलमगीर आलम के मौजूदगी में पटेल ने कांग्रेस पार्टी का दामन थामा।

मौके पर प्रदेश प्रभारी गुलाम अहमद मीर ने कहा कि जेपी पटेल का कांग्रेस में शामिल होना झारखंड के लिए सुखद संकेत है। झारखंड और पश्चिम बंगाल के कई नेता हमारे संपर्क में है जो दूर दृष्टि रखते हुए कांग्रेस की नीतियों और भारत जोड़ो न्याय यात्रा से प्रभावित होकर कांग्रेस की ओर हाथ बढ़ा रहे हैं। उन्होंने जेपी पटेल को बधाई देते हुए कहा कि इनके आने से न सिर्फ झारखंड, बल्कि अन्य राज्यों पर भी प्रभाव पड़ेगा।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कहा कि डर और लालच के कॉकटेल के आगे जब सब लोग मस्तक हो रहे हैं तब इन्होंने कांग्रेस का दामन थामा है। इसके लिए हम इन्हें बधाई देते हैं। जब देश में देश बेचने वाले और देश बचाने वाले की लड़ाई चल रही है तब जयप्रकाश भाई ने देश बचाने वालों का साथ देना उचित समझा। इनका यह निर्णय झारखंड की राजनीति में दुरगामी प्रभाव डालेगा।

पप्पू यादव ने राहुल गांधी को बताया दुनिया का सबसे संघर्षशील व्यक्ति

NEW DELHI : पूर्व सांसद पप्पू यादव की जन अधिकार पार्टी का कांग्रेस में विलय हो गया है। पप्पू यादव अपने बेटे सार्थक के साथ कांग्रेस में शामिल हो गए। दिल्ली में कांग्रेस के वरीय नेता मोहन प्रकाश और पवन खेड़ा ने उन्हें कांग्रेस की सदस्यता दिलाई। मीडिया से बातचीत के दौरान पप्पू यादव ने कहा कि जन अधिकार पार्टी लगातार तीन चुनाव लड़ी। इसमें दो विधानसभा और एक लोकसभा चुनाव शामिल हैं। हम अपनी पूरी पार्टी के साथ कांग्रेस में विलय कर रहे हैं। इसकी लिस्ट मैं मोहन प्रकाश को सौंप रहा हूं। संघर्ष, न्याय और सेवा की लंबी फेहरिस्त रही है हमारी पार्टी की। हम पांच बार सांसद और एक बार विधायक रहे। कांग्रेस की विचारधारा हमें हमेशा मजबूत ऊर्जा देती रही है। हमारी राजनीति की नींव पूरी सेक्युलर है। दुनिया के सबसे बड़े तानाशाह के

यूपी में बसपा को लगा झटका, सांसद दानिश अली ने थामा कांग्रेस का हाथ

NEW DELHI : आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर यूपी में बहुजन समाज पार्टी और जम्मू-कश्मीर में भाजपा को बड़ा झटका लगा है। यूपी के अमरोहा से बसपा के सांसद दानिश अली बुधवार को कांग्रेस में शामिल हो गए। वहीं जम्मू-कश्मीर के भाजपा नेता लाल सिंह ने भी कांग्रेस का हाथ थाम लिया। दोनों को ही दिल्ली में पवन खेड़ा ने पार्टी में शामिल कराया। उधर, अमरोहा लोकसभा सीट पर कांग्रेस को लेकर सभी की नजरें लगी हुई हैं। अब तक बसपा और भाजपा ने अपने प्रत्याशियों के नामों की घोषणा की है। कांग्रेस अभी तक किसी उम्मीदवार का नाम फाइनल नहीं कर सकी है। इसी बीच बुधवार को सांसद दानिश अली ने कांग्रेस के दिल्ली मुख्यालय पर सदस्यता ग्रहण कर ली। इसके साथ ही उनके प्रत्याशी बनाए जाने की चर्चाएं जोर पकड़ने लगी हैं। बता दें कि 2019

झारखंड में कांग्रेस सात, जेएमएम पांच सीटों पर लड़ सकती है चुनाव

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड में इंडिया गठबंधन की सीट शेयरिंग की जल्द घोषणा हो सकती है। ऐसे कयास लगाये जा रहा है कि कांग्रेस 7, झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) 5 और आरजेडी-सीपीआई को एक-एक सीट पर चुनाव लड़ सकती है। सूत्रों के मुताबिक चतरा लालू की पार्टी आरजेडी और कोडरमा सीट सीपीआई के खाते में जा सकती है। भाजपा पहले ही यहां 11 सीटों पर प्रत्याशी घोषित कर चुकी है। सिर्फ 3 सीटों पर प्रत्याशी घोषित नहीं किए हैं। कांग्रेस सबसे पहले झारखंड में अपने प्रत्याशियों का ऐलान करेगी। इसके बाद रांची से झामुमो अपने प्रत्याशी का ऐलान करेगी। हालांकि, कुछ सीटों पर पेंच फंसा हुआ है, इसलिए देरी हो रही है। दुमका सीट की दावेदारी किसकी होगी, इसे लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है। दरअसल, लोकसभा चुनाव की तारीख का ऐलान हो गया। कांग्रेस- जेएमएम, राजद और वाम दल ने मिलकर अब तक सीट बंटवारे को लेकर आधिकारिक तौर पर कोई फैसला नहीं लिया है। सीट बंटवारे में हो रही देरी के बीच कांग्रेस, जेएमएम के निचले स्तर के पार्टी कार्यकर्ता नेतृत्व की तरफ निगाहें लगाए हुए हैं।

क्या है फॉर्मूला : सीट बंटवारे को लेकर कई तरह के फामूर्ले पर चर्चा है, लेकिन कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने जिस फॉर्मूले का जिक्र किया, वह झारखंड की कुल 14 लोकसभा सीटों में से 7 सीटों पर कांग्रेस चुनाव और 5 सीटों पर झारखंड मुक्ति मोर्चा चुनाव लड़ेगी। राजद और माले को एक-एक सीट मिलेगी। इस फॉर्मूले पर अभी आधिकारिक मुहर लगनी बाकी है। चर्चा है कि सीट बंटवारे को लेकर पलामू की दावेदारी में सत्यानंद भोक्ता अड़े हैं। राजद की हिस्सेदारी कितनी होगी इसे लेकर भी चर्चा जारी है।

कहां फंसा है पेंच : कांग्रेस और झामुमो के अंदर चर्चा तेज है कि कुछ सीटों को लेकर मतभेद है। अब तक स्थिति साफ नहीं हो सकी है। वहीं, आरजेडी भी पलामू सीट को लेकर अड़ी है। बैठक का दौर जारी है। बातचीत से रास्ता निकालने की कोशिश हो रही है। कुछ सीटों पर अंतिम निर्णय कांग्रेस के आलाकमान को करना है। झामुमो को सिंहभूम और कांग्रेस को लोहरदगा सीट मिलना लगभग तय माना जा रहा है। सूत्र बताते हैं कि लोहरदगा सीट भी झामुमो अपने खाते में लाने का प्रयास कर रहा है। कांग्रेस इस सीट को छोड़ना नहीं चाहती। 2019 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने गठबंधन के तहत झामुमो को चार सीटें दी थीं। झामुमो और कांग्रेस ने एक-एक सीट पर जीत हासिल की। झामुमो ने शुरू से यह फॉर्मूला दिया है कि जो दल जिस सीट पर मजबूत है, उसका प्रत्याशी वहां से लड़े।

सपा की छठी सूची जारी, पीलीभीत से उम्मीदवार का किया गया एलान

NEW DELHI : समाजवादी पार्टी ने बुधवार को एक और उम्मीदवारों की सूची जारी की। इस बार फिर पार्टी ने छह उम्मीदवारों के टिकट का एलान किया है। पार्टी ने संभल (8) से जियाउर्रहमान बर्क, बागपत (11) से मनोज चौधरी, गौतम बुद्ध नगर (13) से राहुव अवाना, पीलीभीत (26) से भगवत सरन गंगवार, घोसी (70) से राजीव राय और मिजार्पुर (79) से राजेंद्र एस बिंद को चुनावी मैदान में उतारा है।

49 सीटों पर उम्मीदवारों का एलान : इससे पहले सपा 43 नामों का एलान कर चुकी थी, छठी सूची के बाद से अब यह संख्या 49 हो गई है। हालांकि यह संख्या वास्तविकता में 48 है, क्योंकि इंडिया गठबंधन होने के बाद वाराणसी लोकसभा सीट कांग्रेस के खाते में चली गई है तो पार्टी को वहां से अपना उम्मीदवार हटाना होगा। इसके अलावा संभल से सांसद रहे शफीकुर्रहमान बर्क का निधन हो जाने के बाद सपा ने उनके पोते व कुंदरकी विधानसभा क्षेत्र के सपा विधायक को उम्मीदवार घोषित किया है।

लोस चुनाव के प्रथम चरण की 102 सीटों के लिए नामांकन शुरू, आयोग ने जारी की अधिसूचना

AGENCY NEW DELHI : निर्वाचन आयोग ने बुधवार यानी 20 मार्च को लोकसभा चुनाव 2024 के पहले चरण के लिए नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। आज से उम्मीदवार चुनाव के लिए अपना नामांकन भर सकते हैं। चुनाव आयोग ने बीते हफ्ते आगामी लोकसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान किया था। इस बार का इलेक्शन सात चरण में कराया जाएगा। वहीं, पहले चरण की वोटिंग 19 अप्रैल को होगी, जबकि परिणाम 4 जून को आएंगे।

27 मार्च को नामांकन की अंतिम तारीख : इलेक्शन कमीशन की ओर से जारी अधिसूचना में नामांकन की अंतिम तारीख 27 मार्च है। हालांकि

त्योहार के कारण बिहार में पहले चरण में होने वाले लोकसभा सीटों के लिए नामांकन दाखिल करने की आखिरी तारीख 28 मार्च है। बता दें कि बिहार कुल 40 लोकसभा सीटों में से चार सीटों पर पहले चरण में वोटिंग होगी। नामांकन पत्रों की जांच 28 मार्च को की जाएगी। वहीं, बिहार में 30 मार्च को की जाएगी।

सात चरण में होंगे चुनाव : बता दें कि उम्मीदवारी वापस लेने की आखिरी तारीख 20 मार्च है जबकि बिहार में 2 अप्रैल है। बता दें कि लोकसभा चुनाव 2024 के लिए पहले चरण की वोटिंग 19 अप्रैल को होगी। इसके बाद 26 अप्रैल, 7 मई, 13 मई, 20 मई, 25 मई और 1 जून को मतदान कराए जाएंगे।

क्रिकेटर महेंद्र सिंह धोनी के साथ हुई धोखाधड़ी मामले में कोर्ट ने लिया संज्ञान

PHOTON NEWS RANCHI : भारतीय किक्रेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी की ओर से दर्ज अरका स्पोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड एंड मैनेजमेंट लिमिटेड के मिहिर दिवाकर और सौम्या दास के खिलाफ धोखाधड़ी मामले में न्यायिक दंडाधिकारी राज कुमार पांडेय की अदालत ने बुधवार को संज्ञान लिया है। मामले में अब आरोपितों के खिलाफ समन जारी किया जायेगा। आरोपितों के खिलाफ धोखाधड़ी करके धोनी को 15 करोड़ रुपये की आर्थिक क्षति पहुंचाने का आरोप है। यह मुकदमा धोखाधड़ी, विश्वासघात, जाली कागजात तैयार करके फजीर्वाड़ा करना सहित अन्य आरोपों के तहत किया गया है। एमएस धोनी ने प्रतिनिधि सीमांत

लोहानी को मुकदमा दर्ज करने का अधिकार दिया है। लोहानी ने 27 अक्टूबर, 2023 को उक्त मुकदमा दर्ज कराया।

मुकदमे में कहा गया कि मिहिर दिवाकर ने कथित तौर पर दुनिया भर में क्रिकेट अकादमी खोलने के लिए साल 2017 में एमएस धोनी के साथ एक समझौता हुआ था। समझौते के बाद उसे फ्रेंचाइजी दिया गया था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पुतिन और जेलेंस्की से फोन पर की बात

पीएम मोदी ने रूस और यूक्रेन से युद्ध विराम पर की वार्ता

AGENCY NEW DELHI : पीएम मोदी ने यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की से टेलीफोन पर बातचीत की। दोनों नेताओं ने विभिन्न क्षेत्रों में भारत-यूक्रेन साझेदारी को और मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की। रूस-यूक्रेन संघर्ष पर चर्चा करते हुए पीएम मोदी ने भारत के जन-केंद्रित दृष्टिकोण को दोहराया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत सभी मुद्दों के शीघ्र और शांतिपूर्ण समाधान के सभी प्रयासों का समर्थन करता है। उन्होंने कहा कि भारत शांतिपूर्ण समाधान के लिए अपनी क्षमता के अनुसार सब कुछ करना जारी रखेगा। राष्ट्रपति जेलेंस्की ने यूक्रेन के लोगों के लिए भारत की निरंतर मानवीय सहायता की सराहना की। दोनों नेता संपर्क में बने रहने पर सहमत हुए।

मोदी ने पुतिन को फिर से राष्ट्रपति चुने जाने पर दी बधाई

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को

उनके फिर से राष्ट्रपति चुने जाने पर बधाई दी। बातचीत में फिर से दोहराया कि रूस-यूक्रेन संघर्ष को हल करने के लिए बातचीत और कूटनीति ही आगे का रास्ता है। टेलीफोन पर हुई बातचीत में दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय सहयोग में प्रगति की समीक्षा की और क्षेत्रीय एवं वैश्विक मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। पुतिन को दोबारा राष्ट्रपति चुने जाने पर बधाई देते हुए मोदी ने रूस की शांति, प्रगति और समृद्धि के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं। दोनों नेताओं ने आने वाले वर्षों में दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने की दिशा में ठोस प्रयास करने पर सहमति व्यक्त की। पीएम मोदी एक्स पर पोस्ट डालकर पुतिन के साथ हुई बातचीत के बारे में जानकारी दी।

पुतिन 1999 से रूस के राष्ट्रपति हैं

रूस के कद्दावर नेता पुतिन ने पिछले दिनों संपन्न हुए राष्ट्रपति पद के चुनाव में भारी मतों से जीत हासिल की और इस पद के लिए पांचवां कार्यकाल हासिल किया। पुतिन दिसंबर 1999 से राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के तौर पर रूस का नेतृत्व कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी का भूटान दौरा टला, खराब मौसम की वजह से लिया गया फैसला

AGENCY NEW DELHI : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भूटान दौरा फिलहाल के लिए टाल दिया गया है। विदेश मंत्रालय के मुताबिक, खराब मौसम की वजह से यह फैसला लिया गया है। इन परिस्थितियों में वहां विमानों की लैंडिंग नहीं कराई जा सकती थी। ऐसे में दोनों देशों ने बातचीत के जरिए यात्रा को स्थगित करने का निर्णय लिया। दोनों देश राजनयिक चैनलों के माध्यम से नई तारीखों पर काम कर रहे हैं। दरअसल, पीएम मोदी 21-22 मार्च को भूटान की राजकीय यात्रा करने वाले थे। यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी भूटान के वर्तमान राजा जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक और भूटान के चौथे राजा जिग्मे सिंग्ये वांगचुक से मुलाकात करने वाले थे। इस दौरान पीएम अपने भूटानी समकक्ष शेरिंग तोबगे से भी बातचीत कर सकते थे। भूटान के प्रधानमंत्री दाशो शेरिंग तोबगे 14-18 मार्च तक भारत की आधिकारिक यात्रा पर थे। यह जनवरी 2024 में पदभार ग्रहण करने के बाद तोबगे की पहली विदेश यात्रा थी। यात्रा के दौरान भूटान के प्रधानमंत्री ने पीएम मोदी के साथ द्विपक्षीय वार्ता की थी। भूटान नरेश की ओर से प्रधानमंत्री शेरिंग तोबगे ने प्रधानमंत्री मोदी को भूटान आने का निमंत्रण दिया था। प्रधानमंत्री ने भूटान नरेश का यह निमंत्रण स्वीकार किया था। हाल ही में भूटान के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा उस वक्त हुई थी, जब चीन और भूटान अपने सीमा विवाद को सुलझाने में लगे हैं। इसका भारत के सुरक्षा हितों पर भी प्रभाव पड़ सकता है।

आरोपी साजिद के एनकाउंटर की होगी मजिस्ट्रियल जांच, डीएम ने दिया आदेश

AGENCY NEW DELHI : बदायूं में दो मासूम बच्चों की हत्या के आरोपी साजिद के एनकाउंटर की मजिस्ट्रियल जांच होगी। डीएम मनोज कुमार ने एनकाउंटर की मजिस्ट्रेट जांच के लिए आदेश दिए हैं। डीएम ने सिटी मजिस्ट्रेट से जांच कर 15 दिन में जांच आख्या मांगी है। उधर, इस हत्याकांड में नामजद साजिद के भाई जावेद का अब तक कोई पता नहीं चला है। उसकी तलाश में पुलिस की चार टीमें लगी हुई हैं।

मठभेड़ में साजिद को लगी थीं तीन गोलियां : पुलिस मुठभेड़ में मारे गए साजिद के शव का पोस्टमार्टम बुधवार को कराया गया। बताया जा रहा है कि मुठभेड़ में साजिद को तीन गोलियां लगी थी। दो गोली उसके सीने में लगी हैं और एक गोली उसके पेट में साइड में लगी है। मुख्य हत्यारोपी के पोस्टमार्टम के दौरान पुलिस पीएससी मौजूद रही। उसके शव को पुलिस की सुरक्षा में ही गांव सखानू ले जाया गया। बताया जा रहा है कि सखानू के कब्रिस्तान में उसकी कब्र खोदी गई। वहीं उसके शव को

दफन किया गया।

यह भी घटना : आरोपी साजिद अलापुर थाना क्षेत्र के कस्बा सखानू का रहने वाला था। उसकी दुकान बाबा कॉलोनी निवासी ठेकेदार विनोद ठाकुर के घर के सामने सड़क के दूसरी ओर है। वह करीब दो साल से बाबा कॉलोनी में अपनी बाल काटने की दुकान चलाता था। विनोद की पत्नी संगीता अपने मकान के निचले हिस्से में ब्यूटी पार्लर चलाती हैं। इसके चलते साजिद का उनके घर आना जाना भी था।

मंगलवार रात संगीता तीन बच्चों आयुष (13), अहान (6) और पीयूष (8) के साथ घर पर थीं, जबकि विनोद लखीमपुर खीरी गए हुए थे। साजिद शाम चार बजे दुकान बंद करके चला गया था। इसके बाद वह वापस आया। उसने संगीता से पत्नी की डिलीवरी के लिए रुपयों की जरूरत बताकर पांच हजार रुपये मांगे।

भारत के हृदय स्थल मध्यप्रदेश में पर्यटन के ऐसे बहुत से स्थल है जहां देश विदेश के असंख्य सैलानी इन्हें देखने आते हैं। धार्मिक महत्व के अलावा पुरातात्विक महत्व के इन स्थलों में कान्हा किसली, महेष्वर खजुराहो, भोजपुर, ओंकारेश्वर, सांची, पचमढ़ी, भीमबेटका, चित्रकूट, मैहर, भोपाल, बांधवगढ़, उज्जैन, आदि उल्लेखनीय स्थल हैं।

ताल तलैयों से घिरा भोपाल

मध्यप्रदेश की राजधानी होने के साथ ही ताल-तलैयों के कारण पर्यटन के क्षेत्र में अपना अलग ही स्थान रखता हैं। राजा भोज द्वारा बनवाया गया बड़ा तालाब, लक्ष्मीनारायण मंदिर, झिरनो मंदिर, गुफा मंदिर, मनुआभान की टेकरी, केहरी महादेव मंदिर, सेन्ट्रल लायब्रेरी, प्राचीन दरवाजे, एशिया की सबसे बड़ी ताजुल मस्जिद, जामा मस्जिद, मोती मस्जिद, कर्फ्यू वाली देवी का मंदिर, काली मंदिर, सदर मंजिल, गौहर महल, कमला पार्क, किलोल, वर्धमान पार्क, सन सेट, वन बिहार, केरवा, कलियासोत, हलाली डेम, मयूर पार्क, बीएचईएल, आदि देखने लायक स्थल हैं। भोपाल नए एवं पुराने शहर के नाम से भी जाना जाता हैं। देश के सभी स्थानों से भोपाल वायुयान, रेल अथवा सड़क मार्ग द्वारा पहुंचा जा सकता हैं। यहां रुकने के पर्याप्त इंतजाम है।

बड़े तालाब के मध्य एक दरगाह भी स्थित हैं। जहां वोट क्लब से अथवा शीतलदास की बगिया स्थित घाट से नाव द्वारा नौका बिहार भी किया जा सकता हैं। यहां उपनगर के बैरसिया में तरावली स्थित हरसिद्धी का मंदिर भी है जिसके बारे में उक्ति है कि राजा विक्रमादित्य द्वारा बनारस से उज्जैन ले जाते समय देवी की शर्त के अनुसार रातभर में वह उज्जैन नहीं ले जा सके और देवी वहीं रूक गई जहां आज मंदिर स्थापित हैं। एक अन्य उपनगर के रूम में कोलार भी बहुत तेजी से विकसित होकर राजधानी का मुख्य केन्द्र बनने लगा हैं।

मध्यप्रदेश की राजधानी का नाम सुनते ही यहां की गौरव ताल-तलैयों, शैल-शिखरों की याद आना लाजिमी हैं। जहां भोपाल ने राष्ट्रीय स्तर पर क्रिकेट हाकी सहित देश के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद तक पर अपनी छाप छोड़ी वहीं राष्ट्रीय उद्यानों के क्षेत्र में भी किसी से कम नहीं हैं। यहां बना नेशनल पार्क को थ्री-इन-वन कहना कोई अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा।

ऐसा सुन्दर उद्यान नेशनल पार्क होने के साथ-साथ चिड़िया घर (जू) तथा जंगली जानवरों का बचाव केन्द्र भी है। 445 हैक्टेयर में फैले इस नेशनल पार्क में मिलने वाले जानवरों को जंगल से पकड़कर नहीं लाया गया हैं। यहां जो जानवर हैं वे लावारिस, कमजोर, रोगी, घायल या बूढ़े थे अथवा जंगलों से भटकककर ग्रामीण शहरी क्षेत्रों में आ गये थे तथा उनका बाद में आशियाना यहां बनाया गया।

अन्य संग्रहालयों या फिर सर्कसों से भी कुछ जानवर यहा लाए गए हैं। लगभग पॉच किलोमीटर क्षेत्र में फैले इस राष्ट्रीय उद्यान का मुख्य द्वार मुख्यमंत्री निवास के निकट से होकर भदभदा की ओर जाता हैं। उद्यान के चारों ओर हरियाली बरबस ही पर्यटकों को अपनी ओर खींच लेती हैं। शैल-शिखरों से घीरे उक्त उद्यान के पास ही परमारवंशीय राजा भोज द्वारा निंमित भोपाल का बड़ा तालाब है जिसके बारे में उक्ति है कि तालों में भोपाल ताल बाकी सब तलैया, रानियों में कमलाबती बाकी सब......प्रचलन में हैं।

वनबिहार के नाम से ख्यात उक्त उद्यान के आसपास सांस्कृतिक कला का केन्द्र भारत भवन, वोट क्लब, मानव संग्रहालय, कमला पार्क, केरवा डेम, कमला पार्क, दूरदर्शन सहित अनेक ऐसे स्थानों से घिरा हुआ भोपाल नेषनल पार्क को राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा 18 जनवरी 1983 में प्राप्त हुआ था। यूं तो प्रदेश के ग्वालियर, इंदौर में भी स्माल चिड़ियाघर हैं जिनकी देखरेख नगर निगमों द्वारा की जाती हैं।

भोपाल नेशनल पार्क में प्रवेश करने से पूर्व यह अनुभव भी नहीं कर सकते की आप किसी जंगल की सैर करने जा रहे हैं। रामू गेट से चीकू गेट तक की लगभग पाच किलोमीटर की दूरी आप ऐसे तय करेंगे कि आपको अहसास ही नहीं होगा कि आप किसी ऐसे अद्भुत स्थल की सैर कर रहे हैं जहां एक ओर जंगली जानवरों भालू, शेर, हिमालयी भालू, तुेदुए और बाघ के बाड़े आते हैं तो दूसरी ओर तालाब से आ रही ठंडी हवाएं और जल की तरंगे मनोहारी लगती है कि आप भोपाल नेशनल उद्यान को अंतिम समय तक भूल नहीं सकते। गर्मी के दिनों में प्रवासी पक्षी भी इसी जगह पर आकर सुकून का अनुभव करते हैं।

यहॉ कि विषेषता यह है कि आप पैदल ही पाच किलोमीटर का दायरा कैफे का स्वादिष्ट भोजन, नस्ता करते हुए समझ ही नहीं सकते की आपने आने जाने में इतनी अधिक दूरी कैसे तय कर ली।

भोपाल वनविहार तक पहुंचने के लिए देश के लगभग सभी स्थानों से हवाई, रेल एवं बस सेवा उपलब्ध हैं। यहीं से टेक्सियों के द्वारा, पैदल अथवा साईकिल से आप वन विहार के मनमोहक दृष्य को अपने जेहन में बिठा सकते हैं। यहा का बिड़ला मंदिर, गुफा मंदिर, कर्फ्यू वाली माता का मंदिर, कालीघाट, मनुआभान की टेकरी, एशिया की सबसे बड़ी ताजुल मस्जिद, गंगा-जमुनी तहजीब की प्रतीक जामा मस्जिद, प्राचीन कमला पार्क, छोटा तालाब, मोतिया तालाब, ताजमहल, लोकप्रियता के शिखर पर अपनी अलग ही छाप छोड़ते हैं। लेकिन भोपाल का श्मशान घाट भी (मृत्यु का अंतिम पड़ाव स्थल) किसी पर्यटन स्थल से कम नहीं हैं। ताजुल मस्जिद में प्रतिवर्ष लगने वाले इज्तिमा जिसमें विश्व के सभी देशों से लोग आकर सम्मिलित होते हैं।

भोपाल के आसपास के लगभग सौ किलोमीटर क्षेत्रों में सलकनपुर, भोजपुर, तरावली, सीहोर के सिद्ध गणेष, सांची, होशंगाबाद, रायेसन मार्ग पर स्थित कंकाली देवी का मंदिर (जो देश में एकमात्र कृष्ण मुद्रा काली का मंदिर हैं), केहरी महादेव अर्थात शेरोवाले महादेव सहित कदम-कदम पर ऐसे स्थल विकसित है कि आप की भोपाल से जाने की इच्छा ही नहीं होगी।

भोपाल का पान खाना नहीं भूलें क्योंकि यह अपनी विशिष्टता के लिए देष में अपना स्थान रखता हैं। विश्व की सबसे बड़ी औद्योगिक गैस त्रासदी झेल चुके इस शहर के बारे में कहा जा सकता है कि 'सारे पर्यटन बार-बार भोपाल पर्यटन एकबार।' आपको यहां पर रुकने को विवश कर देगा। यहा की हिन्दू-मुस्लिम तहजीब देखते ही बनती हैं।

यहां पहुंचने के लिए आवगमन के अनेक साधन उपलब्ध है। यहां देश के किसी भी कोने से हवाई या रेलमार्ग द्वारा भोपाल पहुंच सकते हैं। भोपाल से होषंगाबाद रोड, या मंडीदीप की बस में बैठकर भोजपुर उतरें। एवं वहां से मंदिर पैदल चलें। मंदिर की 5 किलोमीटर परिधि में ठहरने का कोई स्थान नहीं हैं अतः भोपाल ही ठहरने के लिए उपयुक्त स्थान है। भोपाल-होशंगाबाद रोड पर स्थित उक्त स्थल पर आवागमन 24 घण्टे उपलब्ध रहता हैं।

सीता सोरेन के भाजपा में शामिल होने के साथ ही सोरेन परिवार में बिखराव शुरू

हेमंत ने राजनीति को नहीं, बल्कि राजनीति ने उन्हें चुना : कल्पना

PHOTON NEWS RANCHI :

जामा विधायक सीता सोरेन के भाजपा में शामिल होने के साथ ही सोरेन परिवार में बिखराव शुरू हो गया है। अब सोरेन परिवार में स्व. दुर्गा सोरेन के नाम पर सियासत शुरू हो गई है। देवरानी कल्पना सोरेन और जेठानी सीता सोरेन में जंग छिड़ गई है। मंगलवार को सीता सोरेन भाजपा में शामिल हुईं। सीता ने कहा कि उनके पति स्व. दुर्गा सोरेन ने झारखंड और झामुमो के लिए त्याग और बलिदान दिया, लेकिन उनके निधन के बाद से ही उनका परिवार लगातार उपेक्षा का शिकार हो रहा है। इसके बाद कल्पना सोरेन ने भी दुर्गा सोरेन और हेमंत के संबंधों को लेकर ट्विटर पर एक पोस्ट डाला। जिसमें उन्होंने बताया कि हेमंत सोरेन तो राजनीति में आना ही नहीं चाहते थे, लेकिन अपने पिता और भाई के संघर्षों को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें मजबूरी में राजनीति में कदम रखना पड़ा।

कल्पना सोरेन।

हेमंत सोरेन के ट्विटर (एक्स) से ट्विट करते हुए कल्पना सोरेन ने कहा कि हेमंत के लिए दुर्गा सोरेन सिर्फ बड़े भाई नहीं बल्कि पिता तुल्य अभिभावक के रूप में रहे। 2006 में जब वे शादी करके सोरेन परिवार में आईं तब उन्होंने हेमंत सोरेन का अपने बड़े भाई के प्रति आदर, समर्पण और दुर्गा सोरेन का हेमंत के प्रति प्यार देखा। हेमंत तो राजनीति में आना ही नहीं चाहते थे, लेकिन दुर्गा सोरेन के निधन और शिबू सोरेन के स्वास्थ्य को देखते हुए उन्हें राजनीति में आना पड़ा। हेमंत सोरेन ने राजनीति को नहीं बल्कि राजनीति ने उन्हें चुन लिया। जिन्होंने आर्किटेक्ट बनने की ठानी थी उनके उपर शिबू और दुर्गा सोरेन की विरासत और संघर्ष को आगे बढ़ाने की ज़िम्मेदारी थी। उन्हीं के संघर्षों को आगे बढ़ाते और पूंजीपतियों-सामंतवादियों के खिलाफ लड़ते हुए आज हेमंत जेल चले गये। वे झुके नहीं। उन्होंने एक झारखंडी की तरह लड़ने का रास्ता चुना। वैसे भी हमारे आदिवासी समाज ने कभी पीठ दिखाकर, समझौता कर, आगे बढ़ना सीखा ही नहीं है।

दुर्गा सोरेन के नाम की दुहाई देकर घड़ियाली आंसू बहाने वाले लोग मुंह में उंगली न डालें : सीता सोरेन

RANCHI : जामा की पूर्व विधायक और भाजपा नेता सीता सोरेन ने बुधवार को सोशल मीडिया एक्स पर गुस्से का इजहार किया। उन्होंने पोस्ट में लिखा है कि मेरे पति दुर्गा सोरेन के निधन के बाद से मेरे और मेरे बच्चों के जीवन में जो परिवर्तन आया, वह किसी भयावह सपने से कम नहीं था। मुझे और मेरी बेटियों को न केवल उपेक्षित किया गया, बल्कि हमें सामाजिक और राजनीतिक रूप से भी अलग-थलग कर दिया गया। सीता ने लिखा है कि मैंने न केवल एक पति खोया, बल्कि एक अभिभावक, एक साथी और अपने सबसे बड़े समर्थक को भी खो दिया। मेरे इस्तीफे के पीछे कोई राजनीतिक कारण नहीं है। यह मेरी और मेरी बेटियों की पीड़ा, उपेक्षा और

सीता सोरेन।

हमारे साथ हुए अन्याय के खिलाफ एक आवाज है। जिस झारखंड मुक्ति मोर्चा को मेरे पति ने अपने खून-पसीने से सींचा, वह पार्टी आज अपने मूल्यों और कर्तव्यों से भटक गई है। मैं समस्त झारखंडवासियों से अनुरोध करती हूं कि मेरे इस्तीफे को एक व्यक्तिगत संघर्ष के रूप में देखें, न कि किसी राजनीतिक चाल के रूप में। सीता ने लिखा है कि झारखंड और झारखंडियों के लिए अपने जीवन का बलिदान देने वाले दुर्गा सोरेन के नाम की दुहाई देकर घड़ियाली आंसू बहाने वाले लोगों से विनती है कि मेरे मुंह में अंगुली नहीं डालें। यदि मैं और मेरे बच्चों ने मुंह खोलकर भयावह सच्चाई उजागर किया तो कितनों का राजनैतिक और सत्ता सुख का सपना चूर-चूर हो जायेगा। झारखंड की जनता वैसे लोगों के नाम पर थूकेगी, जिन्होंने हमेशा से दुर्गा सोरेन और उनके लोगों को मिटाकर समाप्त करने की साजिश की।

रांची के एचईसी में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में यूनिटी मॉल का होगा निर्माण

RANCHI : रांची के ग्रेटर एरिया एचईसी में निर्मित हो रहे वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में यूनिटी मॉल का निर्माण कराया जायेगा। केंद्र सरकार की योजना को राज्य सरकार ने स्वीकृत करते हुए उद्योग विभाग ने आदेश जारी किया है। केंद्र सरकार ने स्कीम ऑफ स्पेशल असिस्टेंट के तहत देश के सभी राज्यों की राजधानी में यूनिटी मॉल निर्माण कराने का फैसला लिया है। इसके लिए 5000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। राज्य से भेजा गया डीपीआर भी केंद्र सरकार ने स्वीकृत कर दिया है। 162.92 करोड़ की लागत इसके निर्माण में आयेगी। सारी राशि का वहन केंद्र सरकार करेगी। इस योजना अंतर्गत वर्ल्ड ट्रेड सेंटर निर्माण के लिए जिडको को निःशुल्क कोर कैपिटल एरिया साइड-1, एचईसी धुर्वा रांची में 3.45 एकड़ भूमि उपलब्ध करायी गयी है। इस भूखंड के एक भाग पर यूनिटी मॉल का निर्माण कराया जायेगा। इस संबंध में नगर विकास विभाग से भी पहले सहमति ली गयी है। ऐसे में एक जगह वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और यूनिटी मॉल का निर्माण किया जायेगा।

BRIEF NEWS

अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में फिल्म पतंग को मिला सम्मान, आस्था ने किया फिल्म निमार्ता को सम्मानित

ROURKELA : राउरकेला की सामाजिक संस्था ₹आस्था₹ ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस स्थानीय भंज भवन सभागार में धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर प्रभु जगन्नाथ की धरती पर बनी बाल हिन्दी फीचर फिल्म ₹पतंग₹ के बाल कलाकारों में बी एस अनुष्का, तनिषा मुखर्जी और प्राभिका महान्ति सहित फिल्म निमार्ता विभूती कुमार गुप्ता को कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि साध्वी आदि माता चिन्मयी, लेखिका प्रज्ञा प्रवर्तिका दास एवं सामाजिक कार्यकर्ता अनिता अग्रवाल, राउरकेला बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष एडवोकेट सुरेश चंद्र माझी उपस्थित थे। पतंग के निमार्ता विभूती गुप्ता ने बताया कि यह फिल्म गरीब और अनाथ बच्चों के जीवन पर आधारित है जो ट्रेनों में झाड़ू मार कर अपनी जीवन जीते हैं, यह फिल्म एक समाज की सच्चाई है जो आपको झकझोर कर रख देगी। इसकी परिकल्पना और निर्देशन ओडिशा के जाने-माने निर्देशक डॉ माधव चन्द्र परिडा ने किया है। बतौर एसोसिएट डायरेक्टर एवं संवाद लेखन डॉ धर्मवीर भारती ने किया है। सभी अतिथियों ने फिल्म पतंग के साथ साथ सभी बालिका कलाकारों की उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम में आस्था के अध्यक्ष विष्णु मोहन मिश्रा, महासचिव आलोक जेना, सांस्कृतिक सचिव शिवानी राना, संगठन सचिव ज्योत्स्ना नंदा सहित अन्य सदस्यों में विष्णु प्रिया स्वाई ,पूर्णिमा भट्टाचार्य, अश्वनी सिंह, रेनू जेना ,प्रज्ञा परिमिता दास, मधुमिता पांडा, अशोक पटेल, वैजयंती बख्शी, सरोजिनी पति एवं परशुराम मलिक आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

ओड़िया भाषियों ने मनाया पखाल दिवस

ROURKELA : आज विश्व पखाल दिवस है। ओड़िया के पारंपरिक भोजन में अनूठे संस्करण पखाल है। ओडिशा का लोगो में पाखल भात की स्वाद की तुलना में सब कुछ फीका है।ओडिशा के उड़िया भाषी लोगों के जीवन में पारंपरिक भोजन 'पखाल' का विशेष स्थान है। यह ओडिशा के लोगो के लिए सिर्फ भोजन नहीं है। बल्कि भोजन के प्रति प्यार, सम्मान और प्रतिबद्धता का स्पष्ट प्रमाण है।

विश्व नाट्य दिवस पर पांच नाटकों का होगा मंचन

ROURKELA : विश्व नाट्य दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव-2024 की तैयारी बैठक आयोजित की गई। 5 नाटकों का मंचन किया जाएगा जिसमें नई दिल्ली, कोलकाता, बॉम्बे, भुवनेश्वर और राउरकेला के मंच कलाकार अपनी जादुई कला मंच पर प्रस्तुत करेंगे। आयोजकों की ओर से राउरकेलावासियों से ऐसे नाटकों का भरपूर लाभ उठाने का अनुरोध किया गया है। थिएटर प्रेमियों से अनुरोध है कि वे हर शाम नाटक देखें और दर्शक प्रतियोगिता, एकल अभिनय प्रतियोगिता और समूह नृत्य प्रतियोगिता का लाभ उठाने की अपील किया गया।

राउरकेला लॉ कॉलेज में मना विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस

ROURKELA : राउरकेला लॉ कॉलेज में विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संपादिका डॉ. एफसी महंती ने की जबकि राउरकेला बार एसोसिएशन के वरिष्ठ वकील कैलाश चंद्रा प्रधान मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए और उपभोक्ताओं के अधिकारों पर व्यापक चर्चा की। इस दौरान कैलाश चन्द्र प्रधान ने कहा कि यदि उपयोगकर्ता जागरूक नहीं है तो इसके परिणाम और यदि उपयोगकर्ता जागरूक है तो इसके लाभों पर प्रकाश डाला। इस मौके पर उन्होंने अलग-अलग देशों के कानूनों का उदाहरण देकर अंतरराष्ट्रीय उपभोक्ता अधिकार दिवस मनाए जाने के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में कॉलेज के प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया एवं अपने विचार रखे। कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों द्वारा उपभोक्ता जागरूकता पर एक नाटक प्रस्तुत किया गया। बाद में, छात्रों और संकाय सदस्यों के नेतृत्व में एक नारा जुलूस नयाबजार इलाके में परिक्रमा किया गया और स्थानीय लोगों को सचेत किया।

मां मंगला मंदिर का मरम्मत कार्य हुआ पूरा

BADAMUNDA : बंडामुंडा डी केबिन स्थित चांदनी चौक बस्ती में 45 साल पुराने मां मंगला मंदिर का नवीनीकरण किया। मंदिर की प्रतिष्ठा मंगलवार को विधि विधानपूर्वक की गई। जानकारी के अनुसार यह 45 साल पुराना मां मंगला मंदिर के इस मंदिर को नवीनीकरण करने के लिए राउरकेला विधायक एवं श्रममंत्री शारदा प्रसाद नायक के विधायक निधि से 2.5 लाख के लागत से मन्दिर का मरम्मत कार्य संपूर्ण हुआ। मन्दिर में माँ का प्राण प्रतिष्ठा का पूजा कर अंचल वासियों के लिए भंडारा का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर बीजेडी के नगर अध्यक्ष गगन पांडा शामिल हुए।

सीता सोरेन ने खुद को कलंकित किया : शैलेंद्र महतो

JAMSHEDPUR : जमशेदपुर लोकसभा के पूर्व सांसद शैलेंद्र महतो ने कहा कि विधायक सीता सोरेन ने खुद को कलंकित किया है। मैं इस बात को इसलिए कह रहा हूं कि एक तरफ बूढ़े सास-ससुर और दूसरी तरफ देवर हेमंत सोरेन जेल में, इस परिस्थिति में विधायक सीता सोरेन अपने परिवार को छोड़कर भाजपा में शामिल हो गई। इस कृत्य को मानवता माफ नहीं कर सकता। लोग कई पीढियों तक याद रखेंगे। राजनीति भी गजब का खेल है। पिछले दिनों सांसद गीता कोड़ा ने भी भाजपा में योगदान किया। 1970 के दशक में फिल्म ह्यसीता और गीताह्ण आई थी। आज इस फिल्म का नाम झारखंड के राजनीतिक रंगमंच पर मजाकिया लहजे से लिया जा रहा है। फिल्म में सीता और गीता का क्या रोल था बहुत से लोगों को याद होगा? लोग अनुमान कर रहे हैं कि भाजपा इन दो महिला सीता और गीता की बदौलत अगला चुनाव लड़ेगी?

स्वदेशी मेला में मेहंदी रचा महिलाओं-बच्चियों ने जीते पुरस्कार

JAMSHEDPUR : बिष्टुपुर के गोपाल मैदान में लगे स्वदेशी मेला में मंगलवार को मेहंदी रचाओ प्रतियोगिता हुई, जिसमें महिलाओं के साथ बच्चियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। संयोजक देव कुमार की देखरेख में हुई प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार पूर्णिमा कुमारी, द्वितीय पुरस्कार संगीता कुमारी और तृतीय पुरस्कार पायल डे ने हासिल किया। इसी क्रम में ह्यसमाज निर्माण में वरिष्ठ नागरिकों की भूमिकाह्ण पर संगोष्ठी हुई, जिसमें मुख्य वक्ता जवाहरलाल शर्मा, रमेश कुमार और प्रोफेसर बी कुमार ने अपने विचार रखे। मंच संचाल अभय सिंह व धन्यवाद ज्ञापन राजपति देवी ने किया। मेला में प्राथमिक चिकित्सा पर भी जानकारी दी गई, जिसमें टाटा मेन हॉस्पिटल के हृदयरोग विभाग के हेड डॉ मंदार साह, डॉ विमलेंदु, डॉ जयदीप व उनकी टीम द्वारा सीपीआर तकनीक की जानकारी दी गई। मुंबई से प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ सुमैय्या राघवन ने आयोजन में ऑनलाइन जुड़ कर मार्गदर्शन किया। उन्होंने बताया कि हर व्यक्ति अपने आप मे एक प्राथमिक उपचार करने वाला डॉक्टर बन सकता है, यदि उसने सीपीआर तकनीक सीख ली। आज के दौर में हृदयाघात की घटनाएं बहुत बढ़ गई हैं। हम सभी को यदि यह तकनीक आ जाएगी तो हम ऐसे व्यक्ति, जिसे हार्ट अटैक हुआ है, उसका प्राथमिक इलाज सीपीआर तकनीक से कर सकते हैं। इससे मरीज को कुछ और वक्त मिल जाएगा और हम उसे सही वक्त पर हॉस्पिटल पहुंचा कर उसकी जान बचा सकते हैं।

बैंक ऑडिट एवं इनकम टैक्स पर सेमिनार

JAMSHEDPUR : जमशेदपुर चार्टर्ड एकाउंटेंट्स शाखा द्वारा ह्यबैंक ऑडिट और आयकरह्ण विषय पर बुधवार को सेमिनार हुआ। होटल सोनेट में हुए सेमिनार में दिल्ली से आए सीए अनुरुद्ध तिवारी और सीए प्रकाश सिन्हा ने महत्वपूर्ण जानकारी दी। अनुरुद्ध तिवारी ने बैंक ऑडिट में बरती जाने वाली सावधानियां और प्रकाश सिन्हा ने धारा 43बी(एच) और रि-असेसमेंट में इनकम टैक्स में हाल में हुए बदलाव को विस्तार से बताया। सेमिनार में मुख्य अतिथि आइसीएआइ-सीपीई समिति के वाइस चेयरमैन सीए ज्ञानचंद्र मिश्रा थे।

राज्य शिक्षा परियोजना निदेशक के नेतृत्व में गठित होगी अनुश्रवण टीम, सरकारी स्कूलों में करेगी औचक निरीक्षण

PHOTON NEWS RANCHI :

सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता में सुधार और बेहतर शैक्षणिक वातावरण सुनिश्चित करने के लिए राज्य में लागू किये गए प्रोजेक्ट इम्पैक्ट की निगरानी के लिए राज्य स्तर पर डेडिकेटेड टीम बनाई जायेगी। टीम हर सप्ताह स्कूलों में प्रोजेक्ट इम्पैक्ट की मॉनिटरिंग कर राज्य शिक्षा परियोजना निदेशक के साथ इस प्रोजेक्ट के आउटकम की जानकारी सांझा करेगी। अप्रैल महीने में प्रोजेक्ट इम्पैक्ट की जमीनी पड़ताल के लिए राज्यस्तरीय अनुश्रवण टीम विभिन्न जिलों में जायेगी। प्रोजेक्ट इम्पैक्ट में लापरवाही बरतने वाले शिक्षकों, प्राध्यापकों के खिलाफ कार्रवाई भी की जायेगी।

यह बातें राज्य शिक्षा परियोजना निदेशक आदित्य रंजन ने प्रोजेक्ट इम्पैक्ट की समीक्षा बैठक में कही। आदित्य रंजन बुधवार को 80 मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालयों के प्रधान अध्यापको, वार्डन और सात

उत्कृष्ट स्कूलों के स्कूल प्रबंधकों के साथ समीक्षा बैठक कर रहे थे। रंजन ने कहा कि वे स्वयं अप्रैल में प्रोजेक्ट इम्पैक्ट की स्थिति का जायजा लेने के लिए तीन-तीन स्कूलों का निरीक्षण करेंगे। प्रोजेक्ट इम्पैक्ट का मकसद स्कूलों में अनुशासनात्मक एवं उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण तैयार करना है।

यूनिफार्म ट्रेनिंग को मिलेगा बढ़ावा : समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए राज्य शिक्षा परियोजना निदेशक आदित्य रंजन ने कहा कि हर बार अलग-अलग प्रभागों, विषयों पर शिक्षकों, ट्रेनरो, वार्डन और प्रधान अध्यापकों की ट्रेनिंग अलग-अलग नहीं होगी। इससे शैक्षणिक निरंतरता प्रभावित होती है और शैक्षणिक गतिविधियां भी ससमय पूरी नहीं हो पाती। आदित्य रंजन ने कहा कि ऐसी प्रशिक्षण प्रणाली विकसित की जाए, जिसमें एक समय में सभी प्रभाग अपनी अपनी ट्रेनिंग पूरी कर लें, जिससे समय और संशोधनों की बचत हो। साथ ही शैक्षणिक गतिविधियां भी अधिक प्रभावित ना हो। उन्होंने कहा कि प्रत्येक प्रशिक्षण सत्र के बाद उस सत्र के परिणामों का आंकलन किया जायेगा।

पुलिस ने ब्राउन शुगर के साथ एक को दबोचा

RANCHI : रांची के सुखदेवनगर थाना पुलिस ने भारत माता चौक के नजदीक ब्राउन शुगर बेच रहे एक आरोपित को रंगेहाथ गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपित का नाम नितीन कुमार गुप्ता बताया गया है। आरोपित मूलरूप से बिहार के गया जिले के इमामगंज थाना क्षेत्र स्थित रानीगंज का रहने वाला है। इसके पॉकेट के पास से 10 पुड़िया ब्राउन शुगर, 4920 रुपये, वनप्लस मोबाइल, बाईक और इलेक्ट्रिक वेट मशीन बरामद किया है। छापेमारी के दौरान मौके से सरगना सहित पांच आरोपित फरार हो गये। फरार आरोपितों में सरगना बबलू यादव उर्फ बबलू राय, कृष्णा यादव, कन्हैया यादव, दुर्लभ और पवन उर्फ पवन सोनी शामिल है। डीएसपी प्रकाश सोय ने बुधवार को बताया कि लोकसभा चुनाव को लेकर विधि व्यवस्था बनाये रखने के लिए अवैध शराब, हथियार और मादक पदार्थ की बरामदगी के लिए एसएसपी को मिली गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी की गयी। इसमें ब्राउन शुगर के साथ एक

एसडीओ ने राजभवन के समक्ष धरना प्रदर्शन कर रहे लोगों को हटवाया

PHOTON NEWS RANCHI :

सदर एसडीओ उत्कर्ष कुमार और अपर जिला दंडाधिकारी (विधि-व्यवस्था) रांची राजेश्वर नाथ आलोक बुधवार को राजभवन के पास पहुंचे और वहां धरना-प्रदर्शन कर रहे लोगों को हटवाया। झारखंड दिव्यांग आंदोलन संघ और राष्ट्रीय युवा शक्ति को लोकसभा चुनाव-2024 के आचार संहिता के तहत तत्काल धरना-प्रदर्शन हटाने को कहा। इसपर उन्होंने तत्काल धरना हटा लिया। इस दौरान कोतवाली इंस्पेक्टर शैलेश कुमार सहित अन्य पुलिसकर्मी मौजूद थे।

एसडीओ ने धरना प्रदर्शन कर रहे लोगों को आचार संहिता के बारे में जानकारी दी। उन्हें बताया कि आचार संहिता के दौरान सार्वजनिक और सरकारी संपत्ति पर नारा लिखना, पोस्टर और पंपलेट्स चिपकाना, पार्टी विशेष का झंडा लगाना, सड़कों पर बैनर, होर्डिंग और तोरण द्वार लगाना प्रतिबंधित है। इसपर वहां मौजूद लोगों ने धरना प्रदर्शन को समाप्त कर दिया।

उल्लेखनीय है कि चुनाव प्रक्रिया खत्म होने या 60 दिनों तक (जो भी पहले हो) धारा 144 लागू रहेगी। शादी, बारात पार्टी, शवयात्रा, हाट बाजार, मरीजों को लेकर अस्पताल जा रहे लोगों, विद्यालय या महाविद्यालय जाने वाले विद्यार्थियों, सरकारी कर्मचारी और पुलिस बल पर यह लागू नहीं होगी।

रांची में एचडीएफसी बैंक की शाखा का उद्घाटन

RANCHI : महानगर के पावर हाउस चौक चुटिया में बुधवार को एचडीएफसी बैंक की नई शाखा का उद्घाटन हुआ। शाखा का उद्घाटन महिला बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग के सचिव मनोज कुमार ने किया। मनोज कुमार ने कहा कि इस क्षेत्र में बैंक खुलने से लोगों को बेहतर सुविधा मिलेगी और इस क्षेत्र के विकास में बैंक सहभागी बनेगी। एचडीएफसी बैंक के जोनल हेड अभिषेक कुमार ने कहा कि इस शाखा में बैंकिंग से संबंधित सारी सुविधाएं दी जाएगी और आसपास के लोगों की डे टू डे बैंकिंग आसन हो जायेगा।

उपायुक्त ने लोकसभा चुनाव को लेकर की बैठक, दिए कई निर्देश

PHOTON NEWS RANCHI :

रांची जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने बुधवार को समाहरणालय में लोकसभा चुनाव को लेकर बैठक की। इस दौरान उपायुक्त ने वरीय अधिकारियों के साथ कई आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया। साथ ही सभी मतदान केंद्रों पर मतदान कर्मियों और मतदाताओं के लिए न्यूनतम मूलभूत सुविधाएं मुहैया कराने को कहा। उपायुक्त ने सभी अधिकारियों को कहा कि चुनाव आयोग की ओर से दिए गए सभी दिशा-निर्देश का पालन विशेष रूप से हो यह सुनिश्चित करें।

उपायुक्त ने अधिकारियों को मतदान केंद्रों में साफ-सफाई, पेयजल की व्यवस्था, शौचालय की व्यवस्था बिजली की वैकल्पिक व्यवस्था, सभी बीडीओ को बूथ अनुसार सुविधा मुहैया कराने सहित अन्य कई दिशा-निर्देश दिये। बैठक में उप-विकास आयुक्त दिनेश कुमार यादव, अपर समाहर्ता रामनारायण सिंह, अपर जिला दंडाधिकारी (विधी-व्यवस्था) राजेश्वर नाथ आलोक आदि उपस्थित थे।

एकता व भाईचारगी की सीख देता है माह-ए-रमजान : तनवीर खान

RANCHI : झारखंड प्रदेश कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग के उपाध्यक्ष तनवीर खान के आवास पर रोजा इफ्तार पार्टी का आयोजन बुधवार शाम को किया गया। जिसमें मौजूद रोजेदारों ने अमन चैन के लिए दुआ मांगी। कार्यक्रम में गंगा जमुनी तहजीब देखने को मिली। कांग्रेस नेता तनवीर खान ने कहा कि माह ए रमजान एकता व भाईचारगी की सीख देता है। हमें मिल जुलकर त्योहार मनाना चाहिए और हर धर्म का सम्मान करना चाहिए। सामूहिक इफ्तार से आपसी मोहब्बत और भाईचारा का माहौल बनता है। इस तरह के कार्यक्रम समय-समय पर होते रहने चाहिए।

बंगाल से रांची आईं दो बहनों के लापता मामले की सीआईडी जांच का अनुरोध

PHOTON NEWS RANCHI :

अपराध अनुसंधान विभाग (सीआईडी) के डीजी अनुराग गुप्ता को चाईल्ड राईट्स फाउंडेशन के सचिव बैधनाथ कुमार ने बुधवार को पत्र देकर पश्चिम बंगाल से रांची आयी दो बहनों के लापता होने के मामले की जांच कराने की मांग की है।

बैधनाथ कुमार ने सीआईडी को लिखे पत्र में कहा है कि बंगाल के मुर्शिदाबाद से सात मार्च को दो लड़कियां लापता हो गयी थीं। परिजनों ने काफी खोजबीन की तो पता चला कि दोनों लड़कियों का लास्ट लोकेशन रांची रेलवे स्टेशन है। इसके बाद लड़की के माता-पिता ढूंढते हुए रांची आये। उन्होंने चुटिया थाना के प्रभारी से दोनों लड़कियों की सारी जानकारी साझा की। थाना प्रभारी ने परिजनों से लड़की को खोजबीन के लिए सहयोग करने की बात कही।

सीआईडी को लिखे पत्र में बताया गया है कि अंदेशा है कि दोनों लड़कियों को रांची के स्टेशन रोड में स्थित होटलों में स्कॉट सर्विस और मसाज पार्लर के लिए लाया गया होगा। इस रैकेट के खिलाफ पूर्व में भी बरियातु थाना में प्राथमिकी दर्ज करायी गयी थी। इसलिए मामले की गहनता से जांच की जाये और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाये। पत्र में कहा गया है कि इस संबंध में लड़की के परिजनों ने बंगाल के मुर्शिदाबाद थाना में भी प्राथमिकी दर्ज करवायी है।

23 मार्च को रांची में होगा होली धमाल

RANCHI : आर्ट विल्ला इवेंट की ओर से प्री होली सेलिब्रेशन इट्स होली थिंग का आयोजन आगामी 23 मार्च को किया जा रहा है। यह आयोजन रांची के कृष्णा पैलेस में किया जाएगा। बता दे कि रांची में होने वाला होली सेलिब्रेशन में यह कार्यक्रम सबसे अलग और सबसे ज्यादा शानदार होगा। कार्यक्रम में डीजे की धुन में यूथ के रंगभरी होली खेलेंगे। डीजे अपने गतिशील मिश्रणों के साथ ऊर्जा को ऊंचा रखेंगे, जिससे रंगों और संगीत का एक गैर-रोक उत्सव सुनिश्चित होगा। 'गुलाल' में खुशी, हंसी और अविस्मरणीय यादों से भरे दिन के लिए हमसे जुड़ें।

atomy
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष के खिलाफ जारी गैर जमानती वारंट को चुनौती देने वाली याचिका पर हुई सुनवाई

हाईकोर्ट से कांग्रेस नेता राहुल गांधी को राहत

PHOTON NEWS RANCHI :

झारखंड हाईकोर्ट में मानहानि मामले में चाईबासा स्थित एमपी-एमएलए की विशेष अदालत द्वारा कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी के खिलाफ 27 फरवरी को जारी गैर जमानती वारंट को चुनौती देने वाली याचिका की सुनवाई बुधवार को हुई।

मामले में हाई कोर्ट ने राहुल गांधी के खिलाफ चाईबासा की एमपी-एमएलए कोर्ट द्वारा जारी गैर जमानती वारंट को एक माह के लिए शर्त के साथ स्थगित कर दिया। साथ ही राहुल गांधी को ट्रायल फेस करने के लिए कानून सम्मत उपयुक्त कदम उठाने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने राहुल गांधी की याचिका को निष्पादित कर दिया।

यह मामला वर्ष 2018 का है। भाजपा को लेकर राहुल गांधी द्वारा आपत्तिजनक टिप्पणी की गई थी। राहुल गांधी ने वर्ष 2018 में कांग्रेस के एक अधिवेशन में कहा था कि भाजपा में कोई भी हत्यारा अध्यक्ष बन सकता है लेकिन कांग्रेस में ऐसा नहीं है। इसे लेकर भाजपा के नेता प्रताप कटियार ने चाईबासा कोर्ट में मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी की अदालत में शिकायतवाद दायर किया गया था। बाद में मामले को चाईबासा में एमपी-एमएलए कोर्ट में इसे ट्रांसफर कर दिया गया था।

मामले में अप्रैल 2022 में चाईबासा एमपी-एमएलए कोर्ट ने राहुल गांधी के खिलाफ जमानती वारंट जारी किया था, जिस पर उनके द्वारा कोई संज्ञान नहीं लिया गया। इसके बाद 27 फरवरी को कोर्ट ने राहुल गांधी के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किया था। राहुल गांधी के वकील ने कोर्ट में आवेदन देकर सशरीर उपस्थित होने से छूट मांगी थी लेकिन अदालत ने उनके आवेदन को खारिज करते हुए 27 मार्च को सशरीर उपस्थित होने का आदेश जारी किया है।

राजेश्वर नाथ आलोक बुधवार को राजभवन के पास पहुंचे और वहां धरना-प्रदर्शन कर रहे लोगों को हटवाया। झारखंड दिव्यांग आंदोलन संघ और राष्ट्रीय युवा शक्ति को लोकसभा चुनाव-2024 के आचार संहिता के तहत तत्काल धरना-प्रदर्शन हटाने को कहा। इसपर उन्होंने तत्काल धरना हटा लिया। इस दौरान कोतवाली इंस्पेक्टर शैलेश कुमार सहित अन्य पुलिसकर्मी मौजूद थे।

एसडीओ ने धरना प्रदर्शन कर रहे लोगों को आचार संहिता के बारे में जानकारी दी। उन्हें बताया कि आचार संहिता के दौरान सार्वजनिक और सरकारी संपत्ति पर नारा लिखना, पोस्टर और पंपलेट्स चिपकाना, पार्टी विशेष का झंडा लगाना, सड़कों पर बैनर, होर्डिंग और तोरण द्वार लगाना प्रतिबंधित है। इसपर वहां मौजूद लोगों ने धरना प्रदर्शन को समाप्त कर दिया।

उल्लेखनीय है कि चुनाव प्रक्रिया खत्म होने या 60 दिनों तक (जो भी पहले हो) धारा 144 लागू रहेगी। शादी, बारात पार्टी, शवयात्रा, हाट बाजार, मरीजों को लेकर अस्पताल जा रहे लोगों, विद्यालय या महाविद्यालय जाने वाले विद्यार्थियों, सरकारी कर्मचारी और पुलिस बल पर यह लागू नहीं होगी।

कॉपी प्रिंट के लिए पटना से अभिषेक को बुलाया

हजारीबाग फेस टाइम ऐप से होती थी बात

बिहार। में तीसरे चरण के लिए शिक्षक भर्ती परीक्षा के पेपर लीक कांड में नालंदा के प्रदीप की अहम भूमिका है, जो गैंग का एक्टिव मेंबर है। नालंदा के नगरनौसा के रहने वाले इस शख्स के पास परीक्षा से पहले क्वेश्चन पेपर पहुंच चुका था। उसने पेन ड्राइव में क्वेश्चन रखा हुआ था। पेन ड्राइव से क्वेश्चन पेपर का प्रिंट आउट निकालने के लिए उसने पटना से एक साइबर कैफे संचालक अभिषेक कुमार को हजारीबाग बुलाया था। पेन ड्राइव लेकर विकास नामक शख्स के पास भेजा था। फिर उस पेन ड्राइव से 170 से 180 कॉपी प्रिंट कराए गए

थे। इस काम के लिए प्रदीप ने अभिषेक को खर्च के लिए 55 हजार रुपए दिए थे। दरअसल, पेपर लीक कांड के इस महत्वपूर्ण बात का जिक्र आर्थिक अपराध इकाई (एडव) की जांच में सामने आई है। हजारीबाग के कोहिनूर बैंक्वेट हॉल में छापेमारी के दौरान एडव ने अभिषेक कुमार को पकड़ा था। जब उससे पूछताछ की गई तो उसने सारे राज खोल दिए। अभिषेक पटना में पाटलिपुत्रा थाना क्षेत्र के केसरी नगर के रोड नंबर-7 का रहने वाला है। पूछताछ के दौरान एडव को दिए अपने बयान में उसने बताया कि एजी कॉलोनी में उसका साइबर कैफे है। एक बार कैफे पर ही उसकी मुलाकात प्रदीप से हुई थी। वो अलग-अलग परीक्षाओं के रिजल्ट जारी होने पर कैंडिडेट्स के पास होने की जानकारी लगाने आया करता था। एक बार प्रदीप ने बताया था कि अलग-अलग प्रतियोगिता परीक्षाओं में सेटिंग का काम करता है। साथ ही अभिषेक से यह भी कहा था कि मेरे साथ काम करोगे तो काफी फायदा होगा। जब शिक्षक भर्ती परीक्षा का समय आया तो उसने फेस टाइम ऐप के जरिए मुझसे बात की और हजारीबाग बुलाया। अपने बयान में अभिषेक ने जांच एजेंसी को बताया कि हजारीबाग में विकास के माध्यम से प्रदीप ने मुझे पेन ड्राइव भेजा। जिसके अंदर टिक किए हुए सवाल और उसके जवाब थे। कोहिनूर बैंक्वेट हॉल में मैंने टिक किए हुए क्वेश्चन पेपर और उसके जवाब के लगभग 170-180 कॉपी निकाली। वहां पर पहले से करीब 400 से 500 टीचर कैंडिडेट मौजूद थे, जिन्हें वहीं जवाब को रटवाया गया था।दानापुर में खगौल के लखनीबिगहा के रहने वाले सुमित कुमार ने अपने बयान में जांच एजेंसी को बताया कि प्रदीप के कहने पर कैंडिडेट्स के नाम, रोल नंबर, उनकी जन्म तिथि, परीक्षा केंद्र, विषय और पाली की डिटेल्स तैयार की थी। इस काम के लिए उसे पहले 10 हजार रुपए मिले थे। बाकी के 25-30 हजार रुपए बाद में देने को कहा गया था। इसी तरह नालंदा के नूरसराय का रहने वाला अभिषेक कुमार कैंडिडेट्स को सवाल और जवाब रटवाने में मदद कर रहा था। इस काम के लिए उसे 10 हजार दिया गया था। जबकि, नगरनौसा के विक्की कुमार को बिहार शरीफ से 40-45 कैंडिडेट्स को बस से हजारीबाग पहुंचवाने का टास्क दिया गया था। इस पूरे प्रकरण में आर्थिक अपराध इकाई अब तक सेटर्स समेत 276 लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। पिछले 6 दिनों की जांच के दौरान पटना, हजारीबाग और दूसरे जिलों में हुए छापेमारी में काफी सबूत जुटाए गए हैं। जांच एजेंसी से जुड़े सूत्रों के अनुसार पुख्ता तौर पर प्रमाणित करने के लिए काफी सबूतों को आगे की जांच के लिए ऋछ भेजा गया है।

संक्षिप्त डायरी

एनएच पर भीषण सड़क हादसा बाइक सवार की मौत

खगड़िया। के पसराहा थाना अंतर्गत एनएच 31 पर मंगलवार देर रात्रि एक बाइक सवार की मौत सड़क दुर्घटना में हो गई। इसके बाद मृतक के परिजनों में चीत्कार मचा हुआ है। बताया जा रहा है कि दूध लदा टैंकर तेज रफ्तार से नौगछिया की ओर जा रहा था। इसी दौरान विपरीत दिशा से आ रहे बाइक सवार को उसने कुचल दिया। मृतक की पहचान मधेपुरा जिला के चौसा थाना अंतर्गत कैलाश निवासी मोहम्मद अब्बास खान के पुत्र मो अनवारुल के रूप में हुई है। पुलिस ने शव कब्जे में लेते हुए पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल खगड़िया भेज दिया है। परिजनों ने बताया कि मृतक युवक अपने घर से खगड़िया जिले के चौथम थाना अंतर्गत फरेह गांव अपना ससुराल जा रहा था। बता दें कि उक्त घटना के बाद टैंकर चालक अपना वाहन लेकर फरार हो गया। इधर त्वरित कार्रवाई करते हुए पसरहा थाना पुलिस ने चालक को भागलपुर जिले के झंडापुर थाना अंतर्गत वीरपुर बस स्टैंड के पास से गिरफ्तार कर लिया। जिसे पुलिस अभिरक्षा में रखा गया है। प्रत्यक्षदर्शियों की माने तो टैंकर चालक विपरीत दिशा से आ रहे बाइक सवार को सामने से टक्कर मार बाइक को घसीटते हुए कुछ दूर तक ले गया। पसरहा अध्यक्ष ने बताया कि मामले में वाहन चालक और वाहन पर प्राथमिकी दर्ज की गई है। मृतक के परिजनों को सूचित कर दिया गया है। गौरतलब है कि पसराहा एनएच 31 पर आए दिन सड़क दुर्घटना में जान मन का नुकसान होता है। अभी दो दिन पहले ही युक्त जगह पर एक एसयूवी वाहन सड़क दुर्घटना का शिकार हुआ था।

हाजीपुर ने रामविलास को गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड तक पहुंचाया

हाजीपुर। लोकसभा सीट चिराग के लिए प्रतिष्ठा वाली सीट है। इस सीट को लेकर चाचा पारस से भी तनातनी बनी हुई थी। लेकिन, एनडीए में यह सीट लोजपा(आर) यानी चिराग के खाते में गई है। दरअसल, हाजीपुर से उनके पिता रामविलास पासवान 8 बार सांसद रहे हैं। इस सीट की वजह से रामविलास की चर्चा पूरे देश में हुई थी। उनका नाम गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड में दर्ज हुआ था। 1977 में 4.24 लाख वोट से जीत हुई थी। वोट प्रतिशत 89.3% था, जो अब तक सबसे अधिक मतदान प्रतिशत है। 2019 में उन्होंने यह सीट भाई पशुपति पारस को देकर जीत दर्ज करवाई थी। यह एक बड़ी वजह है कि चिराग इसे विरासत वाली सीट मानते हैं। हाजीपुर लोकसभा क्षेत्र की इस बार भी गिनती वीआईपी सीट में हो सकती है। हाजीपुर लोकसभा क्षेत्र से रामविलास पासवान की मात्र दो बार हार हुई थी। इंदिरा गांधी की हत्या के बाद 1984 में और 2009 में उनकी हार हुई थी। इसके अलावा 1977 से लेकर 2019 तक रामविलास परिवार के कब्जे में यह सीट रही। हाजीपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र एससी श्रेणी की सीट है। यहां की साक्षरता दर 55.13% है । एससी मतदाताओं की संख्या लगभग 391,977 है। करीब 20.9% फीसदी एससी हैं। वहीं, एसटी मतदाता करीब 1,875 हैं जो लगभग 0.1% है। मुस्लिम मतदाताओं की संख्या लगभग 146,452 है, जो 7.8% के करीब है। वहीं, इस सीट पर ग्रामीण मतदाताओं की संख्या लगभग 1,701,067 है। जबकि, शहरी मतदाता लगभग 174,420 हैं।

बक्सर-बिहटा में शंभू नाथ यादव के 14 ठिकानों पर छापेमारी

बक्सर। में राजद विधायक और लालू यादव के करीबी शंभू नाथ सिंह यादव और उनसे जुड़े लोगों के ठिकाने पर एऊ की छापेमारी चल रही है। बुधवार सुबह 5 बजे एऊ के अफसर बक्सर जिले के सदर सिमरी ब्रह्मपुर और चक्की प्रखंड क्षेत्र में विधायक से जुड़े 13 ठिकानों पर छापेमारी करने पहुंचे। इसके अलावा बिहटा के खेड़लपुरा गांव स्थित सोन होटल में भी एऊ की रेड चल रही है। जांच एजेंसी विधायक के रिश्तेदारों के घर भी छापेमारी कर रही है। टीम ने शंभू नाथ यादव और उनके परिजनों को उनके आवास में ही रोक कर रखा है, जहां सभी से लगातार पूछताछ जारी है। इस कड़ी में जिला मुख्यालय के जासो में भी जांच टीम पहुंची हुई है। जानकारी मिलने के बाद विधायक शंभू के घर के पास उनके समर्थक जुट गए हैं। कार्रवाई की सूचना मिलते ही उनके समर्थक भी उनके आवास पर पहुंचने लगे हैं। बताया जा रहा है कि मामला लैंड फॉर जॉब या आय से अधिक संपत्ति से जुड़ा है। यह भी बताया जा रहा कि चारा घोटाला के समय भी शंभू नाथ यादव ने लालू प्रसाद यादव को काफी मदद पहुंचाई थी। शंभू नाथ सिंह यादव लालू यादव के बहुत ही करीबी माने जाते हैं। अभी कुछ दिन पहले 5 दिसंबर को लालू यादव शंभू के बेटे के तिलक समारोह में शामिल हुए थे। राजद विधायक शंभू नाथ यादव ब्रह्मपुर से पहली बार विधायक बने।

पटना जमुई समेत कई इलाकों में बारिश और ओलावृष्टि का अलर्ट

पटना। समेत बिहार के कई जिलों में अगले दो दिनों तक बारिश और ओलावृष्टि का अलर्ट जारी किया गया है। दक्षिण बिहार के कई इलाकों में रुक-रुककर बारिश हो रही है। मौसम विभाग के अनुसार, अगले दो दिन तक पटना समेत बिहार के अधिकांश जिलों में मध्यम दर्जे की बारिश हो सकती है। पटना, वैशाली, समस्तीपुर, बेगूसराय, जमुई, नवादा और नालंदा समेत कुछ इलाके में ओलावृष्टि के आसार जताए गए हैं। बिहार में बारिश के कारण तापमान में गिरावट आई है। पिछले 24 घंटे में बिहार का सबसे ठंडा जिला किशनगंज रहा है। यहां का पारा गिरकर साढ़े 14 डिग्री तक पहुंची गया है। मौसम विभाग के अनुसार, मार्च से मई तक प्री मानसून का समय रहता है। इस दौरान बारिश, मेघगर्जन, वज्रपात और ओला गिरने आसार हैं। साइक्लोनिक सकुर्लेशन या टर्फ रेखा गुजरने से बंगाल की खाड़ी से नमी मिलने लगी है। इस वजह से मौसम बदलाव हुआ। बिहार के दक्षिणी इलाकों में बादल गरजने और ओले गिरने के आसार हैं। मौसम विभाग ने पटना समेत 20 जिले में अलर्ट जारी किया है। पटना के एयरपोर्ट के पास जोर का धमाका हुआ। धमाके की गूंज खत्म हुई तो लोगों को पता चला कि एयरपोर्ट के पास निमार्णाधीन टैक्सी रनवे पर काम कर रहा एक युवक वज्रपात से बुरी तरह घायल है। उसके नाक-कान से खून निकल रहा था। आननफानन में उसे पटना एम्स में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। घटना के संबंध में हवाई अड्डा थानाध्यक्ष ने बताया कि मृतक पश्चिम बंगाल के रहने वाले थे। वह विशाल कंस्ट्रक्शन कंपनी में सुपरवाइजर के पद पर विगत 15 वर्षों से काम कर रहे थे। थानाध्यक्ष ने बताया कि एयरपोर्ट रनवे से कुछ दूरी पर टैक्सी रनवे का निर्माण कार्य चल रहा है। मंगलवार की दोपहर बारिश होने लगी। गये जिससे वह बुरी तरह घायल हो गए।

खाकी द बिहार चैप्टर के कुख्यात ने खरमास में रचाई शादी

बिहार। खरमास में शादी हुई। मगर, यह शादी अब चर्चा में है। 62 साल के शख्स ने शादी रचाई, इसलिए भी। 17 साल जेल में गुजार चुके अपराधी ने शादी रचाई, इसलिए भी। खाकी... द बिहार चैप्टर- वेब सीरीज के रीयल लाइफ विलेन अशोक महतो ने शादी रचाई, इसलिए भी। और, अब चर्चा की सबसे खास बात यह कि उसकी नई नवेली दुल्हन के मुंगेर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ने की चर्चा है। मुंगेर वही सीट है, जहां से जनता दल यूनाईटेड के पूर्व राष्ट्रीय

अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह का उतरना फाइनल है। दरअसल, नवादा जेल ब्रेक कांड, सांसद राजो सिंह हत्याकांड, शेखुपरा के मणिपुर नरसंहार, नवादा के अपसढ़ नरसंहार और बीडीओ हत्याकांड समेत कई संगीन मामलों के आरोपी अशोक महतो की 10 दिसंबर 2023 को जेल से रिहाई हुई। बताया जा रहा है कि अशोक महतो लोकसभा चुनाव लड़ने की इच्छा लेकर राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद के पास गया था। राजद सुप्रीमो ने चुनाव लड़ने पर मुहर लगा दी। हालांकि, अशोक महतो को डर था कि इतने केस में आरोप होने के कारण नॉमिनेशन रद्द हो सकता है। इसलिए दो दिन के अंदर शादी रचा ली।अशोक महतो ने लखीसराय के सूर्यगढ़ा प्रखंड के बंशीपुर हेमराजपुर निवासी हरि मेहता की पुत्री 46 वर्षीय अनीता से शादी की। वह दिल्ली के एक प्राइवेट कंपनी में काम करती है। चर्चा है कि वह अपनी पत्नी को चुनाव लड़ाने की तैयारी कर रहा। अगर राजद से अशोक महतो को र्तदिलचस्प होगा।

होली मिलन पर आचार संहिता उल्लंघन का केस भोजपुरी एक्ट्रेस चर्चा में चिराग की पार्टी से हैं जुड़ी

बिहार। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) की प्रदेश युवा महासचिव और भोजपुर स्टार अभिनेत्री सीमा सिंह पर प्राथमिकी दर्ज की गई है। यह प्राथमिकी आचार संहिता उल्लंघन करने के मामले में हुई है। शेखपुरा के मिशन थाना में बरबीघा के अंचलाधिकारी गौरव कुमार ने लिखित शिकायत दी थी। मामले में अपर थानेदार दिनकर ने बताया कि लोक जनशक्ति पार्टी की नेत्री पर बरबीघा नगर परिषद क्षेत्र के रामपुर सिन्दाय गांव स्थित अपने आवास पर 17 मार्च की शाम

जिला प्रशासन से अनुमति लिए बगैर विशाल होली मिलन समारोह करने का आरोप लगा है। यह आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन है। डीएम शेखपुरा द्वारा जारी धारा 144 के निषेधाज्ञा का भी उल्लंघन इसे माना गया है। आरोप सही पाए जाने के कारण उनपर प्राथमिकी दर्ज की गई है। बता दें कि पिछले साल अप्रैल माह में भोजपुरी फिल्मों की स्टार सीमा सिंह चिराग पासवान की पार्टी लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) में शामिल हुई थी। उन्हें नई दिल्ली के 71 नॉर्थ एवेन्यू में हुए एक विशेष कार्यक्रम में चिराग पासवान ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की हैं। उस वक्त सीमा सिंह ने कहा था कि बिहार की जनता ने, बिहारी समाज ने इतने सालों तक मुझे बहुत प्यार दिया, सम्मान दिया है। ऐसे में मैं लोगों की सेवा कर उनके प्यार को लौटाना चाहती हूं। मैं लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के 'बिहार फर्स्ट, बिहारी फर्स्ट' के विजन का पूरी तरह से समर्थन करती हूं।

लाइव वीडियो में कहा- कुछ भी करूं तो अगली सुबह माशूका के घर के सामने का नजारा देख पुलिस भी दंग

बिहार। के सीवान में एक युवक का शव संदिग्ध अवस्था में मिला है। युवक की मौत सिर में गोली लगने से हुई है। हालांकि इससे पहले युवक का एक लाइव सामने आया था, जिसमें वह अपने आप को कुछ करने की बात कर रहा था। साथ ही उसने जिला प्रशासन से किसी लड़का-लड़की को उसके मामले में न फंसाने की मांग की थी। अब युवक का शव मिलने के बाद घटना को आत्महत्या माना जाए या हत्या, इसपर अभी सशंय बना हुआ है। घटना को लेकर बताया जा रहा है कि जिले के लक्ष्मीपुर गांव

निवासी साहेब हुसैन का बेटा अखलाक अंसारी बीती रात अपनी रिश्तेदारी में हुसैनगंज थाना क्षेत्र के बिंदवल गांव में गया था। जहां सुबह में उसका शव खून से लथपथ पाया गया। खून से लथपथ शव मिलने की खबर लगते ही मौके पर स्थानीय लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई। उसके बाद इस घटना की सूचना पुलिस को दी गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सीवान सदर अस्पताल भेज दिया है जानकारी के मुताबिक, अखलाक मिया हुसैनगंज में हमेशा अपनी बुआ के घर आता जाता रहता था। बीती रात भी वह अपने बुआ के घर गया था, जहां खाना खाकर घर से निकला था। जब काफी देर तक घर वापस नहीं आया तो घर वाले उसकी खोजबीन में जुट गए। इसी सिलसिले में बुधवार की सुबह नौ बजे के करीब खून से लथपथ उसका शव बिंदवल रसूलपुर गांव में मिला। वहीं, पुलिस को युवक का एक वीडियो भी मिला है, जिसमें वह लाइव आकर यह कह रहा है कि अगर मैं कुछ भी अपने आप को करूंगा तो किसी भी निर्दोष लड़का या लड़की नहीं फंसे। यह प्रशासन से मांग करते हुए उसने एक वीडियो बनाई थी। फिलहाल पुलिस सभी एंगल से मामले की जांच में जुटी हुई है। सीवान में अखलाक मियां का संदिग्ध अवस्था में शव मिलने के बाद पूरे इलाके में सनसनी फैल गई है। से अखलाक मिया का प्रेम प्रसंग था।

बिहार से कश्मीर ले जाकर सारी हदें पार कीं शक होने पर पूछा तो कबूला अपना गुनाह

बिहार। के बेतिया में शादीशुदा होने के बाद भी शादी का झांसा देकर एक युवती को प्रेम जाल में फंसा कर एक युवक द्वारा यौन शोषण करने का मामला सामने आया है। इस मामले को लेकर पीड़ित युवती ने अब थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। घटना बगहा पुलिस जिले के रामनगर थाना क्षेत्र के एक गांव की है। पीड़िता ने पुलिस को आवेदन देकर बताया कि उसकी बहन की शादी पटखौली थाना क्षेत्र के नरवल बरवल में हुई है। उसी गांव के निवासी अकबर अंसारी ने उसे प्रेम जाल में फंसा लिया और बताया कि मेरी शादी नहीं हुई है। मैं तुमसे शादी

करूंगा। तुम मेरे साथ भाग चलो और शादी कर लो। मैं उसके झूठे प्रेम जाल में फंसकर अपने घर-परिवार वालों से छिपकर घर से उसके साथ भाग गई। पीड़िता ने बताया कि वह मुझे कश्मीर ले गया और मुझसे कई दिनों तक मुझे अंधकार में रखकर लगातार यौन शोषण किया। साथ ही मुझे झूठा दिलासा दिलाता रहा। बरगला रहा है। अंसारी को गिरफ्तार कर लिया गया है।

लालू के करीबी राजद विधायक के ठिकाने पर ईडी की छापेमारी

बिहार। इधर, महागठबंधन में सीट बंटवारे को लेकर बातचीत चल रही है। उधर, प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीम बक्सर के ब्रह्मपुर विधानसभा क्षेत्र से राष्ट्रीय जनता दल के विधायक और लालू प्रसाद यादव के करीबी शंभू नाथ यादव के ठिकानों पर छापेमारी कर रही है। पटना से बक्सर पहुंची ईडी की अलग-अलग टीम राजद विधायक ने सात ठिकानों पर पहुंची हैं। बक्सर के सदर, सिमरी, ब्रह्मपुर और चक्की प्रखंड क्षेत्र में विधायक से जुड़े ठिकानों पर छापेमारी चल रही है। इस रेड के बाद राजद खेमे में हड़कंप मचा हुआ है। वहीं राजद नेताओं का कहना है कि केंद्र सरकार जानबूझकर लालू परिवार और राजद नेताओं को परेशान कर

रही है। सूत्रों की मानें तो ईडी के अधिकारियों की टीम ने राजद विधायक शंभू नाथ यादव से जुड़ी संपत्तियों की तलाशी ली। यह तलाशी कथित तौर पर मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में ली जा रही है। सूत्रों जिन स्थानों की तलाशी ली जा रही है उनमें ब्रह्मपुर के चक्की इलाके में उनका आवास भी शामिल है।इधर, राजद का कहना है कि भाजपा इससे डरती है और तलाशी उसी का नतीजा है। पार्टी प्रवक्ता मृत्युंजय तिवारी ने आरोप लगाया, ₹भाजपा राजद नेताओं करती है।

देर रात लालू-तेजस्वी से मिले

बिहार। 2024 लोकसभा चुनाव के तारीखों के ऐलान के बाद बिहार हलचल बढ़ गई है। छोटी पार्टियों के नेता जगह तलाशने लगे हैं। जाप (जन अधिकार) सुप्रीमो पप्पू यादव ने मंगलवार की शाम राजद सुप्रीमो लालू यादव और तेजस्वी यादव से राबड़ी आवास जाकर मुलाकात की है। इस मुलाकात के बाद पप्पू यादव की पार्टी की विलय करने की चचाएं तेज हो गई हैं। अब ये विलय राजद के साथ होगा या कांग्रेस के साथ ये अभी साफ नहीं हुआ है। हालींकि कुछ दिन पहले पूर्णिया की रैली में उन्होंने कहा था कि कांग्रेस उन्हें पूर्णिया से टिकट देती है तो वे अपनी पार्टी का विलय कांग्रेस में कर सकते हैं। लालू और तेजस्वी से मुलाकात के बाद पप्पू

यादव ने सोशल मीडिया पर तस्वीर पोस्ट करते हुए लिखा- आज अभिभावक पितातुल्य आदरणीय लालू जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष भाई तेजस्वी जी के साथ पारिवारिक माहौल में मुलाकात! मिलकर बिहार में इखढ को जीरो पर आउट करने की रणनीति पर चर्चा हुई। बिहार में क्कउक्कअ गठबंधन की मजबूती, सीमांचल, कोसी, मिथिलांचल में 100% सफलता लक्ष्य है। लालू से मुलाकात के बाद पप्पू यादव दिल्ली के लिए रवाना हो गए हैं। दिल्ली जाने से पहले एयरपोर्ट पर उन्होंने कहा कि वह हमेशा से एक हैं। लालू यादव के दिल से ना वह कभी बाहर हुए ना उनके दिल से कभी लालू यादव बाहर हुए हैं। कांग्रेस से डील की चर्चा पर पप्पू यादव ने कहा कि कोसी और सीमांचल खासकर पूर्णिया उनकी लाइफ लाइन है। बीजेपी पूर्णिया और सीमांचल के आइडेंटिटी पर ही हमला कर रही है। इसे रोकने के लिए हम पूरी ताकत से जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि मेरे लिए चुनाव कोई मैटर ही नहीं करता है। मेरा लक्ष्य बीजेपी को रोकना है। पिछले 17 महीने में तेजस्वी जी ने जो विश्वास हासिल किया है, इसे ध्यान में रखते हुए हमें 24 और 25 में भी साथ रहना है। दरअसल, पिछले दिनों पप्पू यादव प्रणाम पूर्णिया रैली निकाल रहे थे। इस दौरान उन्होंने यह कहा था कि अगर कांग्रेस उनको पूर्णिया से सीट देती है तो वह अपनी पार्टी का कांग्रेस में विलय कर देंगे। कांग्रेस पप्पू यादव को पूर्णिया से लोकसभा चुनाव 2024 का उम्मीदवार बनाने के लिए लगभग तैयार हो गई है। पप्पू यादव कांग्रेस के टिकट से पूर्णिया से लोकसभा चुनाव लड़ सकते हैं। दरअसल, पिछले दिनों पप्पू यादव प्रणाम पूर्णिया रैली निकाल रहे थे। इस दौरान उन्होंने यह कहा था कि अगर कांग्रेस उनको पूर्णिया से सीट देती है तो वह अपनी पार्टी का कांग्रेस में विलय कर देंगे। कांग्रेस पप्पू यादव को पूर्णिया से लोकसभा चुनाव 2024 का उम्मीदवार बनाने के लिए लगभग तैयार हो गई है। पप्पू यादव कांग्रेस के टिकट से पूर्णिया से लोकसभा चुनाव लड़ सकते हैं। पप्पू यादव एक बार विधायक और 5 बार सांसद रहे हैं। वो पहले राजद में थे, लेकिन 2015 में उन्होंने जन अधिकार नाम से अपनी पार्टी बना ली। चर्चा है कि पप्पू यादव मधेपुरा सीट से विधानसभा चुनाव लड़ सकते हैं। पप्पू ने 2019 में मधेपुरा से लोकसभा चुनाव भी लड़ा था, लेकिन हार गए थे। पप्पू यादव ने 2019 के लोकसभा चुनाव के वक्त जो एफिडेविट दाखिल किया था, उसमें उन्होंने अपने ऊपर 31 क्रिमिनल केस होने की बात मानी थी। इनमें से 9 केस में चार्जशीट दाखिल हो चुकी है। । चुकी है।

महादेव सेतु के दोनों ओर ट्रेफिक जाम के दृष्टिगत मण्डलायुक्त एवं

पुलिस महानिरीक्षक, बरेली परिक्षेत्र ने किया स्थलीय निरीक्षण

मार्ग पर आवांछित बिजली के पोल हटाये जाने एवं ट्रांसफार्मर शिफ्ट किये जाने के दिये निर्देश

बरेली। मण्डलायुक्त, बरेली मण्डल एवं पुलिस महानिरीक्षक, बरेली परिक्षेत्र, नगर आयुक्त, नगर निगम, बरेली, पुलिस अधीक्षक (यातायात), बरेली, मुख्य अभियंता, लोक निर्माण विभाग, बरेली मण्डल, क्षेत्रीय प्रबंधक परिवहन निगम, बरेली एवं सहायक अभियन्ता (प्रथम), बरेली स्मार्ट सिटी लि0, बरेली द्वारा बरेली स्मार्ट सिटी के अन्तर्गत बने महादेव सेतु पर यातायात को सुगम बनाने हेतु स्थलीय निरीक्षण किया गया, जिसमें निर्देशित किया गया कि कोतवाली से नवल्टी चौराहे तक कोतवाली की बाउण्ड्री के किनारे जो भी बिजली के पोल लगे है व जो रोडबेस मोड के पास लगे पोल को मुख्य मार्ग से कुछ स्थान छोड़कर स्थापित कर दिया जाये एवं पोल के स्थान पर आवागमन सुनिश्चित करने हेतु यथोचित कार्यवाही की जाये। नवल्टी चौक पर मूकबधिर विद्यालय से मजार तक बाये मोड़ का चौड़ीकरण करते हुए मार्ग को वाहनो के आवागमन हेतु तैयार किया जाये जिससे इस तरफ आने वाले वाहनों को बायी ओर मुड़ने के लिए किसी कठिनाई का सामना न करने पड़े। नवल्टी चौक पर पुरी पैथोलॉजी के सामने एवं दूसरी तरफ जितने भी बिजली के पोल आ रहे है उनको रोड से पीछे ले जाकर बिल्डिंग लाइन से उचित दूरी रखते हुए पुनः स्थापित करने के निर्देश भी दिये गये। कोहाड़ापीर साइड पर पुल से उतरते ही दायी ओर विद्युत ट्रांस्फार्मर एवं विद्युत पोल लगे हैं जिससे फ्लाईओवर की सर्विसलेन पर जाने में अवरोध उत्पन्न हो रहा है। विद्युत ट्रांस्फार्मर एवं विद्युत पोल को अन्य स्थान पर स्थापित करने के निर्देश दिये गये। मण्डलायुक्त एवं पुलिस महानिरीक्षक द्वारा कलम दवात वाला तिराहा जो तिकोने आकार में बना हुआ है उसको मूर्ति से यथोचित जगह छोड़ते हुए गोलाकार करते हुए शेष भाग को यातायात हेतु मुक्त करने एवं सेतु के अन्त से तिराहे तक डिवाइडर बनाये जाने एवं वहां पर स्थापित आई0सी0सी0सी0 के जंक्शन बॉक्स को डिवाइडर के ऊपर पुनः स्थापित करने के निर्देश दिये गये। कोहाड़ापीर से नैनीताल रोड की तरफ रोड के दोनों साइड उपर्युक्त जगह लेते हुए सड़कों का चौड़ीकरण कर दिया जाये। दाहिनी ओर जितनी जगह मिल रही है वहां तक चौड़ीकरण कर दिया जाये तथा रोड पर जितने भी पोल आ रहे है उसे नाले की तरफ शिफ्ट कर दिया जाये एवं बायीं ओर जहां 6 मी0 जगह अतिरिक्त है वहां पर 5.5 मी0 रोड़ बनाते हुए 0.5 मी0 चौड़ा नाला बना दिया जाये ताकि बानखाने से आने वाला यातायात को नैनीताल रोड पर लाते हुए स्टेट बैंक के नाले की पुलिया के दायी ओर से होते हुए पीलीभीत रोड पर आ जाये, न की यू-टर्न के लिए फ्लाईओवर के अन्तिम बिन्दु पर आये और जाम लगे। इसके अतिरिक्त नैनीताल रोड से आने वाले वाहनों को बंसत टाकिज रोड से होते हुए धर्मकांटा चौराहें से सेतु की ओर जाने हेतु उचित व्यवस्था की जाये। फ्लाईओवर से ऊतरने के बाद कोहाड़ापीर पर दायीं ओर जो पीलीभीत रोड है जितनी जगह मिल रही है वहां तक चौड़ीकरण कर दिया जाये। नैनीताल रोड की तरफ आगे बढ़ते हुए जहां नाला पड़ता है उसके बगल में सीमेन्ट कॉन्क्रीट की सड़क जा रही है उस नाले को ढकते हुए किनारे पर लगे हुए ट्रांस्फार्मर को बीच में करते हुए सीमेन्ट कॉन्क्रीट की सड़क को खोल दिया जाये ताकि हल्का यातायात उस सड़क से पीलीभीत रोड से होते हुए कोहाड़ापीर पहुंच जाये। मण्डलायुक्त एवं पुलिस महानिरीक्षक द्वारा निर्देशित किया गया कि पुराने बस स्टैण्ड से निकलने वाली समस्त बसों हेतु वन-वे मार्ग निर्धारित किया जाये, रोडवेज से जाने वाली बसें नवल्टी चौराहें से पटेल चौक होते हुए अपने गंतव्य को जायेगी तथा आने हेतु पटेल चौक से नगर निगम कार्यालय होते हुए रोडवेज बस स्टैण्ड को जायेंगी।

संक्षिप्त डायरी

लापरवाह एफ.एस.टी. मजिस्ट्रेट पर हुई कार्यवाही

जिला निर्वाचन अधिकारी, बरेली ने निर्वाचन आयोग के निदेर्शों पर लापरवाही बरतने वाले अधिकारी पर करायी एफ.आई.आर भारत निर्वाचन आयोग के निदेर्शों के क्रम में जनपद बरेली में 84 उड़नदस्ता टीम एवं 84 स्थायी निगरानी टीम को क्षेत्रवार आदर्श आचार संहिता के अनुपालन कराने की जिम्मेदारी दी गयी है। मा0 आयोग द्वारा विकसित ऐप पर कोई भी व्यक्ति आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन से सम्बन्धित शिकायत कर सकता है। ऐप पर प्राप्त ऐसी शिकायतों/समस्याओं का उड़नदस्ता टीम द्वारा मौके का भ्रमण कर त्वरित रूप से निराकरण कराना होता है। मौके पर निराकरण के बाद टीम के मजिस्ट्रेट ऐप में रिपोर्ट लगाना होता है, जिससे मा. आयोग को पता चल सके कि लोगों द्वारा चुनाव संबंधी शिकायत का सही तरीके से निस्तारण ज़िले में हो रहा है, जिससे कि चुनाव निष्पक्ष और शांतिपूर्ण तरीके से हो सके । ऐप में ऐसी व्यवस्था दी गई है कि ऐसा एफएसटी मजिस्ट्रेट का रिपोर्ट केवल वो स्वयं अपने लॉग-इन से लगा सकते हैं और अन्य कोई वरिष्ठ अधिकारी अलग लॉग-इन से सी-विजिल ऐप पर रिपोर्ट नहीं लगा सकता है । विवेक वर्मा, उप दुग्धशाला विकास अधिकारी, बरेली को एक उड़नदस्ता टीम के मजिस्ट्रेट के रूप में ज़िला निर्वाचन अधिकारी बरेली के लिखित आदेश से नियुक्त किया गया था । जिसकी लिखित सूचना इन्हें दी गई थी। इसके बाद इन्हें अन्य उड़नदस्ता टीम के साथ तीन बार अलग अलग दिन प्रशिक्षण दिलाया गया परन्तु इसके बावजूद इनके द्वारा घोर लापरवाही बरती गयी और किसी भी निर्देश एवं प्रशिक्षण को गम्भीरता से नहीं लिया गया। तीन बार ट्रेनिंग देने के वाबजूद इनके लापरवाह रवैया, ट्रेनिंग में रुचि नहीं लेने, ट्रेनिंग के दौरान अपने मोबाइल में सोशल मीडिया, वॉटसएप आदि में व्यस्त रहने के कारण ये से-विजिल से संबंधित अपने कार्यों को नहीं सीख सके। जिससे सी-विजिल पर यदि कोई शिकायतकर्ता चुनाव आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन संबंधी शिकायत करता है, तो प्रथम रेसपोंडर के रूप में एफएसटी मजिस्ट्रेट के रूप में न तो ये अपनी ज़िम्मेवारी के रूप में मौके पर जाकर शिकायत का निस्तारण कर पाते हैं और न ही ऐप पर रिपोर्ट दर्ज कर पाते हैं । जिससे आचार संहिता के पर प्रभावी कार्यवाही नहीं हो पाती है और एक तरफ जहां चुनाव आयोग की नाराजगी की संभावना बढ़ती है, वहीं दूसरी तरफ चुनाव में शांति-भंग होने की संभावना बढ़ेगी और ज़िला प्रशासन द्वारा की गई तैयारियों के बावजूद इनकी लापरवाही के कारण चुनाव प्रभावित हो जायेगा । विवेक वर्मा, उप दुग्धशाला विकास अधिकारी, बरेली प्रशिक्षण के दौरान मोबाइल पर अन्य कार्यों में व्यस्त रहना पकड़े गये और सवाल-जवाब पूछे जाने पर किसी प्रकार का कोई उत्तर न दे सके। इनकी लापरवाही के कारण ऐप पर प्राप्त शिकायतों के निस्तारण में अक्षम होने के कारण आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन होने पर प्रभावी कार्यवाही नहीं हो पा रहा है, जिससे साथ ही जिला प्रशासन की छवि भी धूमिल होने की संभावना बढ़ रही है । इस प्रकार निर्वाचन आयोग के आदेशों की अवहेलना, लापरवाही एवं शिथिलता बरतने के कारण जिला निर्वाचन अधिकारी, बरेली के निर्देश पर ट्रेनिंग टीम द्वारा उक्त ऋर.ळ. मजिस्ट्रेट श्री विवेक वर्मा के विरूद्ध लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम-1951 की धारा-134 तथा आई.पी.सी.-1860 की धारा 188 के अन्तर्गत एफ.आई.आर. संख्या-0042 थाना विशारतगंज में दर्ज करायी गयी है। साथ ही अन्य सभी को भी चेताया गया है कि भविष्य में चुनाव के सम्बन्ध में लापरवाही बरतने पर कड़ी कार्यवाही की जाएगी।

अमरोहा में होली को लेकर एसपी ने दिए सख्त निर्देश, भाईचारे के साथ त्योहार मनाने की अपील

अमरोहा। अमरोहा पुलिस आगामी त्योहारों को लेकर कतई लापरवाही बरतने के मूड में नहीं है। यही वजह है कि अमरोहा पुलिस लगातार संवेदनशील इलाकों में गश्त करने के साथ-साथ सभी समुदाय के धर्म गुरुओं और संभ्रांत लोगों से संवाद कर रही है। एसपी भी लगातार पुलिस अधिकारियों के साथ बैठककर आवश्यक दिशा निर्देश दे रहे हैं। अब एसपी ने डीजे संचालकों को हिदायत देते हुए कहा कि होली के त्योहार पर कोई भी ऐसा गाना न बजाएं जिससे विवाद की स्थिति उत्पन्न हो। साथ ही हिदायत दी है कि लापरवाही अगर सामने आती है तो मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही अमल में लाई जाएगी। दरअसल पुलिस अधिकारियों के साफ-साफ निर्देश है कि इस समय लोकसभा चुनाव को लेकर आचार संहिता लगी हुई है। किसी भी कीमत पर माहौल नहीं बिगड़ना चाहिए। कोई भी डीजे संचालक या कार्यक्रम आयोजक आपत्तिजनक, भड़काऊ और अश्लील गीत-संगीत नहीं बजाएगा। अगर कानून व्यवस्था बिगड़ी तो संबंधित के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। पुलिस अधीक्षक कुंवर अनुपम सिंह ने बताया कि होली के मौके पर डीजे पर अश्लील या किसी राजनीतिक पार्टी के गाने नहीं बजेंगे। डीजे बजाने वाले शर्तों के अनुसार ही डीजे बजाएंगे। कोई भी व्यक्ति हथियार का प्रदर्शन नहीं करेगा। इस दौरान डीजे और अन्य कार्यक्रमों की निगरानी में पुलिस मित्र लगाए गए हैं। भाईचारे से त्योहार मनाने की अपील होली पर्व शांति एवं सौहार्द पूर्ण ढंग से होना चाहिए। हर क्षेत्र में पुलिस मित्र लगाए जाएंगे जो डीजे के साथ ही अन्य कार्यक्रमों की निगरानी करेंगे। हुड़दंगियों पर पैनी नजर रखी जाएगी। हुडदंग काटने वालों से इस बार सख्ती से निपटा जाएगा। इसके साथ ही एसपी ने आपसी भाईचारे के साथ आगामी त्योहार को मनाने की अपील की है।

नौकरी पाकर खिले युवाओ के चहेरे, आगामी चार अप्रैल से होगी सभी चयनित छात्र-छात्राओ की ज्वाईनिंग।

अमरोहा। जनपद अमरोहा के राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास स्थित श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय/संस्थान में देश की प्रतिष्ठित ऑटोमोबाईल कम्पनी जे.एफ. रैने लिमिटेड द्वारा कैम्पस प्लेसमेन्ट ड्राईव-2024 का आयोजन किया गया, जिसमें गजरौला एवं मेरठ परिसर के 400 से अधिक छात्र-छात्राओ ने प्रतिभाग किया। तीन राउण्ड के कठिन साक्षात्कार के बाद कम्पनी ने 88 छात्र-छात्राओ को जॉब के लिए चयनित कर संस्थान प्रबन्धन के साथ मिलकर उनको ऑफर लेटर प्रदान किये। वेंकटेश्वरा समूह संस्थापक अध्यक्ष डॉ. सुधीर गिरि, प्रतिकुलाधिपति डॉ. राजीव त्यागी एवं संस्थापक अध्यक्ष के प्रधान सलाहकार प्रो. वी.पी.एस. अरोड़ा ने चयनित छात्र-छात्राओ को शुभकामनाऐं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। संस्थापक अध्यक्ष डॉ. सुधीर गिरि ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं कौशल विकास के द्वारा वेंकटेश्वरा के छात्र-छात्राऐ देश-विदेश में सफलता का परचम लहरा रहे है। हम अपने यहां अध्यनरत छात्र-छात्राओ को शानदार, सुरक्षित एवं स्थायी कैरियर देने के लिए दृढसंकल्पित है। वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय/संस्थान के डॉ. सी.वी. रमन सभागार में कैम्पस प्लेसमेन्ट ड्राईव-2024 का शुभारम्भ संस्थापक अध्यक्ष डॉ. सुधीर गिरि, प्रतिकुलाधिपति डॉ. राजीव त्यागी, प्रधान सलाहकार डॉ. वी.पी.एस. अरोड़ा, कुलपति डॉ. ए.के. शुक्ला, जे.एफ. रैने लिमिटेड के एच.आर. प्रबन्धक श्री प्रताप सिंह, ट्रेनिंग एण्ड प्लेसमेन्ट निदेशक डॉ. लक्ष्मण सिंह रावत आदि ने सरस्वती माँ के सन्मुख दीप प्रज्जवलित करके किया। अपने सम्बोधन में संस्थापक अध्यक्ष डॉ. सुधीर गिरि ने कहा कि वैश्विक मंदी एवं कोरोना महामारी के बाद भी देश के ह्लस्किल्ड युवाओह्लह्ल विशेष रूप से इंजीनियरिंग सेक्टर में ढेरो रोजगार सम्भावनाएं है। आदरणीय प्रधानमंत्री जी के ह्लस्किल इण्डिया-डिजीटल इण्डियाह्लह्ल जैसी कल्याणकारी शानदार योजनाओ से प्रेरणा लेकर देश निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है। हम अपने यहाँ अध्ययनरत सभी छात्र-छात्राओ को एक सुरक्षित कैरियर देने के लिए प्रतिबद्ध है। हमारे इंजीनियरिंग एवं बी.टेक. (ऑटोमोबाइल) के छात्र-छात्राऐ देश विदेश मे उच्च पदो पर कार्यरत है। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. पीयूष पाण्डेय, डॉ. राजेश सिंह, डॉ. दिव्या गिरधर, इन्जीनियरिंग डीन डॉ. आशुतोष सिंह, डॉ. अनिल जयसवाल, सलाहकार आर.एस. शर्मा, मारूफ चौधरी, मेरठ परिसर से डा. प्रताप सिंह, अरूण गोस्वामी, एस.एस. बघेल, डॉ. विवेक सचान, मीडिया प्रभारी विश्वास राणा आदि लोग उपस्थित रहे।

नूरपुर विधानसभा क्षेत्र में पूर्व जज मनोज कुमार का हुआ स्वागत।

नूरपुर। नगीना लोकसभा क्षेत्र से सपा इंडिया गठबंधन प्रत्याशी पूर्व जज मनोज कुमार का नगीना लोकसभा क्षेत्र की नूरपुर विधानसभा क्षेत्र के ग्राम सेह,मालवा,केमडी,बैर, लोधीपुरा मिलक, चांदीपुर, आदि गांव में पहुंचने पर ग्राम वासियों द्वारा इंडिया गठबंधन प्रत्याशी पूर्व जज मनोज कुमार का फूल मालाएं डालकर जोरदार स्वागत किया। इस मौके पर गठबंधन प्रत्याशी पूर्व जज मनोज कुमार ने संविधान को लेकर अपनी वार्ता राखी।इस मौके पर शमशाद सैफी एडवोकेट, जावेद अख्तर जिला सचिव, नसीम अहमद नूरपुर विधानसभा अध्यक्ष, कादीम अहमद, महावीर सिंह यादव, राजेश कुमार, एडवोकेट सानू, मुकेश कुमार, रोहित कुमार ,जावेद अख्तर ,कल्याण सिंह, पुष्पेंद्र कुमार ,सतपाल सिंह जिला कोषाध्यक्ष अध्यक्ष ,राजेश सिंह, महावीर सिंह ,विनोद कुमार, भूपेंद्र सिंह ,नाजिम अहमद, राशिद हुसैन, गोपाल सिंह ,नीरज कुमार, चमन सिंह, रोहिताश सिंह, समर सिंह ,आरिफ अहमद, आदि ग्रामवासी उपस्थित रहे।

रोटरी क्लब द्वारा होली महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

अमरोहा। जनपद अमरोहा में आर्य समाज अमरोहा में रोटरी क्लब द्वारा होली महोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। होली कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रोटरी क्लब डिस्ट्रिक्ट 3100 के गवर्नर रो0 अशोक गुप्ता थे, उनके साथ जनरल सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट राम बाबू भी उपस्थित थे। क्लब अध्यक्ष रो0 डॉ0 जी0 पी0 सिंह ने बताया कि रोटरी क्लब द्वारा आयोजित होली मिलन कार्यक्रम में बच्चों और महिलाओं द्वारा रंगा रंग कार्यक्रम आयोजित किये गए जिनमे सबने बच्चों के डांस, कपल डांस, होली गीत, होउसी, सरप्राइज गेम का खूब आनद लिया। होली गीतों पर जमकर थिरके रोटेरियन्स और महिलाएं। बच्चों ने भी खूब मस्ती की। तथा बाद में स्वादिष्ट और लजीज भोजन का भी लुत्फ लिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि रोटरी क्लब डिस्ट्रिक्ट 3100 के गवर्नर रो0 अशोक गुप्ता ने कहा कि बहुत जल्दी ही होली आने वाली है खुशियों और रंगों का त्योहार है। हम सभी को मिलजुल कर हर त्योहार मनाने चाहिए। होली हमें भाईचारे से रहना और मिलना सिखाता है। हम सब को मिलजुल कर रहना चाहिए और एक दूसरे के दुख दर्द में हमेशा सहयोग करना चाहिए। रोटरी हमे यही सिखाती है। रोटरी गवर्नर अशोक गुप्ता ने रोटरी क्लब अमरोहा द्वारा सेवाभाव और चिकित्सा के क्षेत्र में निशुल्क कैम्प लगा कर लोगो की सेवा करने, क्लब में और भी बेहतर कार्य करने को क्लब अध्यक्ष रो0 डॉ0 जी0 पी0 सिंह और सचिव रो0 डॉ0 सरल राघव को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित भी किया। विशेष - इस अवसर पर सभी रोटेरियन्स और एनिस ने आने वाले लोक सभा चुनाव में शत प्रतिशत वोट करने और कराने की भी प्रतिज्ञा ली। और यह भी प्रण किया किया मतदान वाले दिन सबसे पहले मतदान करेंगे और दूसरों को भी वोट डालने के लिए प्रेरित करेंगे। रोटरी क्लब अमरोहा के सभी सदस्य इस बात का भी व्यापक प्रचार प्रसार करेंगे कि कोई भी उस दिन वोट करने से न छूटे। रोटरी क्लब के सदस्यों द्वारा पूरे शहर में मतदाता जागरूकता को विशेष अभियान चलाया जाएगा। इस अवसर पर क्लब सचिव डॉ0 सरल राघव, अमित मोहन गोयल, विशाल गोयल, कुंवर विनीत अग्रवाल, अजय चतुवेर्दी, अभय आर्य, रवि माहेश्वरी, आशीष गोयल, विनोद कुमार सक्सेना, बी डी त्यागी, आकाश शर्मा, संजय मालीवाल, चरणजीत सिंह, मनोज अग्रवाल, मुकेश अग्रवाल, जितेंद्र सिंह, अर्पित खंडेलवाल, लव माहेश्वरी, कुश माहेश्वरी, अक्षत अग्रवाल, शरद चांदना, शिवेन शर्मा, मनीष माहेश्वरी, मीना सिंह, वीनू राघव, रूबी गोयल, शशि चतुवेर्दी, मेघा माहेश्वरी, पूजा छाबड़ा, नितिन तोमर, रजत माहेश्वरी, कमल अग्रवाल आदि रोटेरिसन उपस्थित थे।

अमरोहा में ट्रेन के आगे कूदा फैक्ट्री कर्मी, मौत

अमरोहा अमरोहा के गजरौला में दिल्ली - लखनऊ रेल लाइन पर आज शाम एक फैक्ट्री कर्मी युवक ने ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली। हालांकि स्टेशन पर खड़े कुछ लोगों ने युवक को तमाम आवाजें लगाई, लेकिन युवक ने किसी की न सुनी। जिसके बाद दिल्ली से आई जनसाधारण एक्सप्रेस की चपेट में आने से उसकी मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। घटना के बाद मौके पर पहुंची जीआरपी ने शव को कब्जे में ले लिया। साथ ही शव को पीएम के लिए भेज दिया। मुरादाबाद जा रही जनसाधारण एक्सप्रेस के आगे लगाई छलांग मिली जानकारी के मुताबिक गजरौला के मौहल्ला नाईपुरा, फ्रेंड्स कालोनी में अश्विनी भारद्वाज का परिवार रहता है। अश्विनी भारद्वाज नगर की हाइवे स्थित एक एग्रीकल्चर फैक्ट्री में एचआर के पद पर कार्यरत है। जबकि उनका बेटा अखिल भारद्वाज भी इसी फैक्ट्री में कर्मचारी है। मंगलवार शाम करीब चार बजे अखिल भारद्वाज ने गजरौला रेलवे स्टेशन के पास दिल्ली - लखनऊ रेल लाइन पर ट्रेन के आगे कूदकर सुसाइड कर लिया। सुसाइड की वजह घरेलू विवाद बताई जा रही है।

कमिश्नर, IG, अधिकारियो के साथ ट्रैफिक जाम का ढूंढने निकले इलाज

बरेली । 110 करोड़ की लागत से बने महादेव ओवरब्रिज को शहर की लाइफ लाइन साबित होने का दावा किया जा रहा था। महादेव पुल भी लोगों को जाम से निजात नहीं दिया सका। दरअसल, कुतुबखाना इलाका कई सालों से जाम की स्थित से जूझ रहा है, यहां सबसे बड़ी दिक्कत जिला अस्पताल पहुंचने वाले मरीजों की एंबुलेंस भी जाम का शिकार हो जाती थीं। वहीं इस इलाके को जाम से निजात दिलाने के बाद पिछले एक साल से अधिक समय से बन रहे ओवरब्रिज का विगत 13 मार्च को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लोकार्पण किया था।

मंगलवार को कमिश्नर सौम्या अग्रवाल, आईजी डॉ राकेश सिंह, एसपी ट्रैफिक शिवराज, एसपी क्राइम राहुल भाटी और नगर आयुक्त निधि गुप्ता वत्स समेत अन्य अधिकारियों की टीम नॉवल्टी चौराहा पहुंची और स्थिति का जायजा लिया। इस दौरान कमिश्नर सौम्या अग्रवाल ने बताया नावल्टी चौराहा से लेकर महादेव ओवरब्रिज तक जायजा लिया है। जिसमें सड़क को चौड़ा करने का विचार किया जा रहा है। इसके साथ ही मौके से अतिक्रमण को हटवाया जाएगा। वहीं फुटपाथ पर लगी स्ट्रीट लाइट और बिजली के पोल को भी हटाया जाएगा। कमिश्नर ने कहा कि नॉवल्टी चौराहा पर जल्द ही कार्य शुरू कर जनता को जाम से निजात दिलाई जाएगी।

संतों, पुजारी व पुरोहितों की सेवा करेगी योगी सरकार, बनाया जाएगा कल्याण बोर्ड

भाजपा के लोक कल्याण संकल्प पत्र में किए गए वादे के तहत बुजुर्ग संतो पुजारी, पुरोहितों के कल्याण के लिए प्रदेश में कल्याण बोर्ड का गठन किया जाएगा। साथ ही उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस की तर्ज पर प्रदेश के प्रत्येक जिले का स्थापना दिवस और महोत्सव मनाया जाएगा। प्रत्येक शहर एवं गांव में पारस्परिक एकता और सौहार्द को बढ़ाने के लिए महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। ताकि सामाजिक व सांस्कृतिक विरासत को सुधार किया जा सके। श्रद्धालुओं व पर्यटकों की सुविधा के लिए ऑनलाइन एकीकृत मंदिर सूचना प्रणाली विकसित की जाएगा ! पुजारी कल्याण बोर्ड: उत्तर प्रदेश में भाजपा की दोबारा सरकार बनने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ काफी सक्रिय नजर आ रहे हैं। उत्तर प्रदेश की व्यवस्था को बेहतर करने के लिए लगातार बड़े फैसले लिए जा रहे हैं। एक कदम आगे बढ़ते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश के बुजुर्ग संतों, पुजारियों व पुरोहितों के कल्याण के लिए कल्याण बोर्ड के गठन का फैसला लिया है। इसी के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जिम्मेदार अधिकारियों को को पर्यटन क्षेत्र में बेहतर विकास करने व उत्तर प्रदेश के पर्यटन को बढ़ावा देने के निर्देश दिए हैं। भाजपा संकल्प पत्र को पूरा करने के प्रयास पुजारी कल्याण बोर्ड : भाजपा के लोक कल्याण संकल्प पत्र में किए गए वादे के तहत बुजुर्ग संतो पुजारी, पुरोहितों के कल्याण के लिए प्रदेश में कल्याण बोर्ड का गठन किया जाएगा। साथ ही उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस की तर्ज पर प्रदेश के प्रत्येक जिले का स्थापना दिवस और महोत्सव मनाया जाएगा। प्रत्येक शहर एवं गांव में पारस्परिक एकता और सौहार्द को बढ़ाने के लिए महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। ताकि सामाजिक व सांस्कृतिक विरासत को सुधार किया जा सके। श्रद्धालुओं व पर्यटकों की सुविधा के लिए ऑनलाइन एकीकृत मंदिर सूचना प्रणाली विकसित की जाएगी।

संघ चाहता है रामराज्य और कांग्रेस दे रही हिन्दू धर्म की शक्ति को चुनौती

देश में घटे इस संयोग को देखिए। अभी हाल ही में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा नागपुर में सम्पन्न हुई। जब यह अपनी पूर्णता को प्राप्त कर रही थी, उसी समय मुंबई के शिवाजी पार्क में एक घटना घट रही थी, यहां कांग्रेस के मुखियाओं में से एक राहुल गांधी मंच से बोल रहे थे "हम न बीजेपी और न ही एक व्यक्ति के खिलाफ लड़ रहे हैं। एक व्यक्ति को चेहरा बनाकर ऊपर कर रखा है। हिंदू धर्म में एक शब्द शक्ति होता है। हम शक्ति से लड़ रहे हैं।" राहुल गांधी के बाद जब कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे बोलने खड़े हुए तो वे भी अपने अंदर के सच को बाहर निकलने से नहीं रोक पाए । उन्होंने भाजपा के पास आरएसएस की शक्ति और उसकी विचारधारा के होने का आरोप लगाया और कहा कि इस आइडियोलॉजी को हमें समाप्त कर देना है। कुल मिलाकर, पहले राहुल गांधी घोषणा करते हैं कि उनकी लड़ाई हिन्दू धर्म की शक्ति से हैं । वे उस शक्ति को समाप्त कर देना चाहते हैं। वहीं उनकी पार्टी के अध्यक्ष एक कदम ओर आगे बढ़ जाते हैं, जिसका निष्कर्ष है, भारत भर से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा को मिटा देना है। क्योंकि उनकी लड़ाई इसी आइडियोलॉजी से है। देखा जाए तो राहुल और खड़गे दोनों एक ही बात अपने-अपने तरीके से कह रहे हैं । दोनों के लक्ष्य स्पष्ट हैं। उद्देश्य यही है कि संघ की विचारधारा जोकि सनातन धर्म के जयघोष की आइडियोलॉजी है। विश्व बन्धुत्व और सभी के सुखी रहने की कामना की है। लोककल्याण के लिए रामराज्य की स्थापना की है। कांग्रेस उस विचारधारा को संपूर्ण भारत से समाप्त कर देना चाहती है। यह भी एक संयोग ही है कि जब राहुल और खड़गे इस तरह से संघ विचार और हिन्दू धर्म की शक्ति को समाप्त करने की बात कह रहे थे, उसी समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा बैठक की पूणार्हुति हो रही थी। इस बैठक में जो विचार हुआ, उसकी एक झलक इस बैठक मे आए प्रस्ताव " श्रीराममंदिर से राष्ट्रीय पुनरुत्थान की ओर " में देखी जा सकती है। इस प्रस्ताव में कहा गया " श्री अयोध्याधाम में प्राणप्रतिष्ठा...इस बात की द्योतक है कि श्रीराम के आदर्शों के अनुरूप समरस, सुगठित राष्ट्रजीवन खड़ा करने का वातावरण बन गया है। यह भारत के पुनरुत्थान के गौरवशाली अध्याय के प्रारंभ का संकेत भी है।...मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन हमें सामाजिक दायित्वों के प्रति प्रतिबद्ध रहते हुए समाज व राष्ट्र के लिए त्याग करने की प्रेरणा देता है। उनकी शासन पद्धति ह्लरामराज्यह्व के नाम से विश्व इतिहास में प्रतिष्ठित हुई, जिसके आदर्श सार्वभौमिक व सार्वकालिक हैं।...श्रीराम के जीवन मे परिलक्षित त्याग, प्रेम, न्याय, शौर्य, सद्भाव एवं निष्पक्षता आदि धर्म के शाश्वत मूल्यों को आज समाज में पुनः प्रतिष्ठित करना आवश्यक है।" फिर इसमें आगे कहा गया कि " सभी प्रकार के परस्पर वैमनस्य और भेदों को समाप्त कर समरसता से युक्त पुरुषार्थी समाज का निर्माण करना ही श्रीराम की वास्तविक आराधना होगी। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा समस्त भारतीयों का आवाहन करती है कि बंधुत्व भाव से युक्त, कर्तव्यनिष्ठ, मूल्याधारित और सामाजिक न्याय की सुनिश्चितता करनेवाले समर्थ भारत का निर्माण करें।" इस संपूर्ण प्रस्ताव का जो निष्कर्ष निकलता है, वह है भारत में सभी वर्ग, समुदायों, मत, पंथ, विचारधाराओं के बीच के परस्पर वैमनस्य और भेदों को समाप्त करते हुए समरसता से युक्त पुरुषार्थी समाज खड़ा कर देना। ताकि भविष्य का भारत, श्रीराम के आदर्श को स्थापित करते हुए विश्व कल्याण को धरातल पर उतार पाए। अब आप ही बताए, इसमें क्या अनुचित कामना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा की जा रही है ? जो इस संपूर्ण संगठन को मिटाने के लिए राहुल गांधी, उनकी पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे समेत उन जैसे तमाम नेता आज इच्छा रखते हैं । क्या कोई भी भारतीय नहीं चाहेगा कि भारत शक्ति सम्पन्न देश बने ? देश में जितनी भी आपसी कलह हैं, वे पूरी तरह से समाप्त हो जाएं ? विश्व बन्धुत्व की कामना से ओतप्रोत भारत आनेवाले समय में दुनिया का नेतृत्व करे ? निश्चित ही यह कामना हर देश भक्त भारतीय की है। वस्तुतः आज हमें यह स्वीकार्य करना होगा कि दुनिया में हर देश और समाज के अपने प्राणतत्व हैं। भारत का प्राण तत्व सनातन धर्म (हिन्दुत्व) यानी कि हिन्दू धर्म में है, जिसके प्रमुख आदर्श पुरुषों में एक श्रीराम हैं। श्रीराम का आदर्श सिर्फ सज्जनता तक सीमित नहीं, वह तो सर्वसमावेशी है। जहां दुष्टों के दमन की आवश्यकता है, वहां दुष्टों का नाश किया जाएगा और जहां ज्ञान यज्ञ करना है, वहां उसे भी भव्यता के साथ पूरा किया जाएगा। स्त्री स्वरूपा शक्ति के मान के लिए फिर रावण जैसे दुराचारी से भी क्यों न लड़ना पड़े, उसे जड़ से समाप्त कर देना ही राम का आदर्श है। कहना होगा कि श्रीराम की शक्ति ही हिन्दू धर्म का प्राण तत्व है। राम के बिना शक्ति और शक्ति के बिना राम अधुरे हैं, इसलिए दुष्ट रावण के संधान के लिए राम शक्ति का आह्वान करते हैं । "साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम ! कह, लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।" ..."होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन। कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।" इन पंक्तियों का निष्कर्ष या कुल अर्थ है कि महाशक्ति, अर्थात मां भगवती श्रीराम के शरीर में उनकी ऊर्जा बन कर लीन हो गई। (राम की शक्ति पूजा, सूर्यकान्त त्रिपाठी) ऐसे में कांग्रेस आज जिस हिन्दू धर्म की जिस शक्ति को समाप्त करने की बात कह रही है, कहीं यह न हो जाए कि हिन्दू धर्म में श्रीराम के चरित्र में आबद्ध यह शक्ति उसी (कांग्रेस) का नाश कर देवे। क्योंकि यह शक्ति भारत के कण-कण में व्याप्त है। वस्तुतः किसी को यह नहीं भूलना चाहिए कि जब तक हिन्दू धर्म में शक्ति शेष है, तभी तक भारत वर्ष का भी अस्तित्व है।

कैसे देखते-देखते बदलने लगा कश्मीर

ANALYSIS

आर.के. सिन्हा

प्रधानमंत्री मोदी की जनसभा में उमड़ा जनसैलाब अविश्वसनीय था। सभास्थल बख्शी स्टेडियम में मोदी जी का भाषण सुनने के लिए हजारों लोगों की वक्त से बहुत पहले से ही लाइनें लग गई थीं। इनमें कश्मीरी औरतें भी भारी संख्या में थीं। याद नहीं आता कि जब किसी प्रधानमंत्री का घाटी में इतना गर्मजोशी से स्वागत किया गया हो। इसके पहले लगभग चालीस वर्ष पहले पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का लगभग ऐसा ही स्वागत हुआ था श्रीनगर में। प्रधानमंत्री की सभा की समाप्ति के बाद लोगों के चेहरों पर प्रसन्नता और आशा की मिली-जुली रेखाओं को पढ़ा जा सकता था। एक खबरिया टीवी चैनल पर स्थानीय निवासी गुलाम भट्ट कह रहे थे, ह्लमुझे यकीन है कि पीएम मोदी हमारी सेवाओं को नियमित कराएंगे। वह अकेले ही इसे पूरा कर सकते हैं। जम्मू-कश्मीर में अब तक सभी सरकारों ने हमसे केवल खोखले वादे किए हैं। रैली में इतनी बड़ी संख्या में आए लोगों की सुरक्षा के प्रबंधन में स्थानीय पुलिस सबसे आगे थी। जनता ने पुलिस द्वारा बताए गए हर सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन किया। जम्मू-कश्मीर पुलिस के उप-निरीक्षक सुलेमान खान ने कहा, यह पीएम मोदी की वजह से हुआ है। अब हमारी वर्दी का सम्मान है। हमने कश्मीर में वह दौर भी देखा है, जब पुलिसकर्मी पत्थरबाजों और राष्ट्र-विरोधी तत्वों के डर से अपना पहचान पत्र नहीं रखते थे।

अगर किसी ने फैसला ही कर लिया है कि वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का विरोध करना नहीं छोड़ेगा तो बात अलग है, पर हाल ही में उनकी (मोदी जी) श्रीनगर यात्रा के समय जिस तरह का उमंग और उत्साह के साथ स्वागत हुआ उससे सारा देश आश्वस्त महसूस कर रहा है। एक यकीन होने लगा है कि अब कश्मीर देश की मुख्यधारा से जुड़ गया है। प्रधानमंत्री मोदी की जनसभा में उमड़ा जनसैलाब अविश्वसनीय था। सभास्थल बख्शी स्टेडियम में मोदी जी का भाषण सुनने के लिए हजारों लोगों की वक्त से बहुत पहले से ही लाइनें लग गई थीं। इनमें कश्मीरी औरतें भी भारी संख्या में थीं। याद नहीं आता कि जब किसी प्रधानमंत्री का घाटी में इतना गर्मजोशी से स्वागत किया गया हो। इसके पहले लगभग चालीस वर्ष पहले पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का लगभग ऐसा ही स्वागत हुआ था श्रीनगर में। प्रधानमंत्री की सभा की समाप्ति के बाद लोगों के चेहरों पर प्रसन्नता और आशा की मिली-जुली रेखाओं को पढ़ा जा सकता था। एक खबरिया टीवी चैनल पर स्थानीय निवासी गुलाम भट्ट कह रहे थे, ह्लमुझे यकीन है कि पीएम मोदी हमारी सेवाओं को नियमित कराएंगे। वह अकेले ही इसे पूरा कर सकते हैं। जम्मू-कश्मीर में अब तक सभी सरकारों ने हमसे केवल खोखले वादे किए हैं। रैली में इतनी बड़ी संख्या में आए लोगों की सुरक्षा के प्रबंधन में स्थानीय पुलिस सबसे आगे थी। जनता ने पुलिस द्वारा बताए गए हर सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन किया। जम्मू-कश्मीर पुलिस के उप-निरीक्षक सुलेमान खान ने कहा, यह पीएम मोदी की वजह से हुआ है। अब हमारी वर्दी का सम्मान है। हमने कश्मीर में वह दौर भी देखा है,

जब पुलिसकर्मी पत्थरबाजों और राष्ट्र-विरोधी तत्वों के डर से अपना पहचान पत्र नहीं रखते थे। कश्मीर में यह परिवर्तन किसने संभव किया? यह मोदीजी और उनका दृढ़ संकल्प है कि कश्मीर में कानून का शासन वापस आया। मुझे मेरे कश्मीर में रहने वाले कई मित्रों ने बताया कि रैली के बाद लोग कश्मीर में अपने परिवार और दोस्तों के साथ रैली के बारे में जिस तरह से बातें कर रहे हैं, उससे यह स्पष्ट है कि लोग स्वेच्छा से वहां पहुंचे थे। हजारों लोग गर्व से बता रहे हैं कि उन्होंने बख्शी स्टेडियम में मोदी जी का भाषण सुना। प्रधानमंत्री मोदी ने भी इस अनुपम अवसर का भरपूर फायदा उठाया। उन्होंने जम्मू-कश्मीर को देश का मुकुट बताते हुए प्रदेश का डवलपमेंट प्लान सबके सामने रख दिया। उन्होंने कहा कि एक विकसित जम्मू-कश्मीर विकसित भारत की प्राथमिकता है। जम्मू-कश्मीर आज विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है क्योंकि वह खुलकर सांस ले रहा है। ये वो नया जम्मू कश्मीर है, जिसका इंतजार हम सभी को कई दशकों से था। इस नए जम्मू कश्मीर की आंखों में भविष्य की चमक है, इस नए जम्मू कश्मीर के इरादों में चुनौतियों को पार करने का हौसला है। अगर बात प्रधानमंत्री मोदी की रैली से हटकर करें तो कश्मीर की जनता देख रही है कि पाकिस्तान के कब्जे वाले पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में कितने बदतर हालात हैं। वहां दिन में कम से कम दसेक घंटे तक बिजली नहीं आती। वहां रोजगार नाम की कोई चीज नहीं है। सोशल मीडिया के दौर में अब कुछ भी छिपा नहीं है। कश्मीर घाटी की जनता यह भी देख रही है कि पीओके में पाकिस्तान सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ उग्र प्रदर्शन हो रहे हैं। पिछले छह महीनों से महंगाई, अप्रत्याशित बिजली बिल और अन्य करों के विरोध में प्रदर्शन जारी है। इतना ही नहीं, वहां पर प्रशासन के खिलाफ सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया है। बिजली के भारी बिलों और करों को लेकर लोगों का आंदोलन शुरू किया था। इस बीच, अब बहुत साफ है कि जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 का कोई मसला ही नहीं रहा। एक तरह से आप कह सकते हैं कि राज्य की जनता अब अनुच्छेद 370 से आगे निकल चुकी है। जैसी उम्मीद थी कि इसे हटाए जाने के बाद राज्य का सर्वांगीण विकास और रफ्तार पकड़ लेगा, अब वही हो रहा है। केंद्र सरकार जम्मू-कश्मीर में सबको विश्वास में लेकर ही आगे बढ़ना चाहती है। इसका प्रमाण है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी राज्य के 14 शिखर नेताओं से मिल भी चुके हैं। हालांकि अफसोस होता है कि जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 को हटाने के सवाल पर कांग्रेस का रवैया बेहद खराब रहा है। कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य दिग्विजय सिंह कहते रहे हैं कि केन्द्र में उनकी पार्टी की सरकार आएगी तो वे संविधान के अनुच्छेद 370 को दोबारा बहाल कर देंगे। देखिए, आपको कश्मीर घाटी के बदले हुए मिजाज को देखने-समझने के लिए राजधानी के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट में गोवा जाने वाली फ्लाइट के मुसाफिरों को देख लेना चाहिए। यकीन मानिए कि हरेक फ्लाइट में कई कश्मीरी परिवार भी यात्रा कर रहे होते हैं। चूंकि श्रीनगर से गोवा की कोई डायरेक्ट नहीं है तो ये दिल्ली से गोवा मौज-मस्ती के लिए जा रहे होते हैं। यानी जिस कश्मीर में शेष भारत से लोग पहुंचते हैं, वहां के लोग गोवा छुट्टियां मनाने के लिए जाते हैं। यह कश्मीरी गोवा जाने से पहले कुछ दिन दिल्ली में अपने रिश्तेदारों के साथ रहते हैं। यह उसके बाद गोवा जाते हैं। गोवा से वापसी के बाद भी दिल्ली में रुकते हैं। मुझे कुछ कश्मीरियों ने बताया कि उन्हें गोवा का खुला माहौल पसंद आने लगा है। जब कश्मीर जाड़ों में ठिठुर रहा होता है तो सैकड़ों कश्मीरी गोवा का रुख कर लेते हैं। कश्मीरियों के दिल में बसने लगे हैं गोवा के बीच (समुद्र का किनारा), वहां की डिशेज और समावेशी समाज। आपको साऊथ और नॉर्थ गोवा के होटलों में हर सीजन में बहुत सारे कश्मीरी परिवार मिलेंगे। जम्मू-कश्मीर बदलता जा रहा है। वहां अब पृथकतावादी ताकतों के लिए जगह नहीं है। संविधान के दायरे में रहकर आप सरकार से जो चाहें मांग करें, यह आपका हक है। पर वहां या कहीं भी देश विरोधी ताकतों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अब देश का सिर्फ एक लक्ष्य है विकास करना। इस रास्ते में अवरोध खड़ा करने वालों को देश स्वीकार नहीं करेगा।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

हमारी पर्यावरण दोस्त है चुलबुली गौरैया

हमारी सोच अब आहिस्ता-आहिस्ता बदलने लगी है। हम प्रकृति और जीव-जंतुओं के प्रति थोड़ा मित्रवत भाव रखने लगे हैं। घर की टेरेस पर पक्षियों के लिए दाना-पानी डालने लगे हैं। गौरैया से हम फ्रेंडली हो चले हैं। किचन गार्डन और घर की बालकनी में कृतिम घोंसला लगाने लगे हैं। गौरैया धीरे-धीरे हमारे आसपास आने लगी है। उसकी चीं-चीं की आवाज हमारे घर आंगन में सुनाई पड़ने लगी है। गौरैया संरक्षण को लेकर ग्लोबल स्तर पर बदलाव आया है। यह सुखद है। फिर भी अभी यह नाकाफी है। हमें प्रकृति से संतुलन बनाना चाहिए। हम प्रकृति और पशु-पक्षियों के साथ मिलकर एक सुंदर प्राकृतिक वातावरण तैयार कर सकते हैं। जिन पशु-पक्षियों को हम अनुपयोगी समझते हैं, वह हमारे लिए प्राकृतिक पर्यावरण को संरक्षित करने में अच्छी खासी भूमिका निभाते हैं, लेकिन हमें इसका ज्ञान नहीं होता। गौरैया हमारी प्राकृतिक मित्र है और पर्यावरण में सहायक है। गौरैया प्राकृतिक सहचरी है। कभी वह नीम के पेड़ के नीचे फुदकती और चावल या अनाज के दाने को चुगती है। कभी घर की दीवार पर लगे आईने पर अपनी हमशक्ल पर चोंच मारती दिख जाती है। एक वक्त था जब बबूल के पेड़ पर सैकड़ों की संख्या में घोंसले लटके होते थे, लेकिन वक्त के साथ गौरैया एक कहानी बन गई। हालांकि पर्यावरण के प्रति जागरुकता के चलते हाल के सालों में यह दिखाई देने लगी है। गौरैया इंसान की सच्ची दोस्त भी है और पर्यावरण संरक्षण में उसकी खासी भूमिका भी है। दुनिया भर में 20 मार्च गौरैया संरक्षण दिवस के रूप में मनाया जाता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी गौरैया संरक्षण के लिए लोगों से पहल कर चुके हैं। उन्होंने राज्यसभा सदस्य बृजलाल के प्रयासों को को सोशल मीडिया में खूब सराहा था और कहा था कि गौरैया संरक्षण को लेकर आपका प्रयास बेहतरीन और काबिल-ए-तारीफ है। राज्यसभा सदस्य बृजलाल ने अपने घर मंर गौरैया संरक्षण को लेकर काफी अच्छे उपाय किए हैं। उन्होंने गौरैया के लिए

दाना-पानी और घोंसले की व्यवस्था की है। जंगल में आजकल पंच सितारा संस्कृति विस्तार ले रही है। प्रकृति के सुंदर स्थान को भी इंसान कमाने का जरिया बना लिया है। जिसकी वजह पशु- पक्षियों के लिए खतरा बन गया है। प्रसिद्ध पर्यावरणविद् मोहम्मद ई. दिलावर के प्रयासों से 20 मार्च को चुलबुली गौरैया के लिए रखा गया। 2010 में पहली बार यह दुनिया में मनाया गया। गौरैया का संरक्षण हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती है। इनसान की भोगवादी संस्कृति ने हमें प्रकृति और उसके साहचर्य से दूर कर दिया है। गौरैया एक घरेलू और पालतू पक्षी है। यह इंसान और उसकी बस्ती के पास अधिक रहना पसंद करती है। पूर्वी एशिया में यह बहुतायत पाई जाती है। यह अधिक वजनी नहीं होती। इसका जीवनकाल दो साल का होता है। यह पांच से छह अंडे देती है। भारत की आंध्र यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन में गौरैया की आबादी में 60 फीसदी से अधिक की कमी बताई गई है। ब्रिटेन की रॉयल सोसाइटी ऑफ प्रोटेक्शन आफ बर्ड्स ने इस चुलबुले और चंचल पक्षी को रेड लिस्ट में डाल दिया है। दुनिया भर में ग्रामीण और शहरी इलाकों में गौरैया की आबादी घटी है। गौरैया की घटती आबादी के पीछे मानव विकास सबसे अधिक जिम्मेदार है। गौरैया पासेराडेई परिवार की सदस्य है लेकिन इसे वीवरपिंच परिवार का भी सदस्य माना जाता है। इसकी लंबाई 14 से 16 सेंटीमीटर होती है। इसका वजन 25 से 35 ग्राम तक होता है। यह अधिकांश झुंड में रहती है। यह अधिकतम दो मील की दूरी तय करती है। मानव जहां-जहां गया, गौरैया उसका हमसफर बनकर उसके साथ गई। गांवों में अब पक्के मकान बनाए जा रहे हैं। जिसका कारण है कि मकानों में गौरैया को अपना घोंसला बनाने के लिए सुरक्षित जगह नहीं मिल रही है। पहले गांवों में कच्चे मकान बनाए जाते थे। उसमें लकड़ी और दूसरी वस्तुओं का इस्तेमाल किया जाता था। कच्चे मकान गौरैया के लिए प्राकृतिक वातावरण और तापमान के लिहाज से अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराते थे, लेकिन आधुनिक मकानों में यह सुविधा अब उपलब्ध नहीं होती। यह पक्षी अधिक तापमान में नहीं रह सकता। देश की खेती-किसानी में रासायनिक उर्वरकों का बढ़ता प्रयोग बेजुबान पक्षियों और गौरैया के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है। केमिकल युक्त रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग से कीड़े-मकोड़े भी विलुप्त हो चले हैं। जिनमें गिद्ध, कौआ, महोख, कठफोड़वा, और गौरैया शामिल हैं। इनके भोजन का भी संकट खड़ा हो गया है। प्रसिद्ध पर्यावरणविद् मोहम्मद ई. दिलावर नासिक से हैं और वह बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी से जुड़े रहे हैं। उन्होंने यह मुहिम 2008 से शुरू की थी। आज यह दुनिया के 50 से अधिक मुल्कों तक पहुंच गई है। दिलावर के विचार में गौरैया संरक्षण के लिए लकड़ी के बुरादे से छोटे-छोटे घर बनाए जाएं और उसमें खाने की भी सुविधा भी उपलब्ध हो। घोंसले सुरक्षित स्थान पर हों, जिससे गौरैयों के अंडों और चूजों को हिंसक पक्षी और जानवर शिकार न बना सकें। हमें प्रकृति और जीव-जंतुओं के सरोकार से लोगों को परिचित कराना होगा। आने वाली पीढ़ी तकनीकी ज्ञान अधिक हासिल करना चाहती है, लेकिन पशु-पक्षियों से वह जुड़ना नहीं चाहती है। इसलिए हमें पक्षियों के बारे में जानकारी दिलाने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए, जिससे हम अपनी पर्यावरण दोस्त को उचित माहौल दे पाएं।

Social Media Corner

सच के हक में...

बाबा विश्वनाथ के सभी भक्तों को रंगभरी एकादशी की ढेरों शुभकामनाएं। भगवान शिव और मां पार्वती से जुड़े इस पावन अवसर के साथ ही काशी में होली का पर्व भी शुरू हो रहा है। मेरी कामना है कि उनके आशीर्वाद से काशी सहित देशभर के मेरे परिवारजनों के जीवन में समृद्धि और खुशहाली आए।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 'एक्स' पर पोस्ट)

विश्व गौरैया दिवस की हार्दिक बधाई। आईए, हम सब मिलकर प्रकृति की सुंदरतम रचनाओं में से एक गौरैया को संरक्षित वातावरण देने का संकल्प लें।

(ओडिशा के राज्यपाल रघबुर दास का 'एक्स' पर पोस्ट)

सीता सोरेन जी का भाजपा परिवार में स्वागत है। मुझे पूर्ण विश्वास है, वो अपने दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करेंगी। त्याग पत्र में सीता सोरेन जी ने अपने साथ हुए जिन भेदभावपूर्ण व्यवहार का उल्लेख किया, वो अत्यंत दुखद है। सीता सोरेन जी के इस्तीफे से स्पष्ट हो गया कि झामुमो-कांग्रेस के विधायक अपने ही सरकार की भ्रष्ट कार्यशैली से नाराज हैं।

(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी का 'एक्स' पर पोस्ट)

'बस्तरः द नक्सल स्टोरी' और पीड़ित महिलाओं की टीस

द केरल स्टोरी से सुर्खियों में आए सुदीप्तो सेन निर्देशित और विपुल शाह के प्रोडक्शन की फिल्म 'बस्तरः द नक्सल स्टोरी' छत्तीसगढ़ में नक्सली हिंसा तथा बस्तर के वास्तविक जीवन की घटनाओं पर आधारित और एक 'मां' की शक्ति को समर्पित शानदार फिल्म है। फिल्म के आरम्भ में नक्सल प्रभावित क्षेत्र का एक परिवार राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत होकर 15 अगस्त को एक विद्यालय में तिरंगा फहराता है और 'जन गण मन' का गायन करता है। नक्सलियों को इसका पता चलता है तो वह उस परिवार को अपनी अदालत में उठा ले जाते हैं। तिरंगा फहराने वाले व्यक्ति के शरीर के 32 टुकड़े कर दिए जाते हैं। मारे गए व्यक्ति की पत्नी कहती है," मैं रत्ना कश्यप, मेरे पति मिलन कश्यप को नक्सलियों ने मार दिया। पूरे गांव के सामने 32 टुकड़े कर दिए और उसके खून से अपने शहीद स्तंभ को मेरे हाथों से रंगवाया। क्या गलती थी उसकी, बस यही कि उसने 15 अगस्त को अपने गांव के स्कूल में भारत का झंडा लहराया। बस्तर में भारत का झंडा लहराना एक जुर्म है जिसकी सजा दर्दनाक मौत है।" मेरे बेटे को भी उठाकर ले गए उसे भी नक्सली बनाएंगे। हर परिवार से एक बच्चा उनको देना पड़ता है। नहीं देते तो पूरे परिवार को मार देते हैं। अरे हम बस्तर की मांएं करें तो करें क्या, मैं पति का बदला और अपने बेटे को वापस लाने के लिए जिंदा हूं। "मैने हथियार उठा लिए हैं बस्तर से इन नक्सलियों को समाप्त करके रहूंगी।" यही फिल्म की पार्श्वभूमि है। आगे बढ़ते हुए फिल्म बताती है कि किस प्रकार नक्सली देश को कम से कम 30 टुकड़ों में बांटने का खतरनाक षड़यंत्र रचते रहते हैं। भारत के मजबूत लोकतंत्र को कमजोर दिखाने के लिए वामपंथी तत्व किस प्रकार अपना नैरेटिव चलाते हैं और इस भारत विरोधी अभियान के लिए विदेशी फंडिंग आती है । इनकी घुसपैठ देश के सामाजिक और राजनीतिक ताने - बाने को प्रभावित करने वाली सभी संस्थाओं यथा विश्वविद्यालयों , न्यायपालिका व मीडिया जगत में है। निहित स्वार्थों की पूर्ति करने व छत्तीसगढ़ की अकूत सम्पदा पर कब्जा करने के लिए कुछ लोग नक्सली हिंसा को बढ़ावा दे रहे थे और बस्तर के गांवों में विकास नहीं हो पा रहा था। सरकारी पक्ष के वकीलों के पास तमाम सुबूत होने के बाद भी कोर्ट वामपंथ के वकील के पक्ष में अपना फैसला सुनाती है और सरकारों की विकृत राजनीति व मनोदशा के कारण नक्सलवाद की हिंसा से प्रभावित पीड़ितों पर हुए भीषणतम अत्याचारों की घटनाओं की जांच के बजाए कोर्ट आईपीएस अधिकारी नीरजा माधवन (अदा शर्मा) के खिलाफ ही न्यायिक जांच आयोग गठित कर दिया जाता है। लगभग 124 मिनट की इस फिल्म में नक्साली हिंसा के दिल दहलाने वाले क्रूर दृश्य हैं जिसके कारण फिल्म को 'ए' सर्टिफिकेट दिया गया है। फिल्म की नायिका अदा शर्मा ने आईपीएस अधिकारी नीरजा माधवन के रूप में अत्यंत सशक्त अभिनय किया है। जो भारत को हर प्रकार के नक्सलवाद से मुक्त करने के लिए दृढ़संकल्पित हैं। फिल्म की यह नायिका सिर्फ एक 'मां' या फिर पत्नी नहीं है वह एक ऐसी योद्धा है जिसके युद्ध का तात्पर्य है अमानवीय क्रूरता का सामना करना। फिल्म की कहानी वास्तविक घटनाओं से प्रेरित है। फिल्म मानवता को झकझोरने, आम जनमानस को नक्सलवाद के खिलाफ खड़ा करने तथा राष्ट्र के समक्ष वामपंथ की विकृत विचारधारा का खुलासा करने में समर्थ है। बस्तर में नक्सली हिंसा की सबसे अधिक शिकार महिलाएं हुई हैं। नक्सली आतंक स्त्रियों के लिए आईएसआईएस और बोको हरम जितना ही खतरनाक है । फिल्म में बस्तर में सीआरपीएफ के 76 जवानों की निर्मम हत्या की घटना और उसके पश्चात जेएनयू जैसे विश्व विद्यालयों में मनाए गए जश्न को भी शामिल किया गया है। फिल्म के अंत में नीरजा माधवन के संवाद बहुत ही सशक्त और राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत हैं।

हम साथ-साथ हैं

चिराग पासवान की लोकजनशक्ति पार्टी के साथ सीट बंटवारे पर बनी बीजेपी की सहमति की खबर बिहार के संवेदनशील चुनावी राजनीतिक समीकरणों के लिहाज से बेहद अहम है। हालांकि इसकी औपचारिक घोषणा अभी नहीं हुई है, लेकिन चिराग पासवान ने अपने स्तर पर इसकी पुष्टि कर दी है। इसलिए इसे महज अटकलबाजी कहकर टाला नहीं जा सकता। अगर समझौते से जुड़े डीटेल्स सही हैं तो यह सबसे पहले चिराग पासवान की निजी जीत है। उनके इस दावे पर एक तरह की मुहर है कि पिता रामविलास पासवान के असली राजनीतिक वारिस वही हैं। यह अहम इसलिए है कि तीन साल पहले 2021 में जब चिराग के चाचा पशुपति पारस ने बगावत का झंडा बुलंद करते हुए पार्टी को दोफाड़ कर दिया था, तब बीजेपी ने भी उन्हीं को मान्यता दी थी। तब चिराग का दावा था कि सांसद और विधायक चाहे जहां चले जाएं, पार्टी उनके पास है क्योंकि लोग उनके साथ हैं। बिहार में एनडीए के घटक दलों के बीच सीटों के बंटवारे का सवाल अभी सुलझा नहीं है। बीजेपी ने सबसे पहले चिराग पासवान के साथ सहमति बनाकर इस मामले को विराम देने की जरूरत महसूस की तो उसकी वजह यह थी कि विरोधी महगठबंधन की ओर से भी उन पर डोरे डाले जा रहे थे। खुद चिराग ने यह कहकर इसका संकेत दे दिया था कि सभी पक्ष उन्हें अपने साथ रखना चाहते हैं, लेकिन उनकी नीति बिहार फर्स्ट, बिहारी फर्स्ट की है। साफ था कि उन्होंने दोनों विकल्प खुले रखे थे। इस मामले का सबसे अहम पहलू है मुख्यमंत्री और जेडीयू नेता नीतीश कुमार के साथ चिराग पासवान का छत्तीस का आंकड़ा। 2019 लोकसभा चुनाव में एनडीए का हिस्सा थी एलजेपी। उसे तब छह सीटें मिली थीं और सभी पर उसके प्रत्याशी जीते थे। इसके बावजूद 2020 विधानसभा चुनावों में नीतीश कुमार को कथित तौर पर ज्यादा तवज्जो दिए जाने के विरोध में चिराग पासवान एनडीए से अलग हो गए थे। जेडीयू के खिलाफ उन्होंने कई जगह प्रत्याशी खड़े किए। नतीजतन जेडीयू की सीट संख्या (45) अब तक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई। ऐसे में यह सवाल अहम हो जाता है कि नीतीश कुमार और पशुपति पारस समेत बिहार में एनडीए के अन्य धड़े इस सहमति पर किस तरह की प्रतिक्रिया देते हैं। पारस का धड़ा राज्यपाल और मंत्री पदों की कथित पेशकश पर संतुष्ट हो जाता है या चुनाव लड़ने की जिद पर कायम रहता है, यह देखना होगा।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. R.N.I Number - JHABIL/2022/85899, Editor- Fahim Akhtar. Mob - 9431311669, E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

जोमेटो ने ग्रीन यूनिफॉर्म का फैसला वापस लिया

नई दिल्ली ।

जोमेटो ने अपने प्योर वेज फ्लीट के डिलीवरी पर्सन के लिए रेड की जगह ग्रीन यूनिफॉर्म का फैसला वापस ले लिया है। घोषणा के एक दिन के भीतर ही जोमैटो ने इस फैसले को वापस ले लिया। दरअसर जोमैटो ने हाल ही में वेज खाना खाने वालों के लिए एक खास सेवा शुरु की थी।

शाकाहारी खाने को तरजीह देने वाले ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्योर वेज मोड सर्विस का ऐलान किया था, जिसके तहत 100 फीसदी वेज खाना पसंद करने वालों के लिए प्योर वेज रेस्ट्रां से खाना डिलीवर किया जाएगा और वेज खाना डिलीवर करने के लिए जोमैटो में एक अलग से एक डिलीवरी पर्सन की शाखा बनेगी, जिसे प्योर वेज फ्लीट का नाम दिया गया। कंपनी के संस्थापक और सीईओ दीपिंदर गोयल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर इसकी जानकारी दी थी। वहीं वेज और नॉन वेज खाने के डिलिवरी पर्सन की अगल-अगल यूनिफॉर्म के इस फैसले के बाद से जोमैटो की काफी आलोचना हुई।

सोशल मीडिया पर यूजर्स ने कंपनी को खूब खरी-खोटी सुनाई। इसी आक्रोश के बीच कंपनी के सीईओ दीपिंदर गोयल ने इस फैसले को वापस लेने का ऐलान किया है।

इस मामले में उन्होंने एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा कि, हम शाकाहारियों के लिए एक फ्लीट जारी रखने जा रहे हैं, लेकिन ग्रीन यूनिफॉर्म को हटाने का फैसला किया है। गोयल ने आगे कहा कि जो ग्राहक प्योर वेज का विकल्प चुनते हैं, वे मोबाइल ऐप पर देख सकते हैं कि उनके ऑर्डर केवल शाकाहारी फ्लीट द्वारा ही डिलीवर किए जा रहे हैं।

गोयल ने फैसले को वापस लेते हुए पोस्ट में कहा कि इन मुद्दों को उठाने के लिए सोशल मीडिया को धन्यवाद दिया।

पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं

- ब्रेंट क्रूड 0.14 फीसदी की गिरावट के साथ 87.26 डॉलर प्रति बैरल

नई दिल्ली ।

पेट्रोलियम कंपनियों ने देशभर में पेट्रोल और डीजल की नई कीमतें जारी कर दी हैं। देश में हर दिन 6 बजे ईंधन की नई कीमतें जारी की जाती हैं। सरकारी तेल कंपनियों ने फ्यूल की ताजा कीमत अपनी ऑफिशियल वेबसाइट पर अपडेट कर दी हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में बुधवार को डब्ल्यूटीआई क्रूड 0.37 फीसदी की गिरावट के साथ 83.16 डॉलर प्रति बैरल पर बिक रहा है। वहीं ब्रेंट क्रूड 0.14 फीसदी की गिरावट के साथ 87.26 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है। 20 मार्च को देश में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बदलाव नहीं हुआ है। वहीं राजधानी दिल्ली में एक लीटर पेट्रोल की कीमत 94.72 रुपये और डीजल की कीमत 87.62 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है। मुंबई में पेट्रोल की कीमत 104.21 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.15 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है। कोलकाता में पेट्रोल की कीमत 103.94 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.76 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है। चेन्नई में पेट्रोल की कीमत 100.75 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.34 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है। नोएडा में पेट्रोल 94.83 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.96 रुपये प्रति लीटर, गुरुग्राम में पेट्रोल 95.19 रुपये प्रति लीटर और डीजल 88.05 रुपये प्रति लीटर, लखनऊ में पेट्रोल 94.65 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.76 रुपये प्रति लीटर, चंडीगढ़ में पेट्रोल 94.24 रुपये प्रति लीटर और डीजल 82.40 रुपये प्रति लीटर, जयपुर में पेट्रोल 104.88 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.36 रुपये प्रति लीटर, पटना में पेट्रोल 105.18 रुपये प्रति लीटर और डीजल 92.04 रुपये प्रति लीटर, हैदराबाद में पेट्रोल 107.41 रुपये प्रति लीटर और डीजल 95.65 रुपये प्रति लीटर, बेंगलुरु में पेट्रोल 99.84 रुपये प्रति लीटर और डीजल 85.93 रुपये प्रति लीटर बिक रहा है।

ईवी पॉलिसी को जून तक बढाने को मिली मंजूरी

-लोगों को मिलता रहेगा सब्सिडी का फायदा

नई दिल्ली ।

राज्य की इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी को दिल्ली कैबिनेट ने इस साल जून तक बढा दिया है। सब्सिडी का फायदा लोगों को मिलता रहेगा। दिल्ली की सरकार ने इस पॉलिसी को बढाने के निर्णय को मंजूरी दी है। दिल्ली सरकार ने एक बयान में कहा कि सभी मौजूदा प्रोत्साहन और सब्सिडी बरकरार रहेगी और 1 जनवरी से खरीदा गया कोई भी इलेक्ट्रिक वाहन इस विस्तार के तहत लाभ के लिए पात्र होगा। बयान के मुताबिक, दिल्ली ईवी पॉलिसी को 30 जून तक या दिल्ली ईवी पॉलिसी 2.0 की नोटिफिक्रेशन तक, जो भी पहले हो, बढ़ा दिया गया है। ईवी पॉलिसी को आगे बढ़ाने का फैसला कैबिनेट की बैठक में लिया गया। बता दें कि दिल्ली सरकार ने 7 अगस्त 2020 को 3 साल की अवधि के लिए ईवी पॉलिसी की नोटिफिक्रेशन जारी की थी, जिसे बाद में 31 दिसंबर 2023 तक बढ़ा दिया गया था। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने एक आधिकारिक बयान में कहा कि ईवी पॉलिसी के जरिए भारत को ईवी के मैन्युफैक्चरिंग डेस्टिनेशन के रूप में बढ़ावा देने और टेस्ला समेत विभिन्न वैश्विक ईवी मैन्युफैक्चरर से निवेश आकर्षित करने का प्रयास किया गया है।दिल्ली सरकार ईवी पॉलिसी 2.0 तैयार करने पर काम कर रही है। हाल ही में केंद्र सरकार ने भारत को मैन्युफैक्चरिंग डेस्टिनेशन के रूप में बढ़ावा देने के लिए शुक्रवार (15 मार्च) को ईवी पॉलिसी को मंजूरी दे दी जिसमें न्यूनतम 50 करोड़ डॉलर (4,150 करोड़ रुपये) के निवेश के साथ देश में मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स स्थापित करने वाली कंपनियों को शुल्क में रियायतें दी जाएंगी।

बाजार खुलते ही आयशर मोटर्स के शेयर में पांच फीसदी तेजी

नई दिल्ली ।

मिले-जुले ग्लोबल संकेतों के बाद बुधवार को शेयर बाजार की शुरुआत तेजी के साथ हुई है। बाजार में इस हलचल का असर ऑटो सेक्टर पर भी दिखाई दे रहा है।

ऑटो सेक्टर में खास तौर पर आयशर मोटर्स का शेयर जबरदस्त तेजी में दिख रहा है। बाजार खुलते ही ये शेयर 5 फीसदी उछल गया है। शेयर में इस तेजी का कारण है ग्लोबल ब्रोकरेज का डबल अपग्रेड, ब्रोकरेज फर्म यूबीएस ने आयशर मोटर्स की रेटिंग को अपग्रेड किया है। ब्रोकरेज ने शेयर पर रेटिंग को पेचुरल से डबल अपग्रेड कर दिया है। वहीं इसी के साथ टारगेट को 4300 रुपए से बढाकर 5000 रुपए कर दिया है। बता दें कि बीएसई पर शेयर 5 फीसदी की उछाल के साथ 3916 रुपए के पार कारोबार कर रहा है। जबकि मंगलवार को 3718.10 रुपए के भाव पर बंद हुआ था। ब्रोकरेज का अनुमान है कि घरेलू वॉल्यूम ग्रोथ में रायल इनफील्ड

इंडस्ट्री को आउटपरफॉर्म करेगी। इसके तहत वित्त वर्ष -26 में रायल इनफील्ड के घरेलू वॉल्यूम में 10 फीसदी सीएजीआर से बढ़ने की उम्मीद है। जबकि इंडस्ट्री की घरेलू वॉल्यूम 6-7 फीसदी सीएजीआर से बढ़ने का अनुमान है।

शेयर बाजार हल्की तेजी के साथ बंद

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार बुधवार को हल्की बढ़त पर बंद हुआ। दुनिया भर के बाजारों से मिले अच्छे संकेतों के बीच ही खरीदारी से भी बाजार ऊपर आया है पर फेड के फैसलों को देखते हुए निवेशकों ने खरीददारी में सतर्कता बरती जिससे बाजार की तेजी पर अंकुश भी लगा रहा। आज कारोबार के दोर व्यापक बाजारों में भी बीएसई मिडकैप 0.05 फीसदी बढ़ा, जबकि स्मॉलकैप सूचकांक में भी 0.14 फीसदी की गिरावट रही। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 89.64 अंक करीब 0.12 फीसदी बढ़कर 72,101.69 अंक पर बंद हुआ। वहीं दूसरी ओर नेशनल स्टॉक एक्सचेंज निफ्टी में भी 21.65 अंक तकरीबन 0.1 फीसदी बढ़त आई। निफ्टी दिन के अंत में 21,839.10 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स के 30 शेयरों में मारुति सुजुकी, नेस्ले इंडिया, पावर ग्रिड, आईटीसी, टेक महिंद्रा, रिलायंस इंडस्ट्रीज, बजाज फाइनेंस और एसबीआई के शेयर लाभ के साथ ही उछले हैं। दूसरी ओर टाटा स्टील, टाटा मोटर्स, एक्सिस बैंक, एचडीएफसी बैंक, एचयूएल, जेएसडब्ल्यू स्टील और एचसीएल टेक के शेयर गिरे हैं। वहीं गत दिवस बाजार नीचे आया था। इस दौरान टीसीएस, इन्फोसिस और रिलायंस इंडस्ट्रीज जैसे शेयरों में गिरावट आई थी। इससे पहले आज सुबह बाजार की शुरुआत मजबूती के साथ हुई है। सेंसेक्स और निफ्टी हरे निशान में खुलते हुए दिखाई दिये। मिडकैप इंडेक्स भी मजबूत खुला है। वहीं

अमेरिकी बाजारों के हाल पर नजर डालें तो लगातार दूसरे दिन अमेरिकी बाजार में तेजी बरक़रार है। एसएंडपी 500 में रिकॉर्ड क्लोजिंग और डाओ एक महीने की ऊंचाई पर है। वहीं नैस्डैक में भी 60 अंकों की तेजी दर्ज की गई। स्मॉलकैप 2000 में भी करीबन आधे फीसदी की तेजी देखी गई है।

ब्रिटेन में खुदरा मुद्रास्फीति 3.4 प्रतिशत रही

लंदन ।

ब्रिटेन में खुदरा मुद्रास्फीति फरवरी में अनुमान से कहीं कम 3.4 प्रतिशत रही है, जो सितंबर, 2021 के बाद सबसे निचला स्तर है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने बुधवार को फरवरी के आंकड़े जारी कर कहा कि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति 3.4 प्रतिशत रही है। जनवरी में यह चार प्रतिशत थी। फरवरी में खुदरा मुद्रास्फीति सितंबर, 2021 के बाद सबसे कम है। बात दें कि खुदरा मुद्रास्फीति में गिरावट के पीछे खाद्य कीमतों में आई नरमी है। फरवरी में मुद्रास्फीति का आंकड़ा विश्लेषकों के अनुमान से कहीं अधिक है। विश्लेषकों ने 3.6 प्रतिशत मुद्रास्फीति का अनुमान जताया था। हालांकि, यह आंकड़ा अब भी बैंक ऑफ इंग्लैंड के दो प्रतिशत के लक्ष्य से अधिक है। रूस-यूक्रेन संघर्ष की वजह से वर्ष 2022 में मुद्रास्फीति के 11 प्रतिशत पर पहुंच जाने के बाद से इस नीचे लाने के लिए कोशिशें की जा रही हैं। खुदरा मुद्रास्फीति में आई इस गिरावट से ब्रिटिश केंद्रीय बैंक की तरफ से नीतिगत ब्याज दर के मोर्चे पर राहत की उम्मीदें बढ़ गई हैं।

जेबीएम ऑटो को पीएम-ईबस सेवा के लिए 7,500 करोड़ का ऑर्डर मिला

नई दिल्ली । जेबीएम ऑटो को पीएम-ईबस सेवा योजना के तहत 1,390 इलेक्ट्रिक बस के साथ संबद्ध इलेक्ट्रिक और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए 7,500 करोड़ रुपये का ऑर्डर हो सिल हुआ है। कंपनी ने शेयर बाजार को बताया कि यह ऑर्डर 12 से 18 महीने में पूरा करना होगा। कंपनी की अनुषंगी कंपनी जेबीएम इकोलाइफ मोबिलिटी प्राइवेट लिमिटेड को एल1 घोषित किया गया है और 1,390 इलेक्ट्रिक बसों की खरीद, आपूर्ति, संचालन और रखरखाव और संबद्ध इलेक्ट्रिक और बुनियादी ढांचे का विकास करना होगा। सरकार ने पिछले साल अगस्त में पीएम-ईबस सेवा योजना की घोषणा की थी। इसके अंतर्गत सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) के तहत 169 शहरों में 10,000 इलेक्ट्रिक बस की आपूर्ति की जाएगी। इसके तहत उन शहरों को प्राथमिकता मिलेगी जहां संगठित बस सेवा नहीं है।

प्रत्यक्ष कर संग्रह 20 फीसदी बढ़कर 18.90 लाख करोड़ पहुंचा

- पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में प्रत्यक्ष कर संग्रह 15,76,776 करोड़ था

नई दिल्ली । चालू वित्त वर्ष में 17 मार्च तक प्रत्यक्ष कर संग्रह (डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन) में 19.88 फीसदी बढ़ोतरी देखी गई है। यह बढ़कर 18.90 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा हो गया है। आयकर विभाग के निकाय केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने कहा कि 17 मार्च तक कुल प्रत्यक्ष कर संग्रह 18,90,259 करोड़ रुपए रहा है। इसमें 9,14,469 करोड़ रुपए कॉरपोरेट टैक्स और व्यक्तिगत आयकर के अलावा 9,72,224 करोड़ रुपए का सिक्योरिटी ट्रांजैक्शन टैक्स (एसटीटी) भी शामिल है। इसके साथ चालू वित्त वर्ष में 17 मार्च तक करीब 3.37 लाख करोड़ रुपए का रिफंड भी जारी किया जा चुका है। सकल आधार पर रिफंड समायोजन से पहले कुल प्रत्यक्ष कर संग्रह 22.27 लाख करोड़ रुपए था। यह एक साल पहले की समान अवधि के मुकाबले 18.74 फीसदी ज्यादा है। सीबीडीटी ने कहा कि वित्त वर्ष 2023-24 में 17 मार्च तक प्रत्यक्ष कर संग्रह के अस्थायी आंकड़े बताते हैं कि शुद्ध टैक्स संग्रह 18,90,259 करोड़ रुपए है जबकि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में यह 15,76,776 करोड़ रुपए था। यह वित्त वर्ष 2022-23 की तुलना में 19.88 फीसदी अधिक है। सरकार ने प्रत्यक्ष कर संग्रह के संशोधित अनुमान में पूरे वित्त वर्ष के लिए प्राप्तियां 19.45 लाख करोड़ रुपए रहने की उम्मीद जताई है। ज्यादा टैक्स कलेक्शन से सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य, बुनियादी ढांचे और अन्य महत्वपूर्ण सार्वजनिक सेवाओं में सुधार के लिए इस पैसे का उपयोग कर सकती है। ज्यादा टैक्स कलेक्शन से सरकार का राजकोषीय घाटे में कमी आएगी। इससे अर्थव्यवस्था में स्थिरता आएगी। सरकार इस पैसे का उपयोग आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए कर सकती है।

रिलायंस पावर ने पिछले हफ्ते तीन बैंकों के बकाये का निपटारा किया

- रिलायंस इन्फ्रास्ट्रक्चर भी जेसी फ्लावर्स एसेट रिकंस्ट्रक्शन का चुकाएगी कर्ज

मुंबई ।

कर्ज के बोझ तले दबे कारोबारी अनिल अंबानी के दिन अब बदलने लगे हैं। उनकी कंपनियां तेजी से अपने कर्ज का निपटारा करने में लगी हुई है। सूत्रों के मुताबिक अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस पावर ने पिछले हफ्ते तीन बैंकों आईसीआईसीआई बैंक, एक्सिस बैंक और डीबीएस बैंक के बकाये का निपटारा कर दिया। इसी तरह इसकी पेरेंट कंपनी रिलायंस इन्फ्रास्ट्रक्चर भी जेसी फ्लावर्स एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी के 2,100 करोड़ रुपए बकाये का भुगतान करने की योजना बना रही है। एक कमर्शियल बैंक के वरिष्ठ कार्यकारी ने कहा कि रिलायंस पावर का लक्ष्य इस वित्त वर्ष के अंत तक कर्ज मुक्त कंपनी बनना है। इसकी बही-खातों पर एकमात्र कर्ज आईडीबीआई बैंक से लिया गया वर्किंग कैपिटल लोन होगा। आईसीआईसीआई बैंक, एक्सिस बैंक और डीबीएस बैंक का रिलायंस पावर पर कुल मिलाकर करीब 400 करोड़ रुपए का बकाया था और उन्होंने अपने प्रिंसिपल लोन का लगभग 30-35 फीसदी वसूल कर लिया है। एक्सचेंजों को जारी नोटिस के मुताबिक रिलायंस इन्फ्रास्ट्रक्चर और जेसी फ्लावर्स एआरसी ने एक स्टैंडस्टिल एग्रीमेंट किया था। शुरू में यह एग्रीमेंट 20 मार्च तक था। रिलायंस इन्फ्रास्ट्रक्चर के एक प्रवक्ता ने कहा कि इसे हाल ही में 31 मार्च तक बढ़ा दिया गया था। एग्रीमेंट के मुताबिक जेसी

फ्लावर्स एआरसी 31 मार्च तक रिलायंस इन्फ्रास्ट्रक्चर के खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं करेगा। इससे कंपनी को फंड की व्यवस्था करने का समय मिलेगा। एक्सिस, आईसीआईसीआई, और डीबीएस बैंक ने इस बारे में कोई टिप्पणी नहीं की। रिलायंस पावर ने भी लोन सेटलमेंट की डिटेल्स पर कोई टिप्पणी नहीं की। बता दें कि रिलायंस पावर और रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर के शेयरों में तेजी भी बरकरार है। बीएसई पर रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर का शेयर बीते 5 दिनों में 10.5 फीसदी उछला है, जबकि 6 महीनों में इसने 38 फीसदी फायदा कराया है। वहीं रिलायंस पावर का शेयर बीते 5 दिनों में 8.10 फीसदी और 6 महीनों में 19 फीसदी मजबूत हुआ है।

एआई से संबंधित स्टार्टअप के लिए 2,000 करोड़ की योजना: अधिकारी

नई दिल्ली । केंद्र सरकार ने कृत्रिम मेधा (एआई) से संबंधित स्टार्टअप के वित्तपोषण और समर्थन के लिए 2,000 करोड़ रुपए से ज्यादा रकम आवंटित की है और अगले वित्त वर्ष में यह योजना शुरू होगी। ऐसी जानकारी मिली है। इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत गठित स्टार्टअप हब के एक वे रिष्ठ अधिकारी ने हाल ही में यहां स्टार्टअप महाकुंभ में कहा कि सरकार सेमीकंडक्टर निर्माण के लिए डिजाइन-संबद्ध प्रोत्साहन जैसी योजनाओं के माध्यम से प्राथमिकता क्षेत्र के लिए एक बड़ा वित्तपोषण कार्यक्रम चला रही है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्रिमंडल से भारत एआई मिशन को मिली मंजूरी के तहत देश में एआई पारिस्थितिकी के समर्थन के लिए 10,000 करोड़ रुपए आवंटित किए जा रहे हैं। इसमें से 2,000 करोड़ रुपए से अधिक रकम एआई से जुड़े स्टार्टअप के समर्थन एवं वित्तपोषण के लिए आवंटित की गई है। उन्होंने कहा कि हम इन कार्यक्रमों और योजनाओं को लागू करने के लिए व्यवस्था बनाने पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। इसे आगामी वित्त वर्ष के अंदर शुरू करना चाहिए। मंत्रिमंडल ने देश में एआई विकास के लिए 10,372 करोड़ रुपए के परिव्यय के साथ भारत एआई मिशन को हाल ही में मंजूरी दी है। विजय ने कहा कि स्टार्टअप हब वर्तमान में पूरे भारत में 143 इनक्यूबेटर और उत्कृष्टता केंद्रों को समर्थन और वित्तपोषण दे रहा है। इसके साथ कोषों का कोष के जरिये सभी स्टार्टअप को संकल्पना स्तर से विकास स्तर तक वित्तपोषण दिया जा रहा है।

एयर इंडिया की कमजोरी से बची कई विमानन कंपनियां: विल्सन

नई दिल्ली ।

एयर इंडिया के मुख्य कार्य अधिकारी और प्रबंध निदेशक कैंपबेल विल्सन का ने कहा कि भारत के आसपास की कई विमानन कंपनियां एयर इंडिया की कमजोरी के कारण बची हुई हैं लेकिन अब विमानन कंपनी के पास उनसे बाजार वापस प्राप्त करने और देश को लोगों के लिए यात्रा का केंद्र बनाने का अवसर है। विल्सन ने यह बात हाल ही में चार्टर्ड अकाउंटेंसी फर्म पीकेएफ श्रीधर एंड संतानम की 45वीं वर्षगांठ के समारोह में कहा कि एयर इंडिया के निजीकरण के समय एक देश के रूप में भारत के पास चौड़ी बॉडी वाले 43 विमान थे जबकि दुबई के पास 250, सिंगापुर के पास 150 और कतर के पास 175 विमान थे। यह एयर इंडिया के लिए छोटा स्तर है और उसके पास आगे बढ़ने का अवसर है। एमिरेट्स, कतर एयरवेज, एतिहाद एयरवेज और सिंगापुर एयरलाइंस जैसी विमानन कंपनियां इस क्षेत्र में अपने केंद्रों के जरिये भारत से अंतरराष्ट्रीय यातायात की भरपूर सेवा प्रदान करती हैं। बी787 और ए350 जैसे चौड़ी बॉडी वाले विमानों में ईंधन के बड़े टैंक होते हैं जो लंबी दूरी की उड़ान सुविधा देते हैं। प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया के बाद जनवरी 2022 में एयर इंडिया को टाटा को बेच दिया गया था। जुलाई 2022 में एयर इंडिया की कमान संभालने वाले विल्सन ने विमानन कंपनी के लिए एमिरेट्स, कतर एयरवेज, सिंगापुर एयरलाइंस और ब्रिटिश

एयरवेज जैसी सेवा, उत्पाद गुणवत्ता तथा आतिथ्य का स्तर हासिल करने की इच्छा जताई। उन्होंने कहा कि भारत से जुड़ी कई विमानन कंपनियां भारतीय बाजार में अपना अस्तित्व बचाए रखने में कामयाब रहीं। विशेष तौर पर उन्हें एयर इंडिया की कमजोरी से भी भारतीय बाजार में डटे रहने में मदद मिली।

टाटा स्टील भी नॉन कनवर्टिबल डिबेंचर से जुटाएगा 2,700 करोड़

नई दिल्ली ।

टीसीएस के बाद स्टील सेक्टर की ग्लोबल दिग्गज कंपनी टाटा स्टील ने ऐलान किया कि वह नॉन कनवर्टिबल डिबेंचर के जरिये 2,700 करोड़ रुपये जुटाएगी। एक्सचेंजों को कंपनी ने बताया कि कंपनी के बोर्ड ने रकम जुटाने की मंजूरी दे दी है। स्टील दिग्गज कंपनी ने एक रेगुलेटरी फाइलिंग में कहा कि कमेटी ऑफ डायरेक्टर्स ने हाल ही में हुई अपनी बैठक में नॉन कनवर्टिबल डिबेंचर (एनडीसी) के जरिये रकम जुटाने को मंजूरी दे दी है। बता दें कि कमेटी ऑफ डायरेक्टर्स टाटा स्टील लिमिटेड के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स द्वारा गठित एक कमेटी है। टाटा स्टील की तरफ से जारी किए गए डिबेंचर्स की अलॉटमेंट 27 मार्च से शुरू हो जाएगी और इनकी मैच्योरिटी 3 साल की यानी 26 मार्च, 2027 तक होगी। कंपनी ने कहा कि 1 लाख रुपये की फेस वैल्यू पर वह 2,70,000 नॉन कनवर्टिबल डिबेंचर के जरिये 2,700 करोड़ रुपये जुटाएगी। कंपनी की तरफ से की गई फाइलिंग के मुताबिक निवेशकों को डिबेंचर पर कूपन हर साल मिलेगा जबकि, मूल धन का भुगतान तीन साल की मैच्योरिटी पूरी होने के बाद एकमुश्त किया जाएगा। बता दें कि टाटा स्टील को इंडिया रेटिंग्स और केयर रेटिंग्स ने एए प्लस रेटिंग दी है।

जियो फाइनेंशियल ने जेएलएसएल में 40 करोड़ का निवेश किया

नई दिल्ली । जियो फाइनेंशियल सर्विसेज ने अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी जियो लीजिंग सर्विसेज लिमिटेड (जेएलएसएल) में 40 करोड़ रुपये का निवेश किया है। इस कंपनी का गठन चल संपत्ति गतिविधियों को पट्टे पर देने के लिए किया गया है। जियो फाइनेंशियल सर्विसेज ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि कंपनी ने अपने व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए जेएलएसएल के 10 रुपये के चार करोड़ शेयरों को समान मूल्य पर 40 करोड़ रुपये की नकद राशि से खरीदा। इसमें कहा गया कि उपरोक्त लेनदेन के लिए किसी सरकारी या नियामकीय अनुमोदन की जरूरत नहीं थी। बयान के अनुसार अनुषंगी कंपनी सभी प्रकार की चल संपत्तियों को पट्टे पर देने के व्यवसाय में लगेगी।

THE PHOTON NEWS

www.thephotonnews.com
Thursday, 21 March 2024

सुरक्षित अनाज

वर्तमान समय में रबी की फसलों की कटाई एवं गहाई चल रही है इसके बाद भंडारण करना है इसलिये कटाई करते समय ध्यान रखें फसलें अच्छी तरह पकी हों अन्यथा कच्चे रहने पर दाने छोटे व सिकुड़ जाते हैं और यदि अधिक दिनों तक फसल पकी हुई खड़ी रहने पर कटाई के समय दाने व फलियां जमीन पर झड़ जाते हैं जिससे उपज घट जाती है. इसलिये सभी फसलों की पकने की उचित अवस्था में कटाई करें कटाई के लिये कई पहलू हैं जिसमें पत्तियां फलियां पीली पड़ना, पत्तियां गिरना, दाने में नमी की मात्रा जो पकने में देखे जाते हैं साथ ही कटाई उचित यंत्र से कटाई करें जिसमें रकबा व उपलब्ध मजदूर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिसमें ट्रैक्टर व मशीन चलित कम्बाईन, हारवेस्टर व मोवर, बैल चलित यंत्र रीपर से करना चाहिए इस समय नमी 20 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए तथा मानव चलित उपकरण हसिया, गंडासा उपयोग होता है.

कटाई के बाद फसल को सुखाना हो तो उसे बंडलों में बांधकर खेत में 3-4 दिन सुखा लें. इसके बाद पूर्ण रूप से सूखने पर लगभग नमी फसलों में 15% के आसपास हो तब दांव चलाकर, डंडे से पीटकर या थ्रेसर द्वारा दाना-भूसा अलग कर लें. साथ ही देख लें अधिक नमी या यंत्र की खराबी से दाना टूट तो नहीं रहा. तेल वाली फसलों को अधिक समय तक खलिहान में गहाई के लिये फसल को भंडारित कर नहीं रखना चाहिए क्योंकि इससे तेल प्रतिशत घट जाता है साथ की कीड़ों द्वारा भी हानि पहुंचाई जाती है. अनाज को भंडारण से पहले सुखाना बहुत जरूरी है. जिससे उसमें नमी अधिक न रहे अन्यथा कीड़े व फफूंद द्वारा उत्पादन की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डालते है. जिसमें सभी फसलों के लिये नमी प्रतिशत अलग-अलग होता है जैसे-अनाज वाली फसलों 12% तिलहनी फसलों में 8%, दलहनी फसलों में 9% नमी भंडारण हेतु उपयुक्त मानी जाती है. इसके लिये बीजों को दांतों से तोड़कर कट की आवाज आने पर सही नमी का अंदाजा लगाया जा सकता है.

उपरोक्त के अलावा फसलों की कटाई, गहाई व उसके रखरखाव हेतु निम्नलिखित सावधानियां रखना चाहिए-

- फसल की कटाई साफ व धूप वाले मौसम में करना चाहिए.
- गहाई मशीन के नट अच्छी तरह कसे होना चाहिए इसके लिये कार्य करते समय अवांछनीय आवाज आये तो मशीन रोककर ठीक कर लेना चाहिए.
- थ्रेसिंग मशीन पर कार्य करने वाले ढीले-ढाले कपड़े नहीं पहनना चाहिए उलझ सकते हैं.
- खलिहान में आदमी बीड़ी- सिगरेट न पियें आग लग सकती है.
- खलिहान साफ-स्वच्छ, ऊंचे स्थान जहां वर्षा होने पर पानी भरे नहीं तथा आसानी से निकल जाये ऐसे स्थान का चयन करना चाहिए.
- फसल के बंडल थ्रेसर के पास रखें जिससे मजदूरों को थ्रेसिंग करते समय अधिक क्षमता से गहाई कर सकें.

दुधारू पशुओं की देख-रेख

दुधारू पशुओं के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए. संक्रामक रोगों का टीकाकरण समय रहते अवश्य कराना चाहिए. बाह्य एवं आंतरिक परजीवियों को दूर करने के लिए विशेष ध्यान रखना चाहिए. दुधारू पशुओं में थन एवं अयन की साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए.

- पशु के पोषण में लगभग 70ज खर्च होता है. दुग्ध उत्पादन तभी लाभदायी हो सकता है, जब पशुओं को संतुलित आहार मिले तथा उसकी लागत कम आये. हरा चारा दुधारू पशुओं के लिये अमृत के समान है. 6 से 8 लीटर दूध देने वाले पशुओं की आवश्यकता की पूर्ति मात्र पेट भर हरा चारा उपलब्ध कराने से भी की जा सकती है. 1.5 किलो जीविका आहार के साथ पशु की दूध उत्पादन क्षमता के अनुसार बांटा दिया जाना चाहिए. भैंसों में 2 लीटर दूध उत्पादन पर 1 किलो बाटा तथा गायों में 2.5-3.0 लीटर दूध पर 1 किलो बाटा दिया जाना चाहिए.
- पशुओं की अच्छी आवास व्यवस्था भी दूध उत्पादन अच्छा रखने में सहायक होती है. गौशाला इस प्रकार की बनाई जानी चाहिए जिससे सूर्य की किरणें उत्तर की ओर अधिक पड़ें और दक्षिण की ओर कम से कम, जिससे गर्मियों एवं सर्दियों में पशुओं की रक्षा की जा सके. गाय एवं भैंसों के लिये 30-35 वर्ग फीट प्रति पशु जगह की आवश्यकता होती है. बाहरी बाड़ा के लिये 20-100 वर्ग फुट स्थान होना चाहिए. पूंछ से पूँछ विधि गौ पशुओं के लिये सबसे अधिक उपयोगी पाई गई है.

इस विधि की विशेषताएं हैं कि गौ शाला की साफ-सफाई अच्छी की जा सकती है. जिससे पशुओं को बीमारी से बचाया जा सकता है. संक्रामक बीमारियाँ आसानी से नहीं फैल पाती हैं. थन एवं अयन की बीमारियों का तुरंत पता लगाया जा सकता है. पशुओं और नालियों की साफ-सफाई अच्छी तरह से की जा सकती है.

- दुधारू पशुओं से अधिक दूध उत्पादन के लिए स्वच्छ पानी की उपलब्धता अत्यंत आवश्यकता है. पशु बिना भोजन के तो रह सकता है. परंतु बिना पानी के नहीं. क्योंकि पानी शारीरिक क्रियाओं के संचालन एवं दूध उत्पादन के लिए आवश्यक है. प्रत्येक दुधारू पशु को लगभग 100 लीटर पानी की प्रतिदिन आवश्यकता होती है.
- दुधारू पशुओं को प्रेम पूर्वक रखना, उनसे अच्छा व्यवहार करना, बाह्य परजीवी जूं किलनी इत्यादि को अलग रखना. क्योंकि बाह्य परजीवी पशु का खून चूसते हैं और दूध उत्पादन क्षमता पर प्रभाव डालते हैं.

अत: जब भी मौसम में बदलाव आता है, उस समय बाह्य परजीवी जैसे जूँ और किलनी मारक दवाइयों का प्रयोग करना चाहिए.

- जहाँ तक सम्भव हो दुधारू पशुओं को शोर से दूर रखा जाना चाहिए. शोर का प्रभाव उनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता पर पड़ता है.
- अच्छे दूध उत्पादन करने वाले पशुओं की पहचान की जानी चाहिए. जो पशु कम दूध उत्पादन अर्थात 2-3 लीटर दूध देते हैं. उनकी छटनी कर देनी चाहिए. प्रतिवर्ष 15-20 प्रतिशत गौ शाला के पशुओं की छटनी की जानी चाहिए जिससे लगातार अधिक दूध उत्पादन प्राप्त हो सके.
- गौ शाला में एक निश्चित दिनचर्या का पालन किया जाना चाहिए. इसमें बदलाव करने से दूध उत्पादन क्षमता पर प्रभाव पड़ता है. यदि कोई बदलाव करना है तो पशुओं की शुष्क अवस्था में किया जाना चाहिए.
- पशुओं का दूध दुहते समय अच्छा प्रबंध करना चाहिए. यह एक विशेष कार्य है. दोहने वाले व्यक्ति की क्षमता दूध उत्पादन पर बहुत प्रभाव डालती है. दूध निकालने की प्रक्रिया 5-7 मिनिट में पूर्ण हो जानी चाहिए.वरना पशु दूध को रोक सकता है. इसलिए दूध दोहने में जो व्यक्ति पारंगत है उनसे ही दूध निकलवाना चाहिए. इससे पशु की वास्तविक दूध उत्पादन क्षमता का पता लगाया जा सकता है.
- गर्मियों में अधिक दूध देने वाले पशुओं का विशेष प्रबंध किया जाना चाहिए. गाय एवं भैसों को नहलाना, गौ शाला में ठंडा वातावरण रखना, सुबह और शाम को भोजन देना चाहिए. साइलेज का इस्तेमाल, भूसे का यूरिया उपचार किया जाना चाहिए जिससे उत्पादन को गिरने से बचाया जा सके.
- अच्छे दूध उत्पादन के लिये अच्छी प्रजनन क्षमता को बनाये रखना बहुत ही जरूरी है.

पशु की उत्पादन क्षमता छटवीं ब्यात तक होती है. आदर्श प्रजनन क्षमता एक बछड़ा/बछिया प्रतिवर्ष है. यदि प्रजनन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया तो किसान को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है.

दुधारू पशुओं के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए. संक्रामक रोगों का टीकाकरण समय रहते अवश्य कराना चाहिए. बाह्य एवं आंतरिक परजीवियों को दूर करने के लिए विशेष ध्यान रखना चाहिए. दुधारू पशुओं में थन एवं अयन की साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए.

वरना थनैला रोग होने की संभावना हमेशा बनी रहती है. थनैला रोग की जाँच स्ट्रिप कम विधि से समय-समय पर की जाना चाहिए. ग्रामीण परिवेश में साफ-सफाई पर ध्यान नहीं दिया जाता है, जिससे थनैला रोग होकर एक या दो थन खराब हो जाते हैं और किसानों को काफी आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है.

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शनै:-शनै: स्थिती पक्ष की बनने लगेगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। प्रेमभाव बढ़ेगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होगी। शुभांक-3-5-6

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रहें। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। शत्रुपक्ष पर आप हावी रहेंगे। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रखें। शुभांक-1-3-5

मिथुन (का की कू घ ड छ के को हा): कार्यारम्भ से पहले उचित मूल्यांकन कर लें। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर-प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। यात्रा का योग बनेगा। शुभांक-5-7-8

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): आध्यात्मिक रुचि बनेगी। प्रसन्नता के साथ सभी जरूरी कार्य बनते नजर आएंगे। मनोरथ सिद्धि का योग है। प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। हर्ष उल्लास के बीच अप्रत्याशित विघ्न पैदा होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। शुभांक-3-5-7

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। वाहन चालन में सावधानी बरतें। शुभांक-5-7-9

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): आवेश में आना आपके हित में नही होगा इसलिए व्यवहार व वाणी पर नियत्रंण रखें। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। हाथ-पैरों में पीड़ा हो सकती हैं। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। शुभांक-2-4-6

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। निर्मूल शंकाओं के कारण मनस्ताप भी पैदा हो सकते है। सुख-आनंद कारक समय है। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। मातृपक्ष के लोगों का सहयोग मिलेगा। शुभांक-3-5-6

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): मनोविनोद बढ़ेगे। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ होगा और पुराने मित्रों से समागम भी। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। शुभांक-6-8-9

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। रुका हुआ लाभ प्राप्त हो सकता है। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। शुभ कार्यों में प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। शुभांक-6-7-9

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): किसी से कहा सुनी न हो यही ध्यान रहे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। शुभांक-7-8-9

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। अर्थपक्ष मजबूत रहेगा। इच्छित कार्य सफल होंगें। शुभांक-2-5-7

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। जो चल रहा हैं उसे सावधानीपूर्वक संभालें। मायूस न हो समय चक्र हैं। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-1-3-5

काकुरो पहेली - 3128

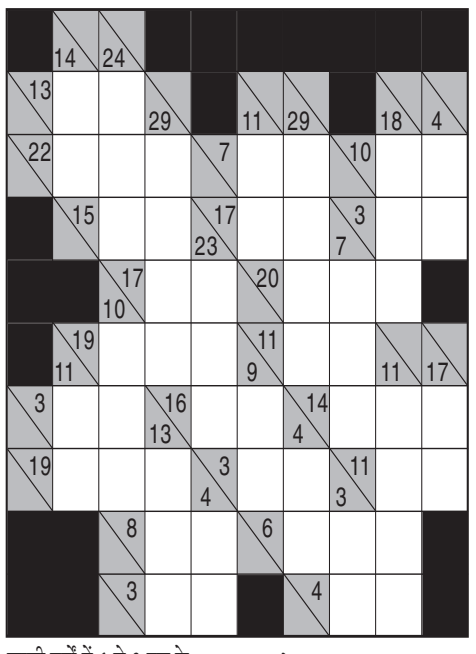

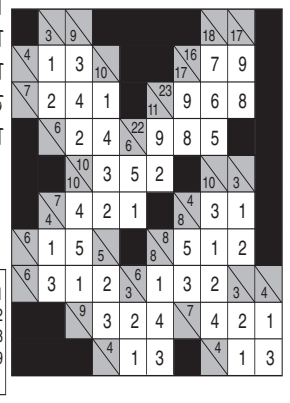

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

11 → 1 2 3 5 ; 7 ↑ 1 2 4

1+2+3+4+5+6=21
1+2+3+4+5+7=22
3+5+6+7+8+9=38
4+5+6+7+8+9=39

काकुरो - 3127 का हल

लॉफिंग ज़ोन

प्रेमी पति (पत्नी को खुश करने के लिए बोला)- डार्लिंग! अब झगड़ा बंद भी करो, मैं शांति के साथ रहना चाहता हूँ।

पत्नी- हाँ-हाँ, तो जाओ ना। रहो तुम अपनी शांति के साथ...! मैं भी अब अपने रमन के साथ रहना चाहती हूँ।

प्रेमी (पत्नी से)- आज तुम्हें मेरा बाँसुरी बजाना बुरा लगता है, लेकिन एक दिन मेरे बाँसुरी बजाने पर ही रीझ कर तुमने मुझसे शादी की थी।

पत्नी गुस्से से बोली- हाँ... की थी, लेकिन बाँसुरी बजाने पर रीझ कर नहीं, बल्कि यह सोच कर शादी की थी कि जिस तरह तुम बाँसुरी में फूँक मारते हो, उसी तरह मेरे घर का चूल्हा भी अच्छी तरह फूँकोगे।

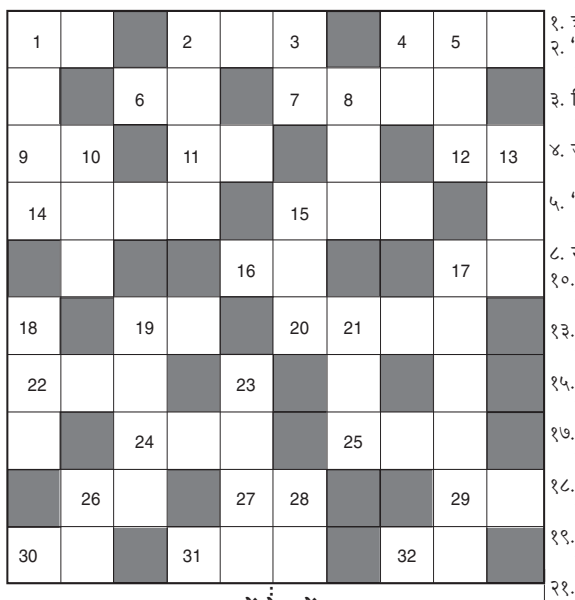

कवि (पत्नी से), ''तुम्हे पता होना चहिए कि मैं वीर रस का कवि हूं और लोग मेरे बारे कहते हैं कि मैं अपनी कविताओं से संसार में आग लगा सकता हूं।''

पत्नी, अब अपनी प्रशंसा करना बंद करें और प्लीज जरा चूल्हे में आग जला दें।

फिल्म वर्ग पहेली- 3128

बायें से दायें:-

१. 'बरसो रे मेघा' गीत वाली फिल्म-२
२. राजेशखन्ना, धर्मेन्द्र, वहीदा की फिल्म-३
४. 'नींद कभी रहती थी आँखों में' गीत वाली फिल्म-३
६. राज सोलंकी, हिना रहमान, पायल की फिल्म-२
७. 'कहना है जो दिल से कहो' गीत वाली फिल्म-४
९. संजीवकुमार, नूतन की फिल्म-२
११. 'हम और तुम तुम और' गीत वाली फिल्म-२
१२. अभिषेक, भूमिका की फिल्म-२
१४. 'कुछ लोग यहाँ पर ऐसे है' गीत वाली फिल्म-४
१५. मकरंद देशपांडे, शबाना, श्वेता की फिल्म-३
१६. 'जब आती होगी याद मेरी' गीत वाली फिल्म-२
१७. संजय कपूर, माधुरी की फिल्म-२
१९. 'ओ रूपनगर के सौदागर' गीत वाली फिल्म-२
२०. अनिल धवन, रेहाना की फिल्म-२,२
२२. 'पर्दे में रहने दो पर्दा ना' गीत वाली फिल्म-३
२४. सुनील दत्त, साधना की फिल्म-३
२५. 'दिल जंगली कबूतर' गीत वाली फिल्म-३
२६. अभिषेक, उदय, एशा की फिल्म-२
२७. 'शरमाए काहे घबराये' गीत वाली फिल्म-२
२९. आमिर, माधुरी दीक्षित की फिल्म-२
३०. 'लगन लागी मन की लगन' गीत वाली फिल्म-२
३१. फिल्म 'मनोरंजन' में नायिका कौन थी-३
३२. शाहरूख, प्रियंका चोपड़ा की फिल्म-२

ऊपर से नीचे:-

१. ऋषि, अनिल, श्रीदेवी की फिल्म-४
२. 'नील गगन पे उड़ते बादल आ' गीत वाली फिल्म-४
३. फिल्म 'मि. बॉण्ड' में अक्षयकुमार के साथ नायिका कौन थी-२
४. जीतेंद्र, रीना राय, रामेश्वरी की 'धक धक से धड़कना' गीत वाली फिल्म-२
५. 'सपनों का शहर हो' गीत वाली अरशद वारसी, महिमा चौधरी की फिल्म-३
८. सुष्मिता की पहली फिल्म?-३
१०. 'चूड़े वाली छमिया मिला नैन रे' गीत वाली सनी, जयाप्रदा की फिल्म-३
१३. विनोद खन्ना, बिन्दू की 'दिल करने लगा है प्यार तुम्हे' गीत वाली फिल्म-३
१५. 'जीना तेरी बाहों' गीत वाली सुनील शेट्टी, इंद्रकुमार, नम्रता की फिल्म-३
१७. प्रदीपकुमार, नर्गिस की 'दिल की गिरह खोल दो' गीत वाली फिल्म-२,२,२
१८. 'नजर के सामने जिगर' गीत वाली राहुल राय, अनु अग्रवाल की फिल्म-३
१९. ऋषिकपूर, जयाप्रदा की 'ढपली वाले ढपली बजा' गीत वाली फिल्म-४
२१. 'गोरी जो मटके बालों' गीत वाली सुनील, रवीना, करिश्मा, सोनाली की फिल्म-३
२३. राजेंद्र कुमार, राखी की 'तुम मेरी हो मेरे सिवा किसी' गीत वाली फिल्म-२,२
२६. 'हर एक घर में दिया' गीत वाली संजय सूरी, रेवती, गुल पनाग की फिल्म-२
२८. सनी, सलमान, करिश्मा, तब्बू की 'अभी सॉस लेने की' गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 3127

सूडोकु -3128

5	9			3			8	7
8	7		1		5			
		2			9			4
	6				2		3	5
3	8		4	1	7		2	9
2	4		6				1	
7			3			8		
			5		8		7	3
9	3			2			6	1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -3127 का हल

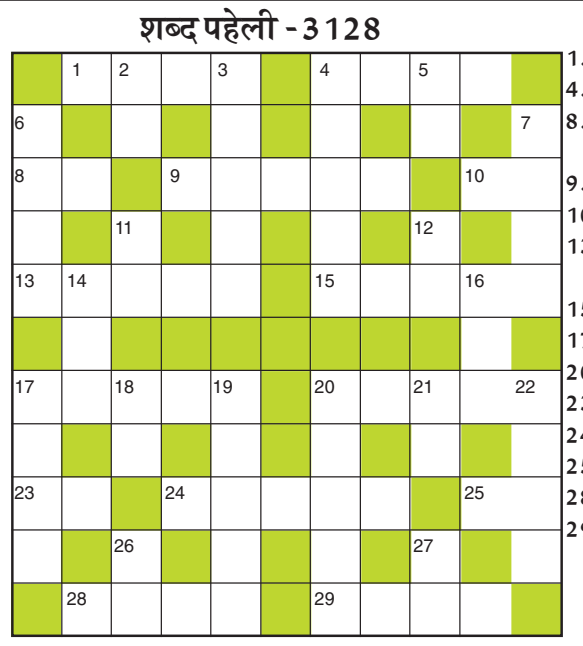

7	4	8	3	9	2	1	5	6
2	6	9	5	7	1	8	4	3
3	1	5	4	8	6	7	2	9
5	7	4	8	6	9	3	1	2
8	9	1	2	3	4	6	7	5
6	3	2	1	5	7	4	9	8
4	8	7	6	2	5	9	3	1
9	2	6	7	1	3	5	8	4
1	5	3	9	4	8	2	6	7

शब्द पहेली -3128

बाएँ से दाएँ

1.जानकारी-4
4.मांसाहार का उलट-4
8.'जुम्मा चुम्मा दे दे' गीत वाली फिल्म-2
9.कायाकल्प-5
10.पिता के छोटे भाई-2
13.कहानी लिखने वाला-5
15.नाम रखना-5
17.बेवक्त,अकाल-5
20.प्रयास,कोशिश-5
23.टोंटी,नलका-2
24.कामदेव,पुष्कर-2,3
25.डर,भय-4
28.शोर-शराबा-4
29.बेवफा,व्यभिचारी-4

ऊपर से नीचे

2.बिंदु,बिंदी,शून्य-2
3.गोलाकार-3
4.सम्मिलित होना-3,2
5.घाटा,नुकसान-2
6.मूर्ख,बेवकूफ-4
7.बिना कारण,बेवजह-4
11.राजा की पत्नी-2
12.वहम,संदेह-2
14.दुर्घटना-3
16.खाना बनाने की जगह,किचन-3
17.एकाएक, सहसा-4
18.अलमस्त-2
19.कमल ककड़ी, कमल डंडी-3,2
20.आरामदायी-5
21.सम्मान-2
22.भलमानसता-4
26.सद्,अच्छा-2
27.मृत्यु, प्रारब्ध, न्याय निर्णय-2

शब्द पहेली -3127 का हल

आईपीएल 2024 उद्घाटन समारोह में लगेगा बॉलीवुड का तड़का, हजारों फैंस की मौजूदगी में ये सेलेब्स बिखेरेंगे जलवा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दुनिया की सबसे मंहगी लीग यानी आईपीएल के 17वें सीजन का आगाज 22 मार्च को होगा। इस सीजन का पहला मुकाबला चेन्नई सुपर किंग्स और रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु के बीच चेन्नई के चेपॉक स्टेडियम में खेला जाएगा। लेकिन इससे पहले भव्य ओपनिंग सेरेमनी का आयोज किया जाएगा। जहां बॉलीवुड के कई बड़े सितारे एंटरटेनमेंट का तड़का लगाएंगे। बीसीसीआई शानदार ओपनिंग शो करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता है।

मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो, आईपीएल 2024 की ओपनिंग सेरेमनी में बॉलीवुड की कई बड़ी हस्तियां पहुंच सकती है। अक्षर कुमार- टाइगर श्रॉफ स्पेशल परफॉर्मेंस कर सकते हैं। इसके अलावा एआर रहमान और सोनू निगम भी अपनी आवाज का जादू बिखेर सकते हैं। हालांकि, बोर्ड की तरफ से कोई जानकारी सामने नहीं आई है।

कब और कहां देख सकेंगे ओपनिंग सेरेमनी?

आईपीएल 2024 का उद्घाटन समारोह 22 मार्च को शाम 6.30 बजे से शुरू होगा। ओपनिंग सेरेमनी की सीधा प्रसारण स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क पर किया जाएगा। साथ ही जियो सिनेमा ऐप और वेबसाइट पर भी लाइव स्ट्रीमिंग की जाएगी।

सीएसके/आरसीबी के बीच पहला मैच

आईपीएल 2024 का पहला मुकाबला गत चैंपियन चेन्नई सुपर किंग्स और रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु के बीच एमए चिदंबरम स्टेडियम में खेला जाएगा। फैंस इस मैच को लेकर काफी उत्साहित हैं।

भारत 2036 ओलंपिक की मेजबानी के लिए तैयार : अनुराग ठाकुर

नई दिल्ली (एजेंसी)। खेल और युवा कार्य मंत्री अनुराग ठाकुर ने बुधवार को कहा कि भारत 2030 युवा ओलंपिक और 2036 ओलंपिक की मेजबानी की कोशिश में कोई कसर नहीं छोड़ेगा। ठाकुर ने कहा कि मेजबानी की दावेदारी के लिए आमंत्रण के साथ ही भारत इसकी मेजबानी के लिए तैयार होगा।

भाजपा के वरिष्ठ नेता ने कहा, 'भारत 2030 युवा ओलंपिक और 2036 ओलंपिक की मेजबानी के लिए तैयार है।' उन्होंने कहा, 'हम दुनिया की पांचवें सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और हमारे पास युवाशक्ति है। खेलों के लिए भारत से बड़ा बाजार नहीं है।'

उन्होंने बताया कि भारत और इंग्लैंड के बीच पांचवां टेस्ट देखने ब्रिटेन से करीब 4000 क्रिकेटप्रेमी धर्मशाला पहुंचे थे और उन्होंने स्टेडियम की तारीफ भी की। पेरिस ओलंपिक 2024 के बाद 2028 ओलंपिक लॉस एंजीलिस में और 2032 ओलंपिक ब्रिसबेन में खेले जाएंगे।

हसरंगा संन्यास से वापसी करते ही दो मैचों से निलंबित हुए

ढ़ाका (एजेंसी)। श्रीलंकाई स्पिनर वानिंदु हसरंगा संन्यास से वापसी के बाद भी अगले दो मैच नहीं खेल पायेंगे। इसका कारण ये है कि उन्हें अंपायर ने खराब व्यवहार के लिए निलंबित कर दिया है। हसरंगा को श्रीलंकाई क्रिकेट बोर्ड ने टीम की गेंदबाजी बेहतर करने के लिए संन्यास से वापसी के बाद तत्काल टीम में शामिल किया था पर उनके निलंबित होने से उसे झटका लगा है। अंपायर ने इस क्रिकेटर को दो मैचों से निलंबित कर दिया है।

श्रीलंका को मेजबान बांग्लादेश के हाथों एकदिवसीय सीरीज में 2-1 से हार का सामना करना पड़ा है। श्रीलंका ने इस हार के बाद टेस्ट टीम के लिए इस स्पिनर को शामिल किया। इस क्रिकेटर ने हाल ही में सीमित ओवरों के क्रिकेट पर ध्यान देने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी थी। हसरंगा पर बांग्लादेश के खिलाफ तीसरे एकदिवसीय मैच में अंपायर से बदतमीजी करने के आरोप में आधी मैच फीस काट ली गई और तीन नकारात्मक अंक दिया गया। इस तरह हसरंगा के एक साल के भीतर 8 नकारात्मक अंक हो गए। आईसीसी के नियम के मुताबिक अगर किसी खिलाड़ी के एक साल के भीतर 8 नकारात्मक अंक हो जाते हैं तो वह स्वयं ही 2 टेस्ट या 4 एकदिवसीय या 4 टी20 मैच के लिए निलंबित हो जाता है।.

हसरंगा के पास सजा के खिलाफ अपील करने का विकल्प खुला है। अगर आईसीसी हसरंगा की अपील ठुकरा देती है तो इसका मतलब यह होगा कि वे टेस्ट सीरीज नहीं खेल पाएंगे। वहीं अगर हसरंगा श्रीलंका-बांग्लादेश सीरीज में नहीं खेलते हैं तो आईपीएल में अपनी टीम सनराइजर्स हैदराबाद से खेल सकते हैं।

तेंदुलकर, गावस्कर, और रिचर्ड्स से भी बेहतर बल्लेबाज हैं विराट : सिद्धू

मुम्बई (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर नवजोत सिंह सिद्धू ने विराट कोहली की जमकर प्रशंसा करते हुए उन्हें महानतम बल्लेबाज बताया है। यहां तक कि सिद्धू ने विराट को सचिन तेंदुलकर, सुनील गावस्कर और सर विव रिचर्ड्स से भी बेहतर बल्लेबाज करार दिया। उनका कहना है कि विराट ने अपने को तीनों ही प्रारुपों के अनुसार ढ़ाला है। सिद्धू ने साथ ही कहा कि विराट दुनिया के महानतम खिलाड़ी हैं पर इसके बाद भी अगर वह एक बार भी अपनी टीम आरसीबी को आईपीएल में खिताब नहीं दिला पाये हैं। ये उनके लिए एक धब्बे की तरह है। है। आप इसे मिटाना चाहेंगे हालांकि यह उनके लिए किसी भी तरह से नुकसानदेह नहीं है, क्योंकि उन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया है और आप इसे देख सकते हैं।

सिद्धू ने ये भी कहा कि मैंने उन्हें अब तक का सर्वश्रेष्ठ भारतीय बल्लेबाज पाया है। ऐसे भी युग थे जब मैं अपना ट्रांजिस्टर लगाता था और सुनील गावस्कर को वेस्टइंडीज के खिलाफ बल्लेबाजी करते हुए सुनता था, वह 70 का दशक है। वेस्टइंडीज के महान तेज गेंदबाज को सुनना कि वह कैसे बिना हेलमेट के बल्लेबाजी करते थे। वह उनका युग था। वह लगभग 15-20 वर्षों तक हावी रहे। फिर तेंदुलकर आए और एक और नये युग की शुरूआत हुई। फिर धोनी आए और फिर विराट। यदि आप चारों को देखें , मैं उसे सर्वश्रेष्ठ मानूंगा क्योंकि उसने तीनों प्रारूपों के अनुरुप अपनरे को ढाला है। सिद्धू ने कोहली की फिटनस की तारीफ की। उन्होंने कहा कि वह तकनीकी क्षमता में श्रेष्ठ हैं साथ ही फिटनेस में भी। यदि आप चारों क्रिकेटरों को देखें, तो वह सबसे फिट हैं। तेंदुलकर को अपने करियर के बाद के चरणों में समस्याएं थीं। हालांकि धोनी अभी फिट हैं पर विराट सुपर फिट है। यह उसे एक स्तर तक ऊपर उठाता है

आरसीबी आईपीएल में नये नाम, जर्सी और लोगों के साथ उतरेगी

बेंगलुरु । रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) अब आईपीएल के 2024 सत्र में नये नाम , जर्सी और लोगों के साथ उतरेगी । एक कार्यक्रम में विराट कोहली, फाफ डू प्लेसी और महिला क्रिकेटर स्मृति मंधाना ने आरसीबी के नए नाम, लोगो और जर्सी का अनावरण किया । फाफ डू प्लेसी की कप्तानी में उतरने जा रही आरसीबी की टीम अब नाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के नाम से जानी जाएगी। आरसीबी इस लीग में नाम बदलने वाली तीसरी टीम है । इससे पहले दिल्ली कैपिटल्स और पंजाब किंग्स की टीमों ने भी अपने नाम बदले थे। हालांकि, नाम बदलने के बाद भी ये टीम जीत हासिल नहीं कर पायीं थीं । अब देखना है कि आरसीबी के लिए नया नाम कितना फायदेमंद रहता है । आरसीबी की टीम उन 8 टीमों में से एक हैं, जो आईपीएल के पहले सीजन से खेल रही हैं । 16 साल के आईपीएल के अपने सफर में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर की टीम तीन बार फाइनल में पहुंची थी पर एक बार भी जीत दर्ज नहीं कर पायी । कोहली ने सबसे अधिक 143 मैचों में आरसीबी की कप्तानी की है । उन्होंने दो बार टीम को फाइनल में पहुंचाया पर ट्रॉफी नहीं जीत पाये । वहीं फाफ डू प्लेसी लगातार तीसरे सीजन में आरसीबी की कप्तानी करेंगे । उनकी कप्तानी में आरसीबी ने 27 मैच खेले हैं, जिनमें से उसे 14 में ही जीत मिली है । मंधाना की कप्तानी में आरसीबी ने महिला प्रीमियर लीग खिताब जीता है ।

आईसीसी रैंकिंग : राशिद खान की शीर्ष 10 में वापसी, सूर्यकुमार अभी भी टॉप पर

दुबई (एजेंसी)। चोट से टीम में वापसी करने के बाद अफगानिस्तान के लेग स्पिनर राशिद खान ने आयरलैंड के खिलाफ हाल ही में समाप्त हुई श्रृंखला में मजबूत प्रदर्शन के बाद टी20आई गेंदबाजी रैंकिंग में शीर्ष 10 में फिर से प्रवेश कर लिया है। आईसीसी द्वारा अपडेट की गई रैंकिंग में राशिद चार पायदान ऊपर चढ़कर नौवें स्थान पर पहुंच गए। वह आयरलैंड सीरीज में प्लेयर ऑफ द सीरीज रहे थे जिसे अफगानिस्तान ने 2-1 के अंतर से जीता था। 25 वर्षीय खिलाड़ी ने तीन मैचों में 5.62 की औसत से 8 विकेट लिए। 2023 विश्व कप के दौरान लगी पीठ की चोट से उबरने के बाद यह किसी भी प्रारूप में उनकी पहली श्रृंखला थी। राशिद के साथी नवीन-उल-हक (दो स्थान ऊपर 55वें स्थान पर) ने आयरलैंड श्रृंखला के दौरान अपने तीन विकेटों के बाद कुछ बढ़त हासिल की जबकि आयरिश तिकड़ी जोश लिटिल (सात स्थान ऊपर 39वें), मार्क अडायर (दो स्थान ऊपर 56वें) और बैरी मैक्कार्थी (15 स्थान ऊपर 77वें स्थान पर) ने भी अपनी टी20आई गेंदबाज रैंकिंग में सुधार किया जिसका नेतृत्व इंग्लैंड के स्पिनर आदिल राशिद कर रहे हैं। भारत के कप्तान रोहित शर्मा बुधवार को आईसीसी वनडे बल्लेबाजी रैंकिंग में चौथे स्थान पर आ गए हैं। रोहित 746 रेटिंग अंकों के साथ चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं और अपने साथियों विराट कोहली (768 अंक) और शुबमन गिल (801 अंक) से पीछे हैं। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान बाबर आजम 824 अंकों के साथ रैंकिंग में शीर्ष पर हैं। टेस्ट रैंकिंग की बात करें तो भारत के स्टार गेंदबाज जसप्रीत बुमराह कुल 847 अंकों के साथ दूसरे से तीसरे स्थान पर आ गए हैं। हालांकि ऑस्ट्रेलिया के दाएं हाथ के तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड के भी बराबर अंक हैं, लेकिन उनका इकॉनमी रेट बेहतर है। भारतीय बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव ने कुल 861 अंकों के साथ टी20आई बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर अपना दबदबा कायम रखा।

मुझे किंग न कहें प्रशंसक : विराट

बेंगलुरु । अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली ने अपने प्रशंसकों से कहा है कि उन्हें किंग न कहें । विराट ने स्टेडियम में एकत्रित प्रशंसकों से कहा कि उन्हें इससे शर्मिंदगी होती है । इसके बाद प्रशंसकों ने कोहली–कोहली के नारे लगाने शुरू कर दिए । इस दौरान विराट ने कहा कि क्रिकेट के मैदान पर वापसी से उन्हें अच्छा लग रहा है । उत्साहित कोहली ने प्रशंसकों से मजाकिया लहजे में कहा कि मुझे बात करने दीजिए । दोस्तों, हमें आज रात चेन्नई जाना है, हमारे पास एक चार्टर्ड फ्लाइट है इसलिए हमारे पास समय नहीं है । कोहली ने कहा कि सबसे पहले, आप मुझे किंग बोलना बंद करेंद्य । मुझे विराट कहकर ही बुलाएं । मुझे किंग नाम से मत बुलाएं, मैं फाफ डु प्लेसिस से भी कह रहा था कि जब आप मुझे इस शब्द से बुलाते हैं तो मुझे हर बार अजीब सा लगता है। इसलिए मुझे केवल विराट कहकर बुलाएं, अब से उस शब्द का इस्तेमाल न करें, यह मेरे लिए बहुत शर्मनाक है । विराट ने इससे पहले भी कई बार गया है कि उन्हें किंग न कहें। पिछले साल आरसीबी के शो में उन्होंने कहा था कि भले ही यह सुंदर शब्द है । मैं जानता हूं कि प्रशंसक ऐसा क्यों कह रहे हैं पर मुझे यह पसंद नहीं है । मुझे अपने ही नाम से बुलाया जाना पसंद है, विराट । उन्होंने कहा कि लोग प्यार से मुझे किंग कहते हैं परमैं निजी तौर पर इसे पसंद नहीं करता ।

भारतीय हॉकी टीमें एफआईएच हॉकी5 रैंकिंग में दूसरे स्थान पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय पुरूष और महिला हॉकी टीमें अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ द्वारा पहली बार जारी हॉकी5 रैंकिंग में दूसरे स्थान पर है। भारतीय पुरूष टीम ओमान और मलेशिया के साथ दूसरे स्थान पर है। तीनों टीमों के 1400 अंक है। भारत ने एशियाई चैम्पियनशिप जीती और मस्कट में जनवरी में हुए विश्व कप में पांचवें स्थान पर रहा था।

वहीं ओमान ने कांस्य पदक जीता था। नीदरलैंड 1750 अंक के साथ शीर्ष पर है जिसने पहला हॉकी5 विश्व कप और यूरोपीय चैम्पियनशिप जीती थी। पोलैंड और मिस्र संयुक्त पांचवें स्थान पर है। त्रिनिदाद और टोबैगो और कीनिया संयुक्त सातवें स्थान पर है जबकि पाकिस्तान नौवे स्थान पर है।

महिला रैंकिंग में नीदरलैंड शीर्ष पर है जिसने विश्व कप में स्वर्ण पदक जीता था। इसके साथ ही यूरोपीय चैम्पियनशिप भी अपने नाम की थी। रजत पदक विजेता भारत दूसरे स्थान पर है जबकि पोलैंड तीसरे स्थान पर है। उरूग्वे और दक्षिण अफ्रीका संयुक्त चौथे स्थान पर है।

पेरिस ओलंपिक के उद्घाटन समारोह में भाग नहीं ले सकेंगे रूस और बेलारूस के खिलाड़ी

जिनेवा । रूस और बेलारूस के खिलाड़ी पेरिस ओलंपिक के उद्घाटन समारोह में पारंपरिक परेड में भाग नहीं ले सकेंगे। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने यह जानकारी दी । ओलंपिक का उद्घाटन समारोह 26 जुलाई को है जिसमें हजारों खिलाड़ी सीन नदी से एफील टावर की तरफ नावों से आएंगे जबकि आम तौर पर परेड स्टेडियम में होती है । आईओसी ने कहा कि रूस और बेलारूस के खिलाड़ी नदी के किनारे समारोह देख सकेंगे । उन्हें तटस्थ खिलाड़ियों के तौर पर ओलंपिक में खेलने की अनुमति मिली है । इससे पहले अंतरराष्ट्रीय पैरालम्पिक समिति ने 28 अगस्त को पेरिस पैरालम्पिक के उद्घाटन समारोह में रूस और बेलारूस के खिलाड़ियों पर प्रतिबंध की घोषणा की थी । यूक्रेन में जारी जंग के कारण दोनों देशों को ओलंपिक में टीम स्पर्धाओं में भाग नहीं लेने दिया जाएगा । वहीं व्यक्तिगत वर्ग में खिलाड़ी तटस्थ तौर पर खेलेंगे बशर्ते उन्होंने यूक्रेन में जारी युद्ध का समर्थन नहीं किया हो या सेना या सुरक्षाबलों से जुड़े नहीं हों । रूसी पासपोर्ट धारक 36 और बेलारूस के 22 खिलाड़ियों ने पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई किया है ।

राहुल आईपीएल में अच्छा खेलता है तो टी20 विश्व कप टीम में जगह पक्की: जस्टिन लैंगर

नई दिल्ली (एजेंसी)। लखनऊ सुपर जाइंट्स के मुख्य कोच जस्टिन लैंगर का मानना है कि अगर केएल राहुल टीम को पहला आईपीएल खिताब दिला पाते हैं तो टी20 विश्व कप के लिए भारतीय टीम में उनकी जगह तय होनी चाहिए। जांघ की मांसपेशियों की चोट से उबरकर वापसी कर रहे राहुल शायद आईपीएल में विकेटकीपिंग नहीं करेंगे। उनका भारत की टी20 टीम में चयन तय नहीं है लिहाजा उन्हें आईपीएल में बल्लेबाजी में और विकेट के पीछे अच्छा प्रदर्शन करना होगा।

यह पूछने पर कि कप्तानी की निजी आकांक्षाओं और टीम के हितों में संतुलन कैसे बनाएंगे, लैंगर ने कहा कि यह मुश्किल नहीं है। उन्होंने कहा, 'अगर टीम अच्छा करती है तो हर किसी को ईनाम मिलता है। केएल अगर लखनऊ टीम को आईपीएल खिताब दिलाते हैं तो इसका मतलब होगा कि उन्होंने अच्छी कप्तानी, अच्छी बल्लेबाजी और अच्छी विकेटकीपिंग की है।'

राहुल के अलावा लखनऊ के लेग स्पिनर रवि बिश्नोई भी चयन की दौड़ में हैं। लैंगर ने कहा, 'केएल या बिश्नोई के लिए साफ संदेश है कि लखनऊ टीम के लिए अच्छा खेलने पर फोकस करें, टी20 विश्व कप टीम में जगह पाने के मौके बढेंगे।' लखनऊ टीम के पूर्व मेंटोर गौतम गंभीर अब केकेआर से जुड़ गए हैं। यह पूछने पर कि क्या टूर्नामेंट के दौरान उनसे टक्कर देखने को मिल सकती है, लैंगर ने कहा कि वह टीम के लिये गंभीर के योगदान के प्रशंसक हैं।

उन्होंने कहा, 'कोई टक्कर नहीं होगी। उनके टीम छोड़ने से मैं दुखी हूं लेकिन वह केकेआर का असली नायक है। हम दोनों अच्छे दोस्त रहे हैं। दिल्ली कैपिटल्स के कोच रिकी पोंटिंग भी मेरे दोस्त हैं। सीएसके के स्टीफन फ्लेमिंग और माइक हस्सी भी मेरे दोस्त हैं।'

धोनी के लिए क्रिकेट महत्वपूर्ण है लेकिन सब कुछ नहीं : पूर्व तेज गेंदबाज जहीर खान

मुम्बई । वर्षों की महनत के बाद महेंद्र सिंह धोनी ने अपनी खुद की एक विरासत बनाई है । 2011 में भारत को वनडे विश्व कप जिताने से लेकर चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के साथ पांच इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) खिताब जीतने तक, रांची में जन्मे क्रिकेटर ने खेल को अपना सब कुछ दिया है । हालांकि भारत के पूर्व तेज गेंदबाज जहीर खान का मानना है कि धोनी जैसे स्थापित और प्रसिद्ध खिलाड़ी के लिए क्रिकेट महत्वपूर्ण है, लेकिन यह उनके लिए सब कुछ नहीं है । जहीर ने कहा, 'जब आप खेल रहे हों, तो (खेल से) स्विच ऑफ करना बहुत महत्वपूर्ण है । क्रिकेट ही सब कुछ नहीं है । हर क्रिकेटर को अंतत: इसका सामना करना पड़ता है । जब आप खेल से दूर हो जाते हैं तो आपके पास बहुत सारे विकल्प नहीं होते हैं । हमने कई एथलीटों को रिटायर होने के बाद संघर्ष करते देखा है क्योंकि उन्होंने खेल को अपना सब कुछ दे दिया, और जब उन्होंने इसे छोड़ा, तो उन्हें नहीं पता था कि क्या करना है ।' जहीर ने धोनी की बाइक्स में रुचि पर भी गौर किया । उन्होंने कहा, 'इस अर्थ में एमएस धोनी को बहुत पहले ही समझ आ गया था कि उन्हें क्रिकेट का शौक है और यह उनके जीवन का अभिन्न अंग है । लेकिन यह सब कुछ नहीं हो सका । वह खेल से बाहर की चीजें करता रहता है । मसलन, बाइक्स में उनकी दिलचस्पी । वह हमेशा उन पर शोध करते रहते हैं ।'

नीरज चोपड़ा ने जताई हैरानी, बोले विश्वास करना मुश्किल हो रहा है कि पाकिस्तान के नदीम को नया भाला नहीं मिल पा रहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओलंपिक चैंपियन नीरज चोपड़ा ने सोमवार को उस समय आश्चर्य व्यक्त किया जब उन्हें पता चला कि उनके मैदान पर प्रतिद्वंद्वी और पाकिस्तान के दोस्त अरशद नदीम एक नया भाला हासिल करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। नदीम ने कुछ हफ्ते पहले कहा था-'यह अब उस स्तर पर पहुंच गया है जहां भाला क्षतिग्रस्त हो गया है और मैंने राष्ट्रीय महासंघ और अपने कोच से पेरिस ओलंपिक से पहले इसके बारे में कुछ करने के लिए कहा है। जब मैंने 2015 में अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेना शुरू किया तो मुझे यह भाला मिला... ओलंपिक खेलों में पदक जीतने का लक्ष्य रखने वाले एक अंतरराष्ट्रीय एथलीट के लिए, आपको उचित उपकरण और प्रशिक्षण सुविधाओं की आवश्यकता होती है।'

नीरज चोपड़ा ने जताई हैरानी

मैदान के बाहर नदीम के साथ अच्छा रिश्ता साझा करने वाले चोपड़ा ने कहा कि यह विश्वास करना वाकई मुश्किल है कि पाकिस्तानी एथलीट को नए भाले के लिए इतना संघर्ष करना पड़ रहा है। नीरज चोपड़ा ने सोमवार को स्र्द्ध मीडिया से कहा- 'यह विश्वास करना कठिन है कि वह एक नया भाला पाने के लिए संघर्ष कर रहा है। उनकी गेम को देखते हुए, यह बिल्कुल भी बड़ा मुद्दा नहीं होना चाहिए।'

चोपड़ा ने आगे कहा- 'ऐसा नहीं हो सकता कि नदीम के पास भाला खरीदने का साधन न हो। वह एक चैंपियन हैं और कुछ ब्रांड एंडोर्समेंट कर रहे होंगे। मुझे लगता है उसने थोड़ा पैसा भी कमाया है। लेकिन यह कहने के बाद, उनकी सरकार अरशद नदीम की ज़रूरत को देख सकती है और उनका समर्थन कर सकती है जैसे मेरी सरकार ऐसा कर रही है।'

वह एक शीर्ष जेवलिन थ्रोअर है

'इसके अलावा, नीरज ने कहा- अरशद नदीम एक शीर्ष भाला फेंकने वाला खिलाड़ी है और मेरा मानना है कि भाला निर्माता उसे प्रायोजित करने और वह जो चाहते हैं उसे प्रदान करने में बहुत खुश होंगे। यह मेरी तरफ से एक सलाह है।' इतना ही नहीं, नदीम 90.18 मीटर थ्रो के साथ, 27 वर्षीय पाकिस्तानी ने खिताब का दावा करने के लिए बर्मिंघम में 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में भाला फेंक का एक नया रिकॉर्ड बनाया था। इससे राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक के लिए पाकिस्तान का 60 साल का

इंतजार खत्म हो गया। नदीम ने दिसंबर 2022 में यूके में कोहनी का ऑपरेशन कराया था। पिछले साल, उन्होंने फिर से घुटने की सर्जरी करवाई और हांग्जो एशियाई खेलों में हिस्सा नहीं लिया, जहां चोपड़ा ने स्वर्ण पदक जीता था।

मुम्बई इंडियंस को एक और झटका सूर्यकुमार भी पहले मैच से बाहर हुए

मुम्बई । मुम्बई इंडियंस को आईपीएल 2024 शुरु होने से पहले ही एक और झटका लगा है । आक्रामक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव भी अब शुरुआती मैच में नहीं उतरेंगे । सूर्यकुमार को नेशनल क्रिकेट एकेडमी (एनसीए) से फिटनेस जांच में खेलने की मंजूरी नहीं मिली है। इससे टीम के नये कप्तान हार्दिक पंड्या की मुश्किलें बढ़ गयी हैं । एक रिपोर्ट के अनुसार सूर्याकुमार की एक और फिटनेस जांच अब 21 मार्च को होगी। मुंबई को अपना पहला मैच गुजरात टाइटंस के खिलाफ 24 मार्च को खेलना है । इसमें अब ऑस्ट्रेलिया के जेसन बेहरनडॉर्फ के अलावा श्रीलंकाई क्रिकेटर दिलशान मधुशंका भी नहीं खेलेंगे ।

महिला को भगाकर ले जाने पर पेशाब पिलाई, फिर प्रेमिका से चप्पल से पिटवाया

-आधी मूंछ काटी और गंजा करके पूरे गांव में घुमाया

उज्जैन। प्रदेश में एक युवक को शराब पिलाने का मामला सामने आया है। उज्जैन में शादीशुदा महिला को भगाकर ले जाने पर लोगों ने एक युवक को पेशाब पिला दी। प्रेमिका के हाथों से ही उसे चप्पल से पिटवाया। महिला और युवक दोनों ही बंजारा समाज के है। समाज के लोगों ने युवक की आधी मूंछ काटी और गंजा करके गांव में घुमाया। वही महिला की भी पिटाई कर दी। समाज के ही ग्रुप पर इसके वीडियो वायरल हुए, तब कहीं जाकर पुलिस तक मामला पहुंचा। मामला घट्टिया थाना क्षेत्र का है। घटना चार दिन पुरानी है। पुलिस बुधवार सुबह आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पहुंची, लेकिन सभी मजदूरी के लिए गए हुए थे । युवक-महिला दोनों घट्टिया थानाक्षेत्र के भीलखेड़ी गांव के रहने वाले हैं। युवक भी शादीशुदा है। महिला के दो बच्चे हैं। परिवार और गांव के लोग दोनों को राजस्थान से पकड़कर भीलखेड़ी लाए। लोगों ने उसे पेड़ से बांधकर जूते-चप्पल की माला पहनाई। उसका और परिवार का नाम पूछते हुए मुंह में जूते ठूंसे। आरोपियों ने युवक को जूते-चप्पल की माला पहनाकर घुमाया। वीडियो में लोग युवक से सिर पर जूता रखने के लिए भी कह रहे हैं। जिस महिला को वह भगा ले गया था, उसे बुलाकर चप्पलों से पिटवाया, बाद में महिला को भी पीटा गया। एडिशनल एसपी नितेश भार्गव ने बताया कि मामला संज्ञान में आया है। किसी ने भी अभी तक शिकायत दर्ज नहीं कराई है। वीडियो के आधार पर आरोपियों का पता लगाकर कार्रवाई करेंगे।

10 महीना में 38 फ़ीसदी घट गया विदेशी निवेश

मुंबई। पिछले 10 माह में भारत का विदेशी निवेश लगातार घटता चला जा रहा है। पिछले 10 महीना के दौरान देश में 1.27 लाख करोड रुपए का शुद्ध प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भारत आया है। 1 साल पहले इसी अवधि में यह 2.5 लाख करोड रुपए था। पिछले वर्ष की तुलना में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में लगभग 38 फ़ीसदी की कमी आई है। इसी बीच भारत से विदेश में निवेश करने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। रिजर्व बैंक ने मंगलवार को जो बुलेटिन जारी किया है। उसके अनुसार भारतीय कंपनियों ने विदेशों में 83000 करोड रुपए का निवेश किया है। भारतीय कंपनियों का विदेश में निवेश लगातार बढ़ रहा है। वहीं भारत में विदेशी निवेश कम हो रहा है। रिजर्व बैंक इसको लेकर चिंतित है। रिजर्व बैंक का मानना है, कि वैश्विक मंदी के कारण भारत में विदेशी निवेश घट रहा है।

एल्विश यादव को रिमांड पर ले सकती है पुलिस,सोशल मीडिया पर खंगाला जा रहा कंटेंट

नोएडा। यूट्यूबर एल्विश यादव की मुश्किलें कम नहीं हो रहीं है। पुलिस यादव के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के कंटेंट को खगाल कर सबूत जुटा रही है। संभावना हैं कि पुलिस एलविश को रिमांड पर लेने के लिए आवेदन कर सकती है। जानकारी के मुताबिक, आईटी एक्सपर्ट की एक टीम उसके सोशल मीडिया अकाउंट को खंगाल रही है। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और अन्य जगहों पर अपलोड वीडियो को जांच की जा रही है। इन सबका ब्योरा पुलिस अपनी केस डायरी में दर्ज कर रही है। इसके बाद चार्जशीट दाखिल की जाएगी। इसके साथ-साथ पुलिस रेव पार्टी के आयोजकों का ब्यौरा भी जुटा रही है और ये भी पता लगा रही है की इन पार्टियों में कौन-कौन आता था। सोशल मीडिया पर एल्विश यादव की फॉलोइंग बहुत ज्यादा है और उसके फॉलोअर्स और फैंस लगातार सोशल मीडिया पर मैसेज कर रहे हैं। कई बार वे अपनी भड़ास पुलिस पर निकलते भी दिखाई देते हैं। सोशल मीडिया पर एल्विश ने अपना सफर 2016 में शुरू किया था और अब उसके 1.49 करोड़ सब्सक्राइबर्स हैं। अपने वीडियो को हिट करने के लिए उसने कई तरह की चीजों का इस्तेमाल करता था। इनमें लग्जरी गाड़ियां, लोकेशन और जीव-जंतु भी होते थे। उसने सांप और विदेशी लड़कियों के साथ भी कई वीडियो अपने सोशल मीडिया पर डाले हुए हैं।सूत्रों की मानें तो जल्द ही पुलिस एल्विश की रिमांड के लिए भी आवेदन कर सकती है, जिन जगहों पर एलविश रेव पार्टी किया करता था उन जगहों पर भी पुलिस उसे ले जा सकती है। इसके साथ- साथ इस केस में पकड़े गए अन्य लोगों से आमना-सामना कराकर भी एक बार फिर पूछताछ हो सकती है। दूसरी तरफ गुड़गांव पुलिस भी एल्विश को वहां दर्ज केस के सिलसिले में रिमांड पर लेने की तैयारी कर रही है। एलविश को ग्रेटर नोएडा के लुक्सर जेल की हाई सिक्योरिटी बैरेक में शिफ्ट करने के पीछे भी एक बड़ी वजह बताई जा रही है। सूत्रों ने बताया है कि जेल में भी कई कुख्यात गैंग के बदमाश बंद है जिसके चलते एल्विश को हाई सिक्योरिटी बैरक में रखा गया है।

झारखंड के चतरा में सीआरपीएफ के जवान ने खुद को गोली मारी, मौत

चतरा। झारखंड के चतरा जिले में बुधवार को केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल के 32 वर्षीय जवान ने अपनी सरकारी राइफल से कथित तौर पर खुद को गोली मारकर जान दे दी। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। यह घटना झारखंड की राजधानी रांची से करीब 200 किलोमीटर दूर वशिष्ठ नगर इलाके में सीआरपीएफ की 190 बटालियन की चौकी पर हुई। घटना की पुष्टि करते हुए सीआरपीएफ की 190 बटालियन के कमांडेंट मनोज कुमार ने बताया कि मृतक जवान के परिजनों को घटना की जानकारी दे दी गई है। मृतक की पहचान निहाल सिंह के तौर पर हुई है जो बल में चालक के पद पर तैनात था। कुमार ने बताया कि राजस्थान के दौसा का निवासी सिंह तीन फरवरी को छुट्टी से लौटा था। उन्होंने कहा कि सिंह 2015 में सीआरपीएफ में शामिल हुआ था और 2022 में 190 बटालियन में आया था। इस बीच पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस ने कहा कि कथित खुदकुशी का सटीक कारण फिलहाल पता नहीं चल सका है।

गंभीर रूप से घायल अभिनेत्री अरुंधति को इलाज के लिए आर्थिक मदद की जरूरत : परिवार

बेंगलुरु (कर्नाटक)। छह दिन पहले एक सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हो गईं अभिनेत्री अरुंधति नायर की सर्जरी के लिए आर्थिक मदद की जरूरत है। अरुंधति की दोस्त और अभिनेत्री राम्या जोसफ ने बुधवार को यह बात कही। राम्या ने बताया कि अरुंधति 14 मार्च की रात को तिरुवनंतपुरम में अपने भाई के साथ एक बाइक पर घर लौट रही थीं तभी रास्ते में एक ऑटो ने उन्हें टक्कर मार दी। राम्या ने बताया कि उन्हें तत्काल अनंतपुरी अस्पताल ले जाया गया जहां अरुंधति के भाई को मामूली चोट के उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई। अभिनेत्री ने कहा कि अरुंधति के अस्पताल में होने और इलाज के लिए पैसों की जरूरत होने की खबर सोशल मीडिया पर फैलने के बाद भी तमिल फिल्म उद्योग से किसी ने उनकी मदद के लिए हाथ नहीं बढ़ाया है। राम्या ने कहा, 'अरुंधति ने तमिल में पांच फिल्मों में शीर्ष किरदार अदा किया है। वह इतनी गंभीर रूप से घायल हो गईं कि कल तक डॉक्टरों को संदेह था कि वह दिमागी रूप से मृत हो सकती हैं। फिर भी, तमिल फिल्म जगत से किसी ने संपर्क नहीं किया। मुझे पता है कि ऐसा जरूरी नहीं है, लेकिन अगर कोई फोन करता और उनका हालचाल पूछता तो अच्छा लगता, आर्थिक मदद की बात तो भूल जाइए।' राम्या ने कहा कि अरुंधति का जन्म और पालन-पोषण तिरुवनंतपुरम में हुआ था, लेकिन उन्होंने अब तक केवल एक मलयालम फिल्म में अभिनय किया है और फिर भी मलयालम फिल्म उद्योग एक आवाज पर आगे आया। अरुंधति की बहन अराती ने बताया कि जब परिवार और दोस्तों ने जिंदगी के लिए संघर्ष कर रही अरुंधति के लिए आर्थिक सहयोग लेना शुरू किया तो कई लोगों ने उनका मजाक उड़ाया। उन्होंने कहा, 'मेरी बहन इतनी बुरी तरह घायल है, लेकिन कई लोग कह रहे हैं कि यह घोटाला है।' राम्या ने कहा कि समस्या तब शुरू हुई जब मलयालम अभिनेत्री और दोस्त गोपिका आनंद ने अपने सोशल मीडिया पेज पर आर्थिक मदद की अपील की। उन्होंने बताया कि अरुंधति की कलाई और कॉलर की हड्डी टूट गई है और सर्जरी के लिए करीब पांच लाख रुपये की जरूरत है। अरुंधति की बहन ने बताया कि डॉक्टर मस्तिष्क की सर्जरी की भी तैयारी कर रहे हैं।

दिल्ली में वायु गुणवत्ता बनी हुई है खराब

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बुधवार को न्यूनतम तापमान 13.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो इस मौसम के औसत तापमान से तीन डिग्री सेल्सियस कम है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के मुताबिक, राजधानी में दिन में आसमान मुख्य रूप से साफ रह सकता है। उसके आंकड़ों के अनुसार सुबह 9.05 बजे सापेक्ष आर्द्रता का स्तर 82 प्रतिशत दर्ज किया गया।

'बीजेपी में शामिल होने आ रहे थे हेलीकॉप्टर वाले नेता लेकिन...', बिना नाम लिए कमलनाथ पर कैलाश विजयवर्गीय का निशाना

भोपाल (एजेंसी)। भाजपा के वरिष्ठ नेता कैलाश विजयवर्गीय ने कांग्रेस नेता और मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमल नाथ और उनके बेटे नकुल नाथ का नाम लिए बिना कहा कि कई लोग भगवा पार्टी में शामिल होने के लिए विमान और हेलीकॉप्टर से आ रहे थे लेकिन इसने उनके लिए दरवाजे बंद रखे हैं। उनके बयान का हवाला उन मीडिया रिपोर्टों के हवाले से दिया गया, जिनमें दावा किया गया था कि पिता-पुत्र की जोड़ी ने महीनों पहले भाजपा में जाने की योजना बनाई थी।

विजयवर्गीय छिंदवाड़ा निर्वाचन क्षेत्र में अपनी पार्टी के लिए प्रचार कर रहे हैं - एकमात्र सीट जो कांग्रेस ने जीती थी - जो नाथ परिवार का गढ़ है। लोकसभा चुनाव 2019 में नकुल नाथ ने इस सीट से जीत हासिल की। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में उन्हें उम्मीदवार नहीं मिल रहे हैं। इंदौर, जबलपुर, उज्जैन और कई अन्य स्थान ऐसे हैं जहां कांग्रेस के पास कोई उम्मीदवार नहीं है और कोई भी कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ने के लिए तैयार नहीं है। इस बार हम छिंदवाड़ा सीट से ही (जीतने की) शुरुआत करेंगे।

पिछले महीने भी, विजयवर्गीय ने कहा था कि भाजपा को कमल नाथ की जरूरत नहीं है और उनके

लिए दरवाजे बंद हैं क्योंकि फरवरी में वरिष्ठ कांग्रेस नेता के अगले राजनीतिक कदम पर सस्पेंस बढ़ गया था। उन्होंने संवाददाताओं से कहा, 'मैंने कहा था कि हमारी पार्टी में कमल नाथ की कोई जरूरत नहीं है और इसीलिए उनके लिए दरवाजे बंद हैं।' इससे पहले अपने भाजपा में जाने की चर्चा को खारिज करने के एक दिन बाद, कांग्रेस के दिग्गज नेता कमलनाथ ने पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा कि वह खुद को उन पर ÷थोपेंगे÷ नहीं और अगर वे उन्हें चाहेंगे तो ÷छोड़÷ देंगे। मध्य प्रदेश में अपने गृह क्षेत्र छिंदवाड़ा के हर्रई में पार्टी कार्यकर्ताओं की एक बैठक को संबोधित करते हुए 77 वर्षीय नेता ने कहा कि उन्हें कई वर्षों से उनका प्यार और विश्वास मिल रहा है।

पेपर लीक से पीड़ित परिवारों को बड़ा वोट बैंक मान रहे हैं अखिलेश

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव पेपर लीक मामले को बड़ा मुद्दा बनाकर भारतीय जनता पार्टी की मुश्किलें बढ़ाने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। अखिलेश जो गणित लगा रहे हैं उसके आधार पर उन्हें लगता है कि यदि उनकी गणित सही बैठी तो यूपी से बीजेपी का सफाया जो गायेगा। अखिलेश ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार लगातार भर्तियों को निरस्त कर रही है। प्रदेश के 60

लाख नौजवानों का भविष्य अंधकार में है और अगर वे और उनके परिवार वाले बीजेपी के खिलाफ हो गए तो पार्टी का उत्तर प्रदेश से सफाया हो जाएगा। उत्तर प्रदेश से हटने का मतलब देश से हटना हुआ। सपा अध्यक्ष ने कहा कि इन 60 लाख बच्चों के परिवार के अगर दो सदस्यों को भी मतदाता के रूप में शामिल कर लें तो एक करोड़ 80 लाख वोट होते हैं, अगर इस संख्या को 80 से भाग दे दें तो हर लोकसभा में भाजपा के दो लाख 25 हजार वोट कम हो जाएंगे। इस योजना को आगे बढ़ाने का काम समाजवादी लोग करेंगे। बता दें कि यूपी पुलिस भर्ती परीक्षा का पेपर लीक होने के बाद अभ्यर्थियों ने कई दिनों तक प्रदर्शन किया था। अभ्यर्थियों के आगे सरकार को झुकना पड़ा था और भर्ती परीक्षा को रद्द कर दिया था। इसके अलावा आरओ और एआरओ भर्ती परीक्षा का पेपर भी लीक हो गया था। यह परीक्षा भी रद्द कर दी गई थी। सरकार ने एसटीएफ को जांच सौंपी है और जांच चल रही है। पुनः परीक्षा भी कराई जा रही है, लेकिन अखिलेश इसके बहाने बीजेपी के सामने परेशानी खड़ी करके अपनी सीटें बढ़ाने में लगे हैं।

लोकसभा चुनाव: 102 सीटों के लिए अधिसूचना जारी, नामांकन की प्रक्रिया शुरू

नई दिल्ली (एजेंसी)। निर्वाचन आयोग ने लोकसभा चुनाव की पूरी तैयारी कर ली है। इसके लिए पहले चरण के चुनाव के लिए नामांकन प्रक्रिया शुरु कर दी है। 102 सीटों के लिए अधिसूचना भी जारी कर दी गई है। 19 अप्रैल को लोकसभा चुनाव के पहले चरण में मतदान होगा। राष्ट्रपति की तरफ से निर्वाचन आयोग द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि 27 मार्च है। इस चरण में 17 राज्यों और चार केंद्र शासित प्रदेशों की 102 लोकसभा सीटों पर चुनाव होंगे। बता दें कि पहले चरण में तमिलनाडु की 29, राजस्थान की 12, उत्तर प्रदेश की 8, मध्य प्रदेश की 6, उत्तराखंड, असम और महाराष्ट्र की 5-5, बिहार की 4, पश्चिम बंगाल की 3, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय की 2-2 और छत्तीसगढ़, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, जम्मू-कश्मीर, लक्षद्वीप और पुदुचेरी में की 1-1 सीटों पर मतदान

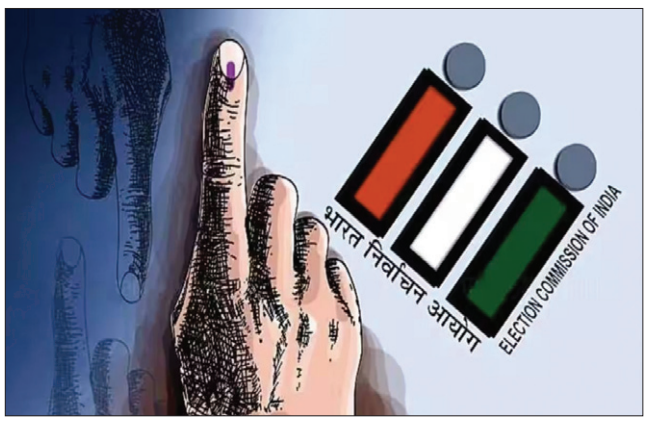

होगा।

पहले चरण में जिन राज्यों की लोकसभा सीटों के लिए मतदान होने हैं, उन पर प्रत्याशियों के नामांकन दाखिल करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। बता दें कि निर्वाचन आयोग ने लोकसभा चुनाव कार्यक्रम घोषित कर दिया है, जिसके तहत देश भर में सात चरणों में मतदान संपन्न होंगे। बता दें कि पहले चरण के लिए 19 अप्रैल, दूसरे चरण के लिए 26 अप्रैल, तीसरे चरण के लिए 7 मई, चौथे चरण के लिए 13 मई, पांचवें चरण के लिए 20 मई, छठें चरण के लिए 25 मई और सातवें चरण के लिए 1 जून को वोट डाले जाएंगे। नतीजे 4 जून को आएंगे।

निर्वाचन आयोग ने कहा है कि वह निष्पक्ष, स्वतंत्र और सुरक्षित लोकसभा चुनाव आयोजित करने के लिए प्रतिबद्ध है। पहले चरण के लिए 27 मार्च तक नामांकन दाखिल किए जा सकेंगे। हालांकि बिहार में पहले चरण में जिन लोकसभा सीट के लिए मतदान होना है, उनके लिए नामांकन दाखिल करने की आखिरी तारीख एक त्योहार की वजह से बढ़ाकर 28 मार्च की गई है। बिहार की 40 में से चार लोकसभा सीट पर मतदान प्रथम चरण में होगा। नामांकन वापस लेने की आखिरी तारीख 30 मार्च है, वहीं बिहार में प्रथम चरण की चार सीट के लिए नामांकन वापसी की प्रक्रिया दो अप्रैल तक जारी रहेगी। देश में 18वीं लोकसभा के लिए 19 अप्रैल को चुनाव शुरू होंगे और एक जून तक सात चरणों में मतदान होगा। मतगणना चार जून को होगी।

चुनाव प्रचार से पहले वडोदरा में रंजन भट्ट के खिलाफ पोस्टर वॉर, भाजपा के कई नेता हैं नाराज

वडोदरा (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव के प्रचार से पहले वडोदरा सीट से भाजपा उम्मीदवार रंजन भट्ट के खिलाफ पोस्टर वॉर छिड़ गया है। जिसमें लिखा है 'मोदी तुझसे बैर नहीं, रंजन तेरी खैर नहीं।' बता दें कि रंजन भट्ट वडोदरा से मौजूदा सांसद हैं और भाजपा ने फिर एक बार उन्हें मौका दिया है। जिसे लेकर पार्टी के कई नेता नाराज चल रहे हैं। बीते दिन वडोदरा के सावली से विधायक केतन ईनामदार ने विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। हांलाकि गुजरात भाजपा प्रमुख सीआर पाटील के साथ मुलाकात के बाद उन्होंने अपना इस्तीफा वापस ले लिया था। वडोदरा में यह पोस्टर किसने लगाए इसकी कोई जानकारी सामने नहीं आई है। हांलाकि रंजन भट्ट के खिलाफ लगाए गए सभी पोस्टरों को हटा दिया गया है। चर्चा है कि भाजपा के भीतर ही कई नेता विभीषण बन गए हैं और ऐसे नेताओं ने तीसरी बार लोकसभा का चुनाव लड़ रही रंजन भट्ट के खिलाफ पोस्टर लगाए हैं। दूसरी ओर वडोदरा में लगे पोस्टर को लेकर रंजन भट्ट ने स्वयं शिकायत दर्ज करवा दी है। जिसके आधार पर जिला चुनाव अधिकारी ने मामले की जांच कर प्राथमिक रिपोर्ट मांगी है। अगर आचाह संहिता का उल्लंघन हुआ है तो जरूरी कार्यवाही की जाएगी। रंजन भट्ट के खिलाफ वडोदरा में कारेलीबाग, गांधी पार्क सोसायटी, वल्लभ पार्क सोसायटी, जागृति सोसायटी, झवेरनगर सोसायटी समेत आसपास के क्षेत्रों में पोस्टर लगाए गए है। रंजन भट्ट को तीसरी बार रिपीट किए जाने से कई नेता नाराज हैं। जिसमें वडोदरा की पूर्व मेयर और राष्ट्रीय महिला मोर्चा की पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. ज्योति पंड्या भी शामिल हैं। ज्योति पंड्या वडोदरा से टिकट की उम्मीद लगाए बैठी थीं, लेकिन रंजन भट्ट को तीसरी बार उम्मीदवार बनाने से वह नाराज हो गईं और पार्टी की परवाह किए बगैर सार्वजनिक रूप से नाराजगी व्यक्त की थी। साथ ही उन्होंने रंजन भट्ट पर भ्रष्टाचार के भी आरोप लगाए थे।

मेटा का दावा- लोकसभा चुनाव के चलते गुमराह करने वाली खबरों पर कसेंगे शिकंजा

नई दिल्ली (एजेंसी)। फेसबुक, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म चलाने वाली कंपनी मेटा लोकसभा चुनाव को लेकर काफी सतर्क हो गई है। कहीं कोई फेक न्यूज, आपत्तिजनक सामग्री या अपवाह फैलाने वाले कंटेंट पर कंपनी नजर रख रही है। इसके लिए करीब 40 हजार लोगों की टीम लगाई गई है। यह टीम फेक्ट चेकर,एआई और कई तरह की हाईटेक तकनीकी का उपयोग कर इस पर नजर रखेगी। मेटा दुनिया भर में बचाव एवं सुरक्षा जैसे विषयों पर 40,000 लोगों के साथ मिलकर काम कर रही है। कंपनी 2016 से इस पर 20 अरब डॉलर लगा चुकी है। इनमें सामग्री की समीक्षा करने वाले 15,000 लोग भी शामिल हैं, जो फेसबुक, इंस्टाग्राम और थ्रेड्स जैसे प्लेटफॉर्म पर 70 भाषाओं में काम कर रहे हैं। इनमें 20 भारतीय भाषाएं भी शामिल हैं। मेटा ने यह भी कहा कि गुमराह करने वाली सामग्री की पहचान और उससे होने वाले जोखिम को रेटिंग देने में अपने फैक्ट-चेकर की मदद करने के लिए वह 'कीवर्ड डिटेक्शन' तकनीक का इस्तेमाल करेगी। कंपनी स्वैच्छिक नीति संहिता के माध्यम से भारतीय निर्वाचन आयोग को सहयोग दे रही है। इस संहिता में निर्वाचन आयोग सोशल मीडिया कंपनियों को गैर-कानूनी सामग्री पर ध्यान देने के लिए कहता है। मेटा 2019 में इस व्यवस्था से जुड़ी थी। इस आम चुनाव में जेनेरेटिव एआई की मदद से तैयार सामग्री पर भी आयोग समेत सबकी निगाहें होंगी। इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना-प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने कुछ महीने पहले बड़ी तकनीकी कंपनियों को ऐसी व्यवस्था (वाटर मार्किंग) या प्रणाली तैयार करने के लिए कहा था, जो एआई डीपफेक के इस्तेमाल से तैयार सामग्री का पता लगा सके। मेटा के साथ काम कर रहे फैक्ट-चेकर एआई से तैयार सामग्री की समीक्षा करने के साथ उन्हें रेटिंग भी देंगे। मेटा ने कहा कि वह गूगल, ओपनआई, माइक्रोसॉफ्ट, अडोबी, मिडजर्नी और शटरस्टॉक द्वारा एआई से तैयार तस्वीरों की पहचान कराने के लिए नई तकनीक तैयार कर रही है। यूजर इन कंपनियों द्वारा तैयार तस्वीरों को फेसबुक, इंस्टाग्राम और थ्रेड्स पर डालते रहते हैं। मेटा की तरह गूगल भी चुनाव के दौरान मतदाताओं को गुमराह करने वाली सामग्री पर नकेल कसने में सहयोग कर रही है। कंपनी ने अपने एआई प्लेटफॉर्म जेमिनी में कुछ बदलाव किए हैं जिसके बाद यह भारतीय चुनावों से सीधे तौर पर जुड़े किसी सवाल का जवाब नहीं दे पाएगा। देश में 19 अप्रैल से 1 जून तक सात चरणों में लोकसभा चुनाव कराए जाएंगे। मेटा ने कहा है कि वह गुमराह करने वाली खबरें फैलने से रोकने के सभी उपाय करेगी। कंपनी ने कहा कि वह मतदाताओं को प्रभावित करने वाली सामग्री हटाएगी और फेसबुक और थ्रेड्स पर पारदर्शिता सुनिश्चित करते हुए जवाबदेही तय करेगी। मेटा ने कहा है कि देश में आम चुनाव प्रक्रिया निष्पक्ष एवं पारदर्शी रखने में वह अपनी तरफ से पूरा सहयोग करेगी।

राज ठाकरे की भाजपा से नजदीकियों पर भड़के उद्धव बोले- महाराष्ट्र में पीएम मोदी की नहीं है लहर

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में एक समय था जब शिवसेना की तूती बोलती थी। हर एक दल शिवसेना से हाथ मिलाना चाहता था। अब तस्वीर बदली है। पहले शिवसेना के हाथ से पार्टी गई अब ठाकरे सरनेम भी खिसक रहा है। इसे नाराज शिवसेना (यूबीटी) चीफ उद्धव ठाकरे ने मंगलवार को केंद्र की सत्ताधारी भाजपा पर चुनाव जीतने के लिए एक ठाकरे को चुराने की कोशिश करने का आरोप लगाया। उद्धव ठाकरे की यह टिप्पणी महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एमएनएस) प्रमुख राज ठाकरे और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बीच दिल्ली में हुई एक बैठक के मद्देनजर आयी है। उद्धव ठाकरे ने नांदेड़ जिले में एक सभा को संबोधित करते हुए यह भी कहा कि यदि भाजपा उनके चचेरे भाई को अपने साथ ले लेती है, तो इससे उन्हें कोई परेशान नहीं होगी। उद्धव ने कहा, ''भाजपा अच्छी तरह से जानती है कि उसे महाराष्ट्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम पर वोट नहीं मिलने वाले हैं। लोग यहां (बाल) ठाकरे के नाम पर वोट करते हैं। इस अहसास ने भाजपा को बाहर (भाजपा) से नेताओं को चुराने की कोशिश करने के लिए प्रेरित किया है।'' उन्होंने भाजपा पर बाल ठाकरे की विरासत को हड़पने की कोशिश करने का

आरोप लगाया। उन्होंने मराठवाड़ा क्षेत्र में नांदेड़ और हिंगोली जिलों के अपने दो दिवसीय दौरे के समापन पर कहा, पहले, उन्होंने बाल ठाकरे की तस्वीर चुरायी, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आज, वे एक और ठाकरे को चुराने की कोशिश कर रहे हैं...इसे ले लो, मैं और मेरे लोग काफी हैं।उद्धव ठाकरे की पार्टी विपक्षी महा विकास आघाडी और 'इंडिया' गठबंधन का हिस्सा है। उन्होंने दावा किया कि ईसाइयों और मुसलमानों को भी उनकी हिंदुत्व की शैली से कोई दिक्कत नहीं है। उन्होंने कहा, जब हम भाजपा के साथ थे, तब शिवसेना (अविभाजित) की छवि खराब हो रही थी लेकिन जब से हमने उनसे संबंध तोड़ा है, ईसाई और मुस्लिम समुदाय के सदस्य भी कह रहे हैं कि उन्हें हमारी हिंदुत्व की विचारधारा से कोई दिक्कत नहीं है। वहीं दूसरी तरफ, शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत ने भी मंगलवार को आरोप लगाया कि राज ठाकरे के नेतृत्व वाली एमएनएस और भाजपा गठबंधन बनाने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि वे महा विकास आघाडी (एमवीए) की सफलता से डर गए हैं। दिल्ली में राज ठाकरे और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बीच बैठक के बारे में पूछे जाने पर राउत ने कहा कि अगर एमएनएस, भाजपा नीत महायुति में शामिल होती है, तो इसका राज्य की राजनीति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उन्होंने कहा, ''यह घटनाक्रम एमवीए की सफलता के डर से हो रहे हैं।'' राउत ने कहा कि महाराष्ट्र के लोग बहुत बुद्धिमान हैं और वे राज्य के खिलाफ रुख रखने वाले किसी भी व्यक्ति को बर्दाश्त नहीं करेंगे। एमवीए में शिवसेना (यूबीटी) के अलावा कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) अन्य घटक हैं। जब शिवसेना अविभाजित थी, तब राज ठाकरे ने उद्धव के साथ अपने मतभेदों के कारण, उससे नाता तोड़ लिया था और 2006 में महाराष्ट्र नव निर्माण सेना की स्थापना की थी। भले ही राज ठाकरे को एक शक्तिशाली वक्ता के रूप में देखा जाता है और उनके समर्थकों का एक आधार है, लेकिन उनकी पार्टी ज्यादा प्रभाव नहीं छोड़ सकी।

चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति में जज जरूरी नहीं, सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में दिया हलफनामा

नई दिल्ली। नरेंद्र मोदी सरकार ने बुधवार को मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त अधिनियम, 2023 पर रोक लगाने की मांग करने वाली याचिकाओं का विरोध किया, जिसमें चुनाव आयुक्तों का चयन करने वाले पैनल से भारत के मुख्य न्यायाधीश को हटा दिया गया था। इसमें आरोप लगाया गया कि असमर्थित और हानिकारक बयानों के आधार पर राजनीतिक विवाद पैदा करने की कोशिश की गई। लाइव लॉ की रिपोर्ट के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट में दायर एक हलफनामे में, सरकार ने याचिकाकर्ताओं के इस आरोप को खारिज कर दिया कि ज्ञानेश कुमार और सुखबीर संधू को शीर्ष अदालत द्वारा पारित किसी भी आदेश को रोकने के लिए 14 मार्च को 'जल्दबाजी' में नियुक्त किया गया था। सरकार ने तर्क दिया कि इतने बड़े पैमाने पर आम चुनाव के कारण एक सीईसी के लिए अकेले अपने कार्यों का निर्वहन करना मानवीय रूप से संभव नहीं होगा। सरकार ने कांग्रेस नेता जया ठाकुर और एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) द्वारा अधिनियम के खिलाफ दायर याचिका के जवाब में दायर किया था। याचिका में कहा गया था कि चुनाव आयोग के सदस्यों की नियुक्ति कार्यपालिका के हाथों में छोड़ना 'लोकतंत्र के स्वास्थ्य और स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के संचालन के लिए हानिकारक होगा। न्यायालय ने निर्देश दिया था कि सीईसी और चुनाव आयुक्तों के पदों पर नियुक्तियाँ प्रधानमंत्री, लोकसभा में विपक्ष के नेता और भारत के मुख्य न्यायाधीश की सदस्यता वाली एक समिति की सलाह पर राष्ट्रपति द्वारा की जानी चाहिए।

दिल्ली बॉर्डर से हटने लगे सीमेंटेड बैरिकेड्स, दिल्ली वालों को मिलेगी बड़ी राहत

नई दिल्ली(एजेंसी)। किसान आंदोलन के चलते दिल्ली से सटी सीमाओं के आसपास सीमेंटिड बैरिकेड्स लगाए गए हैं। इसके कारण यातायात का मार्ग भी बदला गया था। लंबा जाम लगता था और लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। अब इससे राहत मिलने जा रही है। एक बार फिर बड़े किसान आंदोलन की सुगबुगाहट के चलते 13 फरवरी को दिल्ली पुलिस ने टिकरी, सिंघू और गाज़ीपुर सीमाओं को कंक्रीट और लोहे की कीलों के बहुस्तरीय बैरिकेड्स के साथ सील कर दिया था। लेकिन यात्रियों के लिए आसान आवाजाही फिर से शुरू करने के लिए सीमेंटेड ब्लॉक और बैरिकेड्स को हटाना शुरू कर दिया है।

दिल्ली पुलिस ने मंगलवार को गाज़ीपुर सीमा पर बैरिकेड्स को हटाना शुरू कर दिया क्योंकि किसानों ने राष्ट्रीय राजधानी की ओर अपना मार्च रोक दिया है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा, यातायात के बेहतर बनाने के लिए, हमने गाज़ीपुर सीमा से सीमेंटेड बैरिकेड्स को हटाने का निर्णय लिया है। बैरिकेड्स को हटाने की प्रक्रिया में एक या दो दिन लग सकते हैं। हालांकि पुलिस और अर्धसैनिक बलों की तैनाती से चौबीसों घंटे कड़ी निगरानी सुनिश्चित की जाएगी यानी बल की तैनाती पहले की तरह ही रहेगी।कंक्रीट बैरिकेड्स हटाने के साथ टिकरी बॉर्डर का ज्यादातर हिस्सा खोल दिया गया है लेकिन लोहे के बैरिकेड्स अभी भी सड़क किनारे लगे हुए हैं। एक अधिकारी ने बताया कि स्थानीय पुलिस अभी भी सीमाओं पर नजर रखे हुए है। बता दें कि संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) और किसान मजदूर मोर्चा ने पिछले महीने दिल्ली चलो मार्च बुलाया था, जिसके बाद पंजाब-हरियाणा सीमा पर प्रदर्शनकारी किसानों और हरियाणा पुलिस के जवानों के बीच झड़प हो गई थी। कुछ यात्रियों ने कहा कि इन बैरियरों के खुलने से ट्रैफिक जाम की समस्या से राहत मिलेगी और लोग समय पर अपने गंतव्य तक पहुंच सकेंगे। इससे पहले, दिल्ली पुलिस ने 25 फरवरी को यात्रियों के लिए टिकरी और सिंघू बॉर्डर पर सीमेंट के बैरिकेड्स हटा दिए थे। अधिकारी ने कहा, अन्य दो सीमाओं - सिंघू और टिकरी पर भी यात्रियों को छूट दी गई है। सिंघू में दिल्ली-हरियाणा को जोड़ने वाले फ्लाईओवर की साइड लेन पर लगाए गए कंक्रीट बैरिकेड हटा दिए गए हैं हालाँकि, फ्लाईओवर पर बैरिकेड्स अभी भी लगे हुए हैं।

कनाडा पर गहराया मंदी का साया, सरकारी आंकड़ों में इकॉनमी मजबूत

टोरंटो। ब्रिटेन सहित दुनिया के कई देश इनदिनों मंदी की चपेट में हैं। जापान बाल-बाल इस मंदी से बचा है, लेकिन अब कनाडा के मंदी में फंसने का खतरा पैदा हो गया है। देश में बैंकरप्सी के लिए आवेदन करने वाली कंपनियों की संख्या तेजी से बढ़ी है। केवल जनवरी में ही 800 से अधिक कंपनियों ने बैंकरप्सी के लिए आवेदन किया। इससे पहले 2023 में देश में बैंकरप्सी फाइलिंग में करीब 40 फीसदी की तेजी देखने को मिली। अभी जितनी कंपनियां बैंकरप्सी के लिए आवेदन कर रही हैं, वह संख्या 13 साल में सबसे ज्यादा है। कोरोना काल के दौरान कंपनियों को 45,000 डॉलर का ब्याज मुक्त लोन दिया गया था, इस चुकाने की डेडलाइन जनवरी 2024 में खत्म हुई थी। कनाडा की जीडीपी में छोटी कंपनियों की करीब 33 फीसदी हिस्सेदारी है। कनाडा के सरकारी आंकड़ों की मानें तब देश की इकॉनमी मजबूत बनी हुई है। लेकिन छोटी कंपनियों और कई कंज्यूमर्स को संघर्ष करना पड़ रहा है। दिसंबर में कनाडा की इकॉनमी के 0.3 फीसदी बढ़ने की संभावना है। इस तरह चौथी तिमाही में इसमें 1.2 फीसदी की तेजी की संभावना है। तीसरी तिमाही में देश की जीडीपी में 1.1 फीसदी गिरावट रही थी। लगातार दो तिमाहियों में गिरावट को मंदी कहा जाता है। कनाडा के राष्ट्रपति जस्टिन ट्रूडो ने पिछले साल भारत से पंगा लिया था। ट्रूडो ने खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत का हाथ बताया था। इसके बाद से दोनों देशों के बीच तनाव काफी बढ़ गया था। वर्तमान में ब्रिटेन सहित दुनिया के आठ देश मंदी में फंसे हैं। इसमें ब्रिटेन के अलावा डेनमार्क, एस्तोनिया, फिनलैंड, लक्जमबर्ग, मोल्दोवा, पेरू और आयरलैंड शामिल हैं। दिलचस्प बात है कि इनमें से छह देश यूरोप के हैं। इस लिस्ट में अफ्रीका और नॉर्थ अमेरिका का कोई देश नहीं है। जापान मंदी से बाल-बाल बचा है। कई और देशों पर भी मंदी का खतरा मंडरा रहा है। इनमें जर्मनी भी शामिल है। यूरोप की यह सबसे बड़ी इकॉनमी कई मोर्चों पर संघर्ष कर रही है। चीन में हालात भी लगातार खराब होते जा रहे हैं।

चीन में सामने आया अब तक का सबसे बड़ा वित्तीय घोटाला

बीजिंग। चीन में अब तक का सबसे बड़ा वित्तीय घोटाला सामने आया है। देश के रेगुलेटर्स ने दिवालिया हो चुकी रियल एस्टेट कंपनी एवरग्रेंड और उसके फाउंडर पर रेवेन्यू को 78 अरब डॉलर बढ़ाकर दिखाने का आरोप लगाया है। बता दें कि चीन के इतिहास में इस अब तक का सबसे बड़ा घोटाला माना जा रहा है। एवरग्रेंड दुनिया में सबसे ज्यादा कर्ज में डूबी कंपनी है। इस पर 300 अरब डॉलर से ज्यादा कर्ज है। 2021 में कंपनी ने कर्ज के भुगतान में डिफॉल्ट किया था जिसके बाद चीन में रियल एस्टेट का संकट खड़ा हो गया। चीन की इकॉनमी में रियल एस्टेट की हिस्सेदारी करीब 30 फीसदी है। इससे पूरी इकॉनमी के डूबने का खतरा पैदा हो गया है। चीन के सिक्योरिटीज रेगुलेटरी कमीशन ने एवरग्रेंड ग्रुप की प्रमुख कंपनी हेंगदा रियल एस्टेट पर 58 करोड़ डॉलर का जुर्माना ठोक दिया है। एवरग्रेंड ग्रुप के फाउंडर और चेयरमैन जू जीयन पर 65 लाख डॉलर की पेनल्टी लगा दी है। उन पर कंपनी के वित्तीय रिकॉर्ड को बढ़ाचढ़ाकर दिखाने और नियमों का उल्लंघन करने का आरोप है। कभी चीन के सबसे बड़े रईस रहे जू जीयन को हमेशा के लिए सिक्योरिटीज मार्केट से प्रतिबंधित किया गया है। आयोग ने करीब आठ महीने तक चली जांच के बाद एवरग्रेंड की करतूतों को उजागर किया है। जनवरी में हॉन्ग कॉन्ग के एक कोर्ट ने एवरग्रेंड को बेचने का ऑर्डर दिया था। कंपनी पर अपनी वित्तीय रिपोर्ट्स में सेल्स को बढ़ाचढ़ाकर दिखाने का आरोप है। इस आधार पर कंपनी ने अपने बॉन्ड ब्रिकी किए थे। रेगुलेटर के मुताबिक हेंगदा ने 2019 में 30 अरब डॉलर की सेल दिखाई थी जो उसके रेवेन्यू का करीब आधी थी। इसी तरह कंपनी ने 2020 में 48.6 अरब डॉलर की सेल दिखाई थी जो उसके रेवेन्यू का 78 प्रतिशत थी। लेकिन जांच में पता चला कि कंपनी ने आंकड़ों को बढ़ाचढ़ाकर पेश किया था।

प्राइमरी चुनाव में बाइडन-ट्रंप ने कई राज्यों में की जीत दर्ज

वाशिंगटन। ओहायो, इलिनोइस, कंसास, फ्लोरिडा और एरिजोना में रिपब्लिकन पार्टी के प्राइमरी चुनाव हुए। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन और पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार को प्राइमरी चुनाव में जीत दर्ज की। कंसास, ओहायो, इलिनोइस और एरिजोना में हुए चुनाव में जो बाइडन 80 फीसदी से ज्यादा मत पाकर विजयी रहे हैं। अभी तक आए नतीजों के अनुसार, डोनाल्ड ट्रंप ने एरिजोना, फ्लोरिडा में जीत दर्ज कर ली है। वहीं अन्य राज्यों में भी उनकी जीत तय है। डेमोक्रेट पार्टी की तरफ से जो बाइडन उम्मीदवार हैं। वहीं रिपब्लिकन पार्टी की तरफ से डोनाल्ड ट्रंप राष्ट्रपति पद के दावेदार हैं। डोनाल्ड ट्रंप ने भी अपने गृह राज्य फ्लोरिडा में प्राइमरी चुनाव के लिए मतदान किया। मतदान के बाद ट्रंप ने कहा कि मैंने डोनाल्ड ट्रंप के लिए वोट किया है। राष्ट्रपति चुनाव जैसे जैसे नजदीक आ रहे हैं। ट्रंप और बाइडन का प्रचार भी तेज हो रहा है। इसी के तहत बाइडन ने मंगलवार को नेवादा और एरिजोना का दौरा किया। इन दोनों राज्यों में पिछले राष्ट्रपति चुनाव के दौरान बाइडन और ट्रंप में करीबी मुकाबला हुआ था। ऐसे में दोनों नेता कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते हैं। जो बाइडन और डोनाल्ड ट्रंप, दोनों ही एक दूसरे पर तीखे हमले कर रहे हैं। जो बाइडन ने जहां डोनाल्ड ट्रंप को लोकतंत्र के लिए खतरा बताया है, वहीं ट्रंप ने जो बाइडन को मानसिक रूप से अनफिट बताया।

केट का मेडिकल रिकॉर्ड चुराने का प्रयास, जांच के आदेश

लंदन। ब्रिटेन के प्रिंस विलियम की पत्नी केट मिडलटन सर्जरी के बाद से सार्वजनिक तौर पर दिखाई नहीं दी हैं। हाल ही में मीडिया में उनकी एक तस्वीर सामने आई है, जिसमें वह अपने पति के साथ दिखाई दी। अफवाहों के बीच खबर आई है केट के मेडिकल रिकॉर्ड चुराने की कोशिश की गई है। मामला राजघराने से जुड़ा होने के कारण घटना की जांच के आदेश दे दिए हैं। केट मिडलटन के मेडिकल रिकॉर्ड चुराने के आरोप में अस्पताल के कर्मचारी पर ही आरोप लगे हैं। घटना के तुरंत बाद अस्पताल प्रशासन ने केनसिंग्टन पैलेस को इसकी जानकारी दी और कहा कि इसकी जांच की जाएगी। ब्रिटिश राजघराने के सदस्यों का इलाज लंदन के इसी अस्पताल में होता है। रिकॉर्ड की चोरी की कोशिश के खुलासे से अस्पताल की छवि को बड़ा झटका लगा है। ब्रिटेन की डाटा प्रोटेक्शन एंड प्राइवेसी अथॉरिटी ने भी घटना की पुष्टि की है। गौरतलब है कि बीते कई दिनों से केट मिडलटन की सेहत को लेकर तरह तरह की चर्चाएं चल रही हैं। दरअसल जनवरी में केट की सर्जरी हुई थी और उसके बाद से ही वह सार्वजनिक कार्यक्रम में दिखाई नहीं दे रही थीं। अब ब्रिटिश मीडिया में केट मिडलटन की ताजा तस्वीर सामने आई है, जिसमें केट अपने पति प्रिंस विलियम के साथ लंदन की एक शॉप से खरीददारी करती दिखाई दीं। इससे केट की सेहत को लेकर चल रहीं अफवाहों पर लगाम लग गई।

ब्रिटेन के शाही परिवार में फिर उड़ी अफेयर की चर्चा

लंदन। आजकल सोशल मीडिया पर ब्रिटेन के शाही परिवार प्रिंस विलियम और ब्रिटिश मॉडल सारा रोज हैनबरी के अफेयर को लेकर चर्चा जोरों पर है। दरअसल, जनवरी में पेट की सर्जरी के बाद प्रिंस विलियम की पत्नी और वेल्स की राजकुमारी केट मिडलटन लगातार ब्रिटिश शाही परिवार के साथ नजर नहीं आ रहीं। केट मिडलटन तब भी चर्चा में आ गईं थी, जब शाही परिवार ने मदर्स डे पर एक फोटो जारी की थी। आरोप लगे थे कि इस फोटो को एडिट कर हेरफेर किया गया है। बाद में केट ने इसके लिए माफी भी मांगी थी। अफेयर की चर्चाओं को तब हवा मिली थी, जब द लेट शो विद स्टीफन कोलबर्ट में केट मिडलटन की अनुपस्थिति को लेकर कोलबर्ट ने कहा कि यह घटना प्रिंस विलियम के अफेयर से जुड़ी हो सकती है। अफेयर के आरोपों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हुए कोलबर्ट ने कहा था, जब आपकी पत्नी आप पर धोखा देने का आरोप लगाती है तो यह अच्छा है। मेरा दिल बेचारी केट के लिए दुखता है। चर्चाओं के बीच कहा जा रहा था कि केट मिडलटन विंडसर में अपनी पसंदीदा शॉप पर देखीं गईं। बता दें कि सारा रोज हैनबरी प्रिंस विलियम के साथ-साथ केट मिडलटन की भी करीबी दोस्त हैं। हालांकि, जब सोशल मीडिया पर प्रिंस विलियम और हैनबरी के अफवाह की चर्चाएं शुरू हुईं तो सारा ने अपनी चुप्पी तोड़ी। सारा ने कहा कि यह सारी बातें अफवाह हैं। बता दें कि शाही परिवार से हैनबरी के परिवार का जुड़ाव पीढ़ियों से है। एक रिपोर्ट के मुताबिक उनकी दादी, लेडी एलिजाबेथ लैम्बर्ट ने 1947 में महारानी एलिजाबेथ और प्रिंस फिलिप की शादी में दुल्हन की सहेलियों का किरदार अदा किया था।

केनबरा में फ्री ईस्ट तुर्किस्तानन समर्थक एक रैली निकालकर विरोध प्रदर्शन करते हुए।

हमास के खात्मे के लिए राफा में ग्राउंड ऑपरेशन जरुरी : नेतन्याहू

तेल अवीव,(ईएमएस)। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने फिर दोहराया है कि राफा में ग्राउंड ऑपरेशन के अलावा हमास को खत्म करने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है। नेतन्याहू ने कहा, मैंने अपनी बातचीत में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन से यह स्पष्ट कर दिया कि हम राफा में हमास की बची हुई बटालियनों का सफाया करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

टाइम्स ऑफ इजरायल की रिपोर्ट के मुताबिक नेतन्याहू ने मंगलवार को विदेश और रक्षा मामलों की समिति को बताया, राफा में ग्राउंड ऑपरेशन के बारे में अमेरिकियों के साथ हमारी असहमति है। हमास को खत्म करने की जरूरत के बारे में नहीं, राफा में प्रवेश करने की जरूरत के बारे में असहमति है। बता दें कि अमेरिका राफा में इजरायल के ग्राउंड ऑपरेशन को अंजाम देने के खिलाफ है। अमेरिका मानना है कि इससे गाजा में मानवीय संकट और बढ़ेगा, राफा, गाजा के सबसे दक्षिणी छोर पर मिस्र की सीमा से सटा हुआ इलाका है।

दोस्त बुलाए तो जाना पड़ता है...

चुनावी प्रचार छोड़कर अचानक चीन के पड़ोस में पहुंच रहे मोदी, स्वागत में लग गए पोस्टर

मॉस्को (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान हो चुका है। राजनीतिक दलों की ओर से प्रचार का दौर भी शुरू हो चुकी है। बीजेपी की तरफ से प्रचार अभियान की कमान खुद प्रधानमंत्री मोदी ने उठा रखी है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक धुआंधार रोड शो और जनसभाओं के जरिए पीएम मोदी अबकी बार 400 पार का नारा लगाते और जनता को एक बार फिर से एनडीए को चुनने की अपील करते नजर आ रहे हैं। लेकिन चुनाव प्रचार के बीच पीएम मोदी अचानक चीन के पड़ोस में जाने वाले हैं। पीएम मोदी का दो दिना का दौरा रहने वाला है।

स्वागत की जबरदस्त तैयारी

पड़ोसी पहले नीति के तहत पीएम मोदी का ये दौरा है। पीएम मोदी के दौरे को लेकर भूटान में जबरदस्त तैयारी की गई है। भूटान के पीएम इसी हफ्ते भारत आए थे। अपनी मुलाकात के बारे में बताते हुए टोबगे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपना बड़ा भाई कहा था। इसके बाद पीएम मोदी ने न्यौता भी स्वीकार किया था। पीएम की यात्रा से पहले भूटान के पारो अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के वीडियो सामने आया है। जिसमें पीएम मोदी के स्वागत के लिए खूबसूरत तरीके से सजाया गया है। अब भूटान के दो दिन के दौरे पर पीएम रहने वाले हैं। पीएम मोदी 21 मार्च यानी गुरुवार के दिन रवाना होंगे।

पड़ोसी प्रथम नीति पर जोर

मंत्रालय के एक बयान में कहा गया है कि यह यात्रा भारत और भूटान के बीच नियमित उच्च स्तरीय आदान-प्रदान की परंपरा और सरकार की पड़ोसी प्रथम नीति पर जोर देने के अनुरूप है। अपनी दो दिवसीय यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री भूटान के राजा जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक, भूटान के राजा और पूर्व राजा जिग्मे सिंग्ये वांगचुक से मुलाकात करेंगे। बयान में कहा गया है कि मोदी भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोबगे के साथ द्विपक्षीय और क्षेत्रीय मामलों पर भी चर्चा करेंगे। भारत और भूटान एक अनोखी और स्थायी साझेदारी साझा करते हैं जो आपसी विश्वास, समझ और सद्भावना पर आधारित है। हमारी साझा आध्यात्मिक विरासत और लोगों के बीच मधुर संबंध हमारे असाधारण संबंधों में गहराई और जीवंतता जोड़ते हैं।

नेतन्याहू के किस कदम से डरे बाइडन, आनन-फानन में लगा दिया फोन

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के राष्ट्रपति इजरायल के सैन्य अभियान की आशंका को लेकर टेंशन में हैं। इस कारण बाइडन ने इजरायली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू को आनन-फानन में फोन लगाकर कहा कि राफह में इजराइल के सैन्य अभियान की आशंका से बहुत चिंतित हूं। अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैक सुलविन ने अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडन और नेतन्याहू के संग बातचीत का खुलासा किया, जिसमें बाइडन ने नेतन्याहू से कहा कि वह इजराइल द्वारा गाजा सिटी और खान यूनिस की तरह ही रफह में बड़ा सैन्य अभियान चलाये जाने की आशंका से काफी चिंतित हैं। अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार सुलिवन ने सोमवार को अपने नियमित सुलिवन ने बताया कि बाइडन और नेतन्याहू ने रफह को लेकर विस्तार से चर्चा की। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने बताया कि 10 लाख से अधिक लोगों ने राफह में शरण ली है। उन्होंने कहा कि वे गाजा सिटी से खान यूनिस और फिर रफह गए, अब उनके पास कोई सुरक्षित जगह नहीं है। उन्होंने बताया कि गाजा के अन्य प्रमुख शहरों को बड़े पैमाने पर तबाह कर दिया गया है।

उन्होंने कहा कि इजराइल ने अमेरिका या दुनिया को यह योजना नहीं बतायी है कि वह कैसे या कहां उन नागरिकों को सुरक्षित स्थानांतरित करेगा।

उन्होंने कहा, 'हमारा मानना है कि हमास को रफह या कहीं और पनाह न दी जाए। लेकिन वहां एक बड़ा जमीनी अभियान चलाना गलती होगी। इससे कई निर्दोष जान जाएगी, पहले से ही गंभीर मानवीय संकट और बढ़ेगा, गाजा में अराजकता बढ़ेगी तथा इजराइल अंतरराष्ट्रीय रूप से और अलग-थलग होगा।

अमेरिकी वीजा के लिए 22 मार्च तक भारतीय करा सकेंगे पंजीचन

वाशिंगटन। अमेरिका में विदेशी कामगारों के लिए वित्त वर्ष 2025 के वास्ते सबसे अधिक मांग वाले एच-1बी वीजा के लिए प्रारंभिक पंजीकरण 22 मार्च को पूर्वी समयानुसार अपराह्न 12 बजे खत्म हो जाएगा। विज्ञप्ति के अनुसार, गैर-आप्रवासी कामगार के लिए आवेदन फॉर्म आई-129 और प्रीमियम सेवा के लिए आवेदन फॉर्म आई-907 अब यूएससीआईएस के ऑनलाइन खाते पर उपलब्ध है। एच-1बी वीजा एक गैर-आप्रवासी वीजा है जो अमेरिकी कंपनियों को विदेशी कामगारों को विशेष व्यवसायों में नियुक्त करने की अनुमति देता है जिनके लिए सैद्धांतिक या तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

चीन को जबाव देने इन देशों के साथ त्रिपक्षीय शिखर वार्ता करेगा अमेरिका

वाशिंगटन (एजेंसी)। दुनिया में चीन, रूस और उत्तर कोरिया की बढ़ती गुटबाजी को देकर अमेरिका भी अपने गुट को मजबूत करने में जुट गया है। अब वह फिलीपींस और जापान के साथ पहली त्रिपक्षीय शिखर वार्ता करने जा रहा है। तीनों देशों के नेता त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन के लिए 11 अप्रैल को मिलने वाले हैं। इसके मेन एजेंडे के रूप में चीन के बढ़ते खतरे पर फोकस किया जाएगा। इसके साथ ही समावेशी आर्थिक विकास, उभरती प्रौद्योगिकियों और भारत-प्रशांत क्षेत्र में शांति व सुरक्षा को आगे बढ़ाने के लिए सहयोग पर चर्चा होगी। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरिन जीन-पियरे ने बताया कि अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन जापानी पीएम फुमियो किशिदा और फिलीपींस के राष्ट्रपति फर्डिनेंड आर मार्कोस जूनियर की मेजबानी करेगा। व्हाइट हाउस ने घोषणा की है कि यह शिखर वार्ता व्हाइट हाउस में होगी क्योंकि तीनों नेता इंडो-पैसिफिक और उससे आगे त्रिपक्षीय सहयोग का विस्तार करना चाहते हैं। जीन पियरे का कहना है, राष्ट्रपति अंतरराष्ट्रीय कानून को बरकरार रखने और स्वतंत्र एवं खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र को बढ़ावा देने की अमेरिका की प्रतिबद्धता पर जोर देगा। अमेरिका, जापान और फिलीपीन ने क्षेत्र में चीन की बढ़ती आक्रामकता की आलोचना की है। खासकर दक्षिण चीन सागर को लेकर क्योंकि चीन इस पर अपना दावा करता है। बीजिंग और फिलीपींस के बीच लगातार तनाव बढ़ता जा रहा है।

पार्क लेन रेफरेंस मामले में पाकिस्तान राष्ट्रपति को राहत

- राष्ट्रीय खजाने में 3.77 अरब रुपये का नुकसान पहुंचाने का आरोप

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी के खिलाफ भ्रष्टाचार के पार्क लेन रेफरेंस मामले में इस्लामाबाद कोर्ट में सुनवाई हुई। जरदारी राष्ट्रीय खजाने में 3.77 अरब रुपये का नुकसान पहुंचाने का आरोप है। जरदारी को भ्रष्टाचार के एक मामले में मुकदमे से छूट मिल गई है। जरदारी के वकीलों ने कोर्ट से अपील की थी कि उनके मुवक्किल अब राष्ट्रपति हैं, ऐसे में उन्हें इस मामले से छूट मिलनी चाहिए। कोर्ट ने पूछा कि क्या सह आरोपियों के खिलाफ केस चलाया जा सकता है, इस पर वकीलों ने कहा चलाया जा सकता है। कोर्ट ने मामले की सुनवाई 17 अप्रैल तक के लिए स्थगित कर दी गई।

यह मामला 2008 से 2013 के दौरान का है। उस समय जरदारी मुल्क के राष्ट्रपति थे। इस मामले को पार्क लेन रेफरेंस के तौर पर जाना जाता है। आरोप है कि उन्होंने अपनी फ्रंट कंपनियों को लोन दिलाने के लिए अधिकारियों को प्रभावित करने की कोशिश की और बाद में उस पैसे का दुरुपयोग किया। उन्होंने अपनी एक कंपनी पार्थेनन प्रा. लिमिटेड के लिए 1.5 अरब रुपये का लोन मिला था। लेकिन बाद में उन्होंने इस धनराशि को फर्जी बैंक खातों के जरिए अपने निजी इस्तेमाल के लिए ट्रांसफर कर दिया।

कम दामों पर प्रॉपर्टी खरदीने का आरोप

राष्ट्रपति जरदारी 2008 से 2013 तक पाकिस्तान के राष्ट्रपति थे. इस दौरान उन्होंने अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर अपनी फ्रंट कंपनियों के लिए लोन लिया था लेकिन बाद में फर्जी खातों के जरिए इस पैसे का निजी तौर पर इस्तेमाल किया। पार्क लेन केस में जरदारी और उनके बेटे बिलावल अली जरदारी पर इस्लामबाद में बेहद कम दरों पर 307 एकड़ की प्रॉपर्टी खरदीने का आरोप है। आरोप है कि जरदारी ने अपने पद का दुरुपयोग कर यह प्रॉपर्टी औने-पौने दाम पर खरीदी थी।

अब जल्द ही पुतिन जाएंगे चीन

मास्को। व्लादिमीर पुतिन ने दोबारा रुस के राष्ट्रपति चुने गए हैं। वह अपने नए कार्यकाल के दौरान पहली विदेश यात्रा चीन की करना चाहते हैं। सूत्रों के हवाले से कहा जा रहा है कि पुतिन मई में चीन जा सकते हैं, जहां वह चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात करेंगे। रूस की सरकारी न्यूज एजेंसी तास का कहना है कि इस संबंध में एक बैठक हुई इसमें कम्युनिस्ट पार्टी के नेता जेनेडी जूगानोव ने पुतिन को पहले विदेशी दौरे के लिए चीन को चुनने की सलाह दी। जेनेडी ने कहा कि दोबारा राष्ट्रपति बनने के बाद आपका पहला दौरा किसी पूर्वी देश का नहीं बल्कि पश्चिमी देश का होना चाहिए। चीनी राष्ट्रपित जिनपिंग आपके दौरे का इंतजार कर रहे हैं, वह हमारे देश को बहुत मान सम्मान देते हैं। इसके बाद पुतिन ने चीन जाने का वादा किया। पुतिन ने कहा कि मैं यकीनन चीन जाऊंगा।

ज्वालामुखी विस्फोट से लावा निकलेगा तो धरती कैसे ठंडी होगी

-वैज्ञानिकों ने समझाया, कैसे होगा धरती का तापमान कम

वाशिंगटन (एजेंसी)। वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर बहुत ही ताकतवर ज्वालामुखी फटता है और लावा निकलता है तो धरती का तापमान कम होता है। वैज्ञानिकों की इस बात से सवाल उठना लाजिमी है कि अगर ज्वालामुखी विस्फोट में धधकता हुआ लावा निकलेगा तो धरती ठंडी कैसे होगी? जबकि, अमूमन यही देखा गया है कि ज्वालामुखी के फटने पर आसपास का तापमान अचानक बहुत ज्यादा बढ़ जाता है।

शोधकर्ताओं का दावा है कि जब दुनिया के सबसे ताकतवर ज्वालामुखी फटते हैं तो धरती का तापमान बढ़ने के बजाय कम हो जाता है। ज्वालामुखी में होने वाले धमाके वैज्ञानिकों को धरती के इतिहास में हुए कूलिंग पीरियड को समझाने में भी मदद करते हैं। अमेरिका की अंतरिक्ष एजेंसी नासा की ग्लोबल क्लाइमेट चेंज रिपोर्ट के मुताबिक, हर कुछ दशक में सबसे ताकतवर ज्वालामुखी विस्फोट में बड़ी मात्रा कण और गैस निकलती हैं। ये सूरज की रोशनी को सीधे धरती तक आने में रुकावट पैदा करते हैं। यही रुकावट ग्लोबल कूलिंग पीरियड के हालात तैयार करती है। जब दुनिया के सबसे शक्तिशाली ज्वालामुखियों में विस्फोट होता है तो ठंड का दौर 1 से 2 साल तक चलता है। ये इतना प्रभावी होता है कि पूरी दुनिया में इसका असर महसूस होता है। कुछ शोध का दावा है कि कभी-कभी ग्लोबल कूलिंग इतनी ज्यादा हो जाती है कि खतरा पैदा कर देती है।

नासा के गोडार्ड इंस्टीट्यूट फॉर स्पेस स्टडीज और न्यूयॉर्क की कोलंबिया यूनिवर्सिटी के नए शोध में पिछले अध्ययनों कर रिपोर्ट्स में किए गए ऐसे दावे की जांच की गई है। अब तक शोधकर्ता सबसे शक्तिशाली ज्वालामुखी धमाकों के असर का सटीक अनुमान नहीं लगा पाए हैं। हालांकि, पूर्व में किए गए अध्ययन अनुमान लगाते हैं कि इससे धरती 2 से 8 डिग्री सेल्सियस तक ठंडी हो जाती है। इसे वोल्केनिक विंटर भी कहा जाता है। नए अध्ययन में वोल्केनिक विंटर की आशंका बेहद कम आंकी गई है। एक ताजा रिपोर्ट में शोधकर्ताओं ने 74,000 साल पहले सुमात्रा के टोबा ज्वालामुखी विस्फोट जैसे जबरदस्त धमाके को कंप्यूटर मॉडलिंग के जरिये समझाने की कोशिश की है। इसमें पाया गया कि सबसे शक्तिशाली विस्फोट के बाद धरती के तापमान में 1.5 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा की कमी नहीं आएगी।

वैज्ञानिक ज्वालामुखी विस्फोटों को उनके छोड़े जाने वाले मैग्मा के आधार पर बांटते हैं। इसके मुताबिक, जब कोई ज्वालामुखी 1,000 क्यूबिक किलोमीटर से ज्यादा मैग्मा छोड़ता है तो उसे सुपर विस्फोट कहते हैं। ये विस्फोट बेहद शक्तिशाली होने के साथ-साथ दुर्लभ होते हैं।

सबसे हालिया सुपर-विस्फोट 22,000 साल से भी पहले न्यूजीलैंड में हुआ था। करीब 20 साल पहले व्योमिंग में भी सुपर विस्फोट हुआ था। बता दें कि ज्वालामुखी विस?फोट में कार्बन डाइऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैस भी निकलती है। ज्यादातर लोग जानते होंगे कि ग्रीनहाउस गैसें धरती का तापमान बढ़ाती हैं। इसीलिए दुनिया के सभी देश ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन की रोकथाम की दिशा में काम कर रहे हैं।

अंडों के छिलकों पर चलने जैसा है इंडस्ट्री में बने रहना, कुणाल खेमू ने क्यों कही यह बात?

कुणाल खेमू इन दिनों अपनी निर्देशित फिल्म मडगांव एक्सप्रेस को लेकर चर्चा में हैं। फिल्म 22 मार्च, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज के लिए तैयार है। फिलहाल, फिल्म की स्टार कास्ट जोर-शोर से इसके प्रमोशन में लगी हुई है। हाल ही में फिल्म के प्रमोशन के दौरान एक साक्षात्कार में कृणाल खेमू ने मडगांव एक्सप्रेस को बनाने को लेकर खुलकर बातचीत की। वहीं, इंडस्ट्री में बने रहने को लेकर अपनी राय जाहिर दर्शकों के सामने जाहिर की। साक्षात्कार में कृणाल ने बताया कि वह अपनी आगामी फिल्म मडगांव एक्सप्रेस की स्क्रिप्ट को लोगों के सामने लाने से डर रहे थे। इस दौरान कृणाल ने यह भी बताया कि यह कहानी उनके दिमाग में दिल चाहता है को लेकर दिमाग आई थी। कृणाल ने कहा, एक कलाकार के रूप में मैं एक ऐसा इंसान हूं, जो एक एक्टर था और उसे लिखना पसंद था। अब वह एक निर्देशक बन गया। इंडस्ट्री में बने रहना अंडे के छिलके पर चलने के बराबर है। कृणाल ने इसकी वजह बताते हुए कहा, मैं मडगांव एक्सप्रेस की पटकथा लिखने से डर रहा था, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि लोग ऐसा कहें कि मैं एक अभिनेता हूं, जिसे अब काम नहीं मिल रहा है और वो आगे बढ़ने के लिए ये सब कर रहा है। मैं उन फिल्मों का हिस्सा रहा हूं, जिन्हें बहुत प्यार मिला है, लेकिन कई फिल्में ऐसी भी रही हैं, जो बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई। इससे एक अभिनेता के तौर पर मेरा नजरिया बदला है। आपको उन फिल्मों में काम करने या उसे बनाने का मौका दोबारा नहीं मिलता, जो आप हमेशा से करना चाहते हैं। कुणाल ने इस दौरान यह भी कहा कि एक निर्देशक के तौर पर वे इस बात को समझते रहे थे कि उन्हें एक निश्चित बजट मिला है, जिसमें उन्हें यह फिल्म बनानी थी। कृणाल ने कहा, मैं नहीं चाहता कि मेरी यह फिल्म अच्छी थी, लेकिन टाइमिंग गलत थी वाली फिल्मों में से एक हो। क्योंकि, आपका अगला मौका इसी पर निर्भर होता है।

क्रू को लेकर बेहद उत्साहित हैं करीना

बॉलीवुड अभिनेत्री करीना कपूर खान, तब्बू और कृति सेनन स्टारर क्रू इन दिनों लगातार सुर्खियों में बनी हुई है। हाल ही में फिल्म का ट्रेलर रिलीज हुआ, जिसके बाद इसे लेकर लोगों की उत्सुकता बढ़ गई है। फिल्म में तीनों अभिनेत्रियां एयर होस्टेस के किरदार में हैं, जो कोहिनूर नाम की एयरलाइन के लिए काम करती हैं। करीना फिल्म को लेकर बेहद उत्साहित हैं, उन्होंने कहा कि वे हमेशा से तब्बू के साथ काम करना चाहती थीं। करीना कपूर ने कहा कि उनकी तब्बू के साथ काम करने की इच्छा क्रू के साथ पूरी हो रही है। इसके चलते वे बेहद खुश हैं। अभिनेत्री ने कहा, मैं बहुत उत्साहित हूं क्योंकि मुझे पहली बार तब्बू के साथ काम करने का मौका मिला। लोलो (करिश्मा कपूर) ने उनके साथ कई बार काम किया है। आखिरकार मुझे उनके साथ स्क्रीन शेयर करने का अवसर मिला। बेबो ने आगे कहा, वह कृति सेनन के साथ स्क्रीन साझा करने को लेकर भी बेहद उत्साहित थीं। उन्होंने अभिनेत्री को बेहद प्यारा और प्रतिभाशाली कहा। करीना ने कहा, मुझे उम्मीद है कि फिल्म अच्छा प्रदर्शन करेगी। राजेश ने एक बेहद मजेदार फिल्म बनाई है इसलिए मैं वास्तव में उत्साहित और खुश हूं और उम्मीद करती हूं कि यह चलेगी। वहीं, कृति सेनन ने कहा, महिला सह-कलाकारों के साथ काम करना उनके लिए काफी नया और अच्छा था। हमें ज्यादातर पुरुषों के साथ ही काम करना पड़ता है। मेरे लिए उन महिलाओं के साथ काम करना बहुत ताजा था, जो बहुत प्रतिभाशाली हैं और जिनकी मैं वर्षों से प्रशंसा करता रहा हूं। क्रू में तब्बू, करीना कपूर खान और कृति सेनन के अलावा दिलजीत दोसांझ और कपिल शर्मा भी हैं। फिल्म का निर्देशन राजेश कृष्णन ने किया है। वहीं, इसका निर्माण एकता कपूर, शोभा कपूर, अनिल कपूर और रिया कपूर ने किया है। यह 29 मार्च को बड़े पर्दे पर रिलीज होने के लिए पूरी तरह तैयार है।

डिज्नी की टाइगर को अपनी आवाज देंगी प्रियंका

बॉलीवुड से निकलकर हॉलीवुड में अपनी पहचान बनाने वाली देसी गर्ल प्रियंका चोपड़ा अब एक नए अवतार में नजर आने वाली हैं। ग्लोबल आइकन प्रियंका डिज्नीनेचर की आगामी फिल्म टाइगर के लिए अपनी आवाज देंगी। यह फिल्म बाघों के ऊपर आधारित हैं, जिसमें एक युवा बाघिन अंबर की कहानी को दिखाया गया है। फिल्म को लेकर प्रियंका ने कहा, हर मां इस कहानी से खुद को जुड़ा हुआ महसूस करेगी। गौरतलब है कि फिल्म में युवा बाघिन अंबर भारत के घने जंगलों में अपने शावकों की देखभाल करती है। फिल्म से जुड़ने को लेकर प्रियंका ने कहा, यह मेरे लिए काफी स्पेशल है। मेरे देश की इस शानदार कहानी को पर्दे पर बताना मेरे लिए बेहद खास है, मैं खुद को सम्मानित महसूस कर रही हूं। फिल्म के बारे में बात करते हुए प्रियंका ने कहा, मुझे हमेशा बाघों से प्यार रहा है और मैं बाघिनों से खुद को जुड़ा हुआ महसूस करती हूं। मुझे लगता है कि फिल्म में अंबर का सफर कुछ ऐसा ही है, जिससे हर मां खुद को खुद को जोड़ सकेगी।

हॉलीवुड डेब्यू पर शोभिता ने की बात

शोभिता धूलिपाला बॉलीवुड की प्रतिभाशाली अभिनेत्रियों में से एक हैं। अब तक वे कई फिल्मों में अपनी दमदार अदाकारी दिखा चुकी हैं। वे जल्द ही हॉलीवुड की फिल्म में नजर आने वाली हैं। फिल्म मंकी मैन में वे अहम भूमिका में नजर आएंगी। फिल्म में वे देव पटेल के साथ नजर आने वाली हैं। हाल ही में एक बातचीत के दौरान अभिनेत्री ने इस फिल्म पर खुलकर बात की। शोभिता ने अपने पहले हॉलीवुड प्रोजेक्ट मंकी मैन के बारे में बात करते हुए उत्साह जाहिर किया। एक इवेंट के दौरान शोभिता ने कहा, यह पहली बार है कि मैं हॉलीवुड में काम कर रही हूं। इसलिए यह मेरे लिए बेहद रोमांचक है। उन्होंने आगे कहा, मेरा फिल्म में बड़ा रोल नहीं है, लेकिन देव पटेल के विजन का हिस्सा बनना एक सपना पूरा होने जैसा है। इससे पहले मशहूर निर्देशक अनुराग कश्यप ने इस साल जनवरी में अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर मंकीमैन का ट्रेलर साझा करते हुए उन्हें बधाई दी थी। इस दौरान शोभिता ने पुरानी बातें याद करते हुए बताया था कि 2016 में कान फिल्म फेस्टिवल के लिए रवाना होने से ठीक एक दिन पहले उन्होंने मंकी मैन का ऑडिशन दिया था। उन्होंने सोशल मीडिया पर अनुराग को शुक्रिया कहते हुए लिखा था, धन्यवाद सर, मैंने 2016 में मंकी मैन के लिए मैंने ठीक एक दिन पहले ऑडिशन दिया था, उस समय हम रमन राघव के लिए कान फिल्म फेस्टिवल के लिए रवाना होने वाले थे। यहां तक का सफर बहुत यादगार रहा। इसके लिए आपका शुक्रिया।

बॉलीवुड में मुझे वो सम्मान नहीं मिला जिसका मैं...

अभिनेता रवि किशन इन दिनों सुर्खियों में बने हुए हैं। हाल ही में रिलीज हुई फिल्म लापता लेडीज में वे दमदार पुलिस ऑफिसर की भूमिका में दिखाई दिए हैं। दर्शकों को इस फिल्म में उनका अभिनय काफी पंसद आ रहा है। पिछले दिनों अभिनेता एक इंटरव्यू के दौरान अपने करियर के उतार-चढ़ाव के बारे में मीडिया से बातें करते नजर आए। नकारात्मक भावना को बदला रचनात्मक में अभिनेता रवि किशन भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री के मशहूर नामों में से एक नाम है। उन्होंने भोजपुरी फिल्मों के अलावा बॉलीवुड की कई फिल्मों में भी काम किया है। हाल ही में एक साक्षात्कार के दौरान वे बॉलीवुड में अपने सफर के बारे में बातें करते हुए बोले, मैं 90 के दशक में बॉलीवुड में आया था। मेरी आवाज अच्छी थी, बॉडी भी हीरो जैसी थी फिर भी मुझे काम नहीं मिला। इस बात ने मुझे काफी निराश कर दिया था, लेकिन एक वक्त के बाद मैंने अपनी नकारात्मक ऊर्जा को रचनात्मक ऊर्जा में बदल दिया। रवि किशन अपनी बात जारी रखते हुए कहते हैं, मैंने धर्मेंद्र से लेकर सलमान खान तक के साथ काम किया, लेकिन मेरे हिस्से में अच्छे रोल नहीं आ रहे थे। मैं काफी गुस्से में बॉलीवुड को छोड़ कर गया था। मैंने दुखी मन से भोजपुरी फिल्मों में काम शुरू किया था, लेकिन मेरी असली पहचान मुझे वहीं से मिली।

निखिल सिद्धार्थ ने किया कार्तिकेय 3 का एलान

टॉलीवुड अभिनेता निखिल सिद्धार्थ की फिल्म कार्तिकेय 2 ने बॉक्स ऑफिस पर जमकर धमाल मचाया था। साउथ के साथ इस फिल्म ने हिंदी पट्टी में भी अच्छा बिजनेस किया था। इस फ्रेंचाइजी को पसंद करने वाले फैंस को लिए एक अच्छी खबर सामने आई है। दरअसल, अभिनेता ने आधिकारिक तौर पर इस एक्शन थ्रिलर फिल्म के तीसरे भाग की घोषणा कर दी है। अभिनेता ने इस बात को कंफर्म किया है कि निर्देशक चंदू मोंडेती फिल्म के तीसरे भाग की पटकथा पर काम कर रहे हैं। फिल्म को लेकर अपडेट देते हुए निखिल ने एक्स पर लिखा, डॉ. कार्तिकेय जल्द ही एक बिल्कुल नए साहसिक कार्य की तलाश में...। इस पोस्ट में उन्होंने फिल्म के निर्देशक को भी टैग किया है। अभिनेता की इस पोस्ट के बाद फैंस काफी ज्यादा उत्साहित हो गए हैं। उनके बयान से लोग अनुमान लगा रहे हैं कि आगामी फिल्म में उन्हें जबर्दस्त सिनेमाई अनुभव प्राप्त होगा। सोशल मीडिया पर फैंस तरह तरह के कमेंट कर अपनी खुशी व्यक्त कर रहे हैं। उम्मीद जताई जा रही है कि इस फिल्म का स्केल पिछली दो फिल्मों से अधिक होगा। फिलहाल इस फिल्म के कथानक और कलाकारों के बारे में कोई भी अपडेट सामने नहीं आया है, फिर भी लोग इस फिल्म का उत्सुकता के साथ इंतजार कर रहे हैं।

मंगल लक्ष्मी के नमन शॉ बताया कैसे मिला अदित का रोल

कलर्स टीवी पर प्रसारित हो रहे नए धारावाहिक मंगल लक्ष्मी से दीपिका सिंह ने पर्दे पर कमबैक किया है। इसमें इनके पति के रूप में नमन शॉ नजर आ रहे हैं, जो इस इंडस्ट्री में पिछले 18 सालों से एक्टिव हैं। उन्होंने इसमें एक फ्रस्ट्रेटेड पति का रोल किया है। साथ ही इसमें दो बहनों की कहानी दिखाई गई है। हालांकि ये सीरियल दर्शकों के लिए बाकी कुछ सीरियल्स से कैसे अलग है, इस सीरियल के लिए एक्टर को कैसे अप्रोच किया गया।

मंगल लक्ष्मी में जो आपका किरदार है, वो आपके लिए कितना चैलेंजिंग रहा? इस तरह के कैरेक्टर्स हमने पहले भी देखे हैं, अनुपमा के वनराज शाह और सौभाग्यवति भव- में भी ऐसा शख्स देखा, जो पत्नी को दबाकर रखता है। आपने इसे अलग करने के लिए कितना एफर्ट्स लगाया?

मैंने हमेशा से एक गुड बॉय, स्वीट बॉय प्ले किया है। 17-18 सालों में ये पहला कैरेक्टर है, जो थोड़ा-सा ग्रे है। ये बहुत ही रियल और रिलेटेबल कैरेक्टर है। ये एक आईटी इंजीनियर है। अपनी मां से बहुत प्यार करता है और हर चीज के लिए अपनी मां का अप्रूव चाहता है और मंगल उसकी पसंद नहीं, बल्कि उसकी मां की पसंद थी। लेकिन मां के लिए उसने शादी कर ली। लेकिन उसे बाद में एहसास होता है कि वह शादी में फंस गया है। वह शादी में खुश नहीं है। मंगल उसके बराबर की नहीं है। वह उससे बेहतर डिजर्व करता है। लेकिन अब शादी और बच्चे हो गए हैं तो इसलिए वो फस्टेशन में है।

मगर ये सारी खूबियां तो हमने वनराज में भी देखी है, यही सारी चीजें उसके साथ भी हुई थीं। तो आपने इस किरदार को अलग करने की कोशिश कैसे की?

मैंने अनुपमा नहीं देखा है तो मुझ मालुम नहीं। ये कहानी थोड़ी अलग है। अनुपमा में वो अपने के लिए लड़ रही थी। यहां ऐसा नहीं है। और अदित का किरदार नेगेटिव नहीं है। बहुत रियल है। एक आदमी की भी कहानी है। जो ऑफिस जाता है। वहां पूरा दिन रहता है। अपने बॉस से बातें सुनता है। वहां, उसको अपना ईगो दबाकर काम करना पड़ता है क्योंकि उसे अपनी फैमिली के लिए चीजें मुहैया करानी है। फिर जब वो घर आता है तो वो अपनी पत्नी से नाखुश रहता है। वही फस्टेशन है। सौभाग्यवति भव जैसा नहीं है। ये साधारण इंसान है। हर दूसरे घर में ऐसा किरदार मिलेगा।

दीपिका सिंह के साथ काम करने का कैसा अनुभव रहा? उन्होंने तो पहले भी एक पॉप्युलर शो दीया और बाती किया हुआ है और एक फेमस चेहरा हैं। कुछ किस्सा हुआ सेट पर?

उनके साथ काम करके बहुत अच्छा लगा। जब हमने मॉक शूट भी किया तो मैंने तीन लड़कियों के साथ किया था। दीपिका भी थी इसमें। मैं घर आकर अपने दोस्तों को भी बोला और डायरेक्टर को भी कि जो मेरा कनेक्शन और वाइब जो दीपिका के साथ थी, वो बहुत ही खास थी। यही हमारे डायरेक्टर्स का भी कहना था और यही हमारे क्रिएटर्स का भी कहना था कि आप दोनों बहुत अच्छे कपल बनोगे। केमेस्ट्री भी हमारे बीच शानदार रही। जैसा वो चाहते थे, वैसी ही निकलकर सामने आई। इसलिए उन्होंने साथ में कास्ट किया। हम दोनों अच्छा कर भी रहे थे और साथ अच्छे लग भी रहे थे। दीपिका एक बहुत ही अच्छी एक्ट्रेस हैं भी। वह दिल की साफ है हीं। और बहुत बातें करती हैं।

आपको इस रोल के लिए अप्रोच कैसे किया गया? आप इस इंडस्ट्री से कैस जुड़े?

मेरा पहला शो कसम से था। उसके पहले एक रियलिटी शो से आया था। मैं कलकत्ता से हूं। मैं बिजनेस फैमिली से आता हूं। लेकिन मुझे बिजनेस में बिलकुल दिलचस्पी नहीं थी। इसके बाद मैंने मॉडलिंग की और फिर मिस्टर इंडिया में गया। लेकिन इन सबके पहले ग्रेजुएशन किया क्योंकि वो करना पड़ा। मम्मी बोलती थी कि शादी नहीं होगी। अच्छी लड़की नहीं मिलेगी। तो बीकॉम कर लिया। लेकिन मम्मी को मालूम था कि मेरा इंट्रस्ट मॉडलिंग में है तो उन्होंने ही मेरा फॉर्म भरा था मिस्टर इंडिया के लिए। उसक बाद फिर रियलिटी शो किया। फिर ऑडिशन्स हुए। ज्यादा स्ट्रगल करना नहीं पड़ा। मैंने बालाजी में ऑडिशन दिया था और उन्हें मेरा ऑडिशन पसंद आया। मुझे बहुत जल्दी ही 3 महीने में सबसे बड़ा शो मिल गया। तो मैं खुद को खुशकिस्मत समझता हूं। और इस रोल के लिए भी मुझे कास्टिंग डायरेक्टर का कॉल आया और उन्होंने साइन कर लिया।

क्या आपके साथ कभी कास्टिंग काउच जैसी चीजें हुईं? क्या आपने स्ट्रगल देखा, पैसों की दिक्कत महसूस हुई, जब आप मुबई आए?

नहीं मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ कुछ। जब मैं मॉडलिंग कर रहा था तो उस दौरान कुछ पैसे कमाए थे, तो वो मेरे पास थे, जो तीन महीने के लिए काफी थे। फिर बैक टू बैक शोज मिलने लगे थे। तो स्ट्रगल नहीं देखा। फैमिली का भी सपोर्ट था तो पैसों की भी दिक्कत वैसे नहीं हुई।